BLIS-4

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

पुस्तकालय सूचीकरण–प्रायोगिक 2

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

सी सी सी

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में स्नातक कार्यक्रम
(Bachalor of Library & Information Science)

पुस्तकालय सूचीकरण–प्रायोगिक 2

पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति

- **डॉ. आर. वी. व्यास** अध्यक्ष
  कुलपति
  वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा
- **प्रो. आर. सत्यनारायन, विभागाध्यक्ष** सदस्य
  पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
  इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
  नई दिल्ली
- **प्रो. पी. बी. मंगला, विभागाध्यक्ष** सदस्य
  पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
  दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- **प्रो. एन. के. शर्मा, विभागाध्यक्ष** सदस्य
  पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
  कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
  कुरुक्षेत्र(हरियाणा)
- **प्रो. कृष्ण कुमार** सदस्य
  पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
  दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- **प्रो. जी. डी. भार्गव, पूर्व विभागाध्यक्ष** सदस्य
  पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान अध्ययनशाला
  विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन(म. प्र.)
- **डॉ.दिनेश कुमार गुप्ता,**सहायक आचार्य सदस्य
  पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
  वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा
- **प्रो. आर. जी. पाराशर, विभागाध्यक्ष** सदस्य
  पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
  डॉ. हरि सिंह गौड़ विश्वविद्यालय
  सागर (म प्र..)
- **डॉ.एच.बी. नन्दवाना, विभागाध्यक्ष** संयोजक
  पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
  वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

पाठ्यक्रम निर्माण दल

- **प्रो. एस. एस. अग्रवाल, पूर्व विभागाध्यक्ष**
  पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान अध्ययनशाला
  विक्रम विश्वविद्यालय,
  उज्जैन
- **डॉ.एस.पी.सूद, पूर्व सहआचार्य एवं विभागाध्यक्ष**
  पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
  राजस्थान विश्वविद्यालय,
  जयपुर
- **डॉ. जे.एन. गौतम, सहआचार्य**
  पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
  जिवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

सम्पादक

- **प्रो. कृष्ण कुमार**
  पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
  दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

अकादमिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

प्रो. (डॉ.)नरेश दाधीच	**प्रो.(डॉ.) एम. के. घडोलिया**	**प्रो.योगेन्द्र गोयल**
कुलपति	निदेशक(अकादमिक)	प्रभारी अधिकारी
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	संकाय विभाग	पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण विभाग

पाठ्यक्रम उत्पादन

योगेन्द्र गोयल

सहायक उत्पादन अधिकारी

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

उत्पादन - अगस्त 2011 ISBN : 978-81-8496-203-1

इस सामग्री के किसी भी अंश को व. म. खु. वि., कोटा की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में अथवा मिमियोग्राफी (चक्रमुद्रण) द्वारा या अन्यत्र पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

व. म. खु. वि., कोटा के लिए कुलसचिव व. म. खु. वि., कोटा(राजस्थान) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

2

इकाई -1	क्लासीफाइड केटालॉग कोड की आरम्भिक जानकारी	8–27
इकाई -2	एकल व्यक्तिगत लेखकत्व की कृतियों का सूचीकरण	28–52
इकाई -3	सह व्यक्तिगत लेखकत्व के ग्रन्थों का सूचीकरण	53–76
इकाई -4	छद्मनामों के अन्तर्गत प्रकाशित कृतियों का सूचीकरण	77–105
इकाई -5	सहकारक के अन्तर्गत प्रविष्ट होने वाले ग्रन्थों का सूचीकरण	106–129
इकाई -6	ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण : समष्टि निकाय : शासन	130–168
इकाई -7	ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण : संस्था तथा सम्मेलन	169–207
इकाई -8	ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण : ग्रन्थमाला एवं समिश्र ग्रन्थ	208–262
इकाई -9	ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण : बहुखण्डीय ग्रन्थ	263–286
इकाई -10	सामान्य आवधिक प्रकाशनों एवं आख्यान्तर्गत प्रविष्ट ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण	287–322

इकाई परिचय

इकाई -1- इस इकाई में क्लॉसीफाइड केटालॉग कोड की आरम्भिक जानकारी दी गयी है । जिसमें क्रियात्मक सूचीकरण का अर्थ, सूचीकरण के सूचना स्रोत, सूची पत्रक की संरचना, वर्गीकृत सूची का अर्थ एवं रंगनाथनकृत क्लॉसीफाइड केटालॉग कोड के अनुसार प्रविष्टियों का वर्गीकरण और उनकी संरचना के बारे में प्रकाश डाला गया है।

इकाई -2- इसमें व्यक्तिगत लेखक की अवधारणा एवं एकल व्यक्तिगत लेखक से सम्बन्धित सूचीकरण के नियमों की जानकारी दी गयी है । एकल व्यक्तिगत लेखकत्व के ग्रन्थों के क्रियात्मक सूचीकरण से परिचय करवाया गया है ।

इकाई -3- इस इकाई में सहलेखक की परिभाषा, सह व्यक्तिगत लेखक की कृतियों के प्रकार, सहव्यक्तिगत लेखक से सम्बन्धित सूचीकरण के नियमों एवं सहव्यक्तिगत लेखत्व के ग्रन्थों के क्रियात्मक सूचीकरण की जानकारी दी गयी है ।

इकाई -4- इस इकाई में छद्मनामधारी लेखक की अवधारणा, छद्मनामान्तर्गत प्रकाशित कृतियों को सूचीकृत करने के लिए सी.सी.सी. के नियमों एवं इस प्रकार की कृतियों के क्रियात्मक सूचीकरण की विस्तार से चर्चा की गयी है ।

इकाई -5- इस इकाई में सहकारक की अवधारणा, उन परिस्थितियों से अवगत होना जिसमें किसी कृति को सहकारक के अन्तर्गत प्रविष्ट किया जाता है, सहकारक के अन्तर्गत कृति को प्रविष्ट करने की मुख्य समस्याओं एवं ऐसी कृतियों के क्रियात्मक सूचीकरण की जानकारी दी गयी है ।

इकाई -6- इस इकाई में समष्टि निकाय, समष्टि लेखक एवं समष्टि लेखक के प्रकारों प्रकाश डाला गया है । समष्टि निकाय-शासन की परिभाषा शासन व उसके अंगों के उपकल्पन के नियमों की जानकारी दी गयी है एवं सूचीकृत मुखपृष्ठ दिये गये है।

इकाई -7- इस इकाई में संस्था एवं सम्मेलन की परिभाषा एवं इनके सूचीकरण नियमों की विस्तार से जानकारी दी गयी है । संस्था के प्रशासकीय अंग एवं अस्थाई अंग के ग्रन्थों के सूचीकरण नियमों की जानकारी के साथ सूचीकृत मुखपृष्ठ भी दिये गये है।

इकाई -8- इस इकाई में ग्रंथमाला एवं समिश्र ग्रन्थों के क्रियात्मक सूचीकरण को सम्मिलित किया गया है । इसमें ग्रंथमाला की परिभाषा, ग्रंथमाला के प्रकार एवं उनके सूचीकरण के नियमों की जानकारी दी गयी है । समिश्र ग्रंथ का अर्थ, उसके विभिन्न प्रकारों - सामान्य समिश्र ग्रंथ एवं कृत्रिम समिश्र ग्रन्थों के सूचीकरण के नियमों की विस्तार से जानकारी दी गयी है । सूचीकृत मुखपृष्ठ एवं अभ्यासार्थ मुखपृष्ठ भी दिये गये है ।

इकाई -9- इस इकाई में बहुखण्डीय ग्रंथ की परिभाषा, प्रकार एवं उनके सूचीकरण के नियमों से अवगत करवाया गया है । सूचीकृत मुखपृष्ठ एवं अभ्यासार्थ मुखपृष्ठ भी दिये गये है ।

इकाई -10- इस इकाई में सामान्य आवधिक प्रकाशनों के क्रियात्मक सूचीकरण, परिभाषा, इनकी मुख्य प्रविष्टि एवं सहायक प्रविष्टि की संरचना पर प्रकाश डाला गया है । आख्यान्तर्गत प्रविष्ट ग्रन्थों के सूचीकरण के नियमों की जानकारी दी गयी है । सूचीकृत मुखपृष्ठ एवं अभ्यास के लिए मुखपृष्ठ भी दिये गये हैं ।

इकाई-1: क्लॉसीफाइड केटालॉग कोड की आरम्भिक जानकारी (Preliminaries of Classified Catalogue Code)

उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य हैं -

1. वर्गीकृत सूची (Classified Catalogue) से परिचित कराना,
2. सूचीकरण के सूचना स्रोतों से परिचित कराना
3. सूची पत्रक और ग्रन्थालय हस्तलिपि की जानकारी देना,
4. वर्गीकृत सूची की विभिन्न प्रविष्टियों से परिचित कराना।

संरचना

1. क्रियात्मक सूचीकरण से तात्पर्य
2. सूचीकरण के सूचना स्रोत
3. सूची पत्रक की संरचना
4. ग्रंथालय हस्तलिपि
5. वर्गीकृत सूची से तात्पर्य
6. रंगनाथन कृत क्लॉसीफाइड केटॉलॉग कोड (= सीसीसी) के अनुसार प्रविष्टियों का वर्गीकरण और उनकी संरचना
   - 6.1 मुख्य प्रविष्टि
   - 6.2 इतर प्रविष्टियाँ
7. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रंथसूची

1. क्रियात्मक सूचीकरण से तात्पर्य (Meaning of Practical Cataloguing)

क्रियात्मक सूचीकरण से मुख्य तात्पर्य है सूची की विभिन्न प्रविष्टियों का निर्माण। वैसे इसके अन्तर्गत निम्नांकित प्रक्रियायें आती हैं: -

1. जिस ग्रन्थ का सूचीकरण किया जा रहा है उसका विहंगम अध्ययन।
2. सूचीकरण स्रोतों से आवश्यक जानकारी प्राप्त करना।
3. प्रविष्टियों की जाँच।
4. प्रविष्टियों का विन्यसन।
5. संदर्शिकाओं (Guides) का निर्माण।
6. सूची अनुरक्षण (Maintenance)।

इस इकाई और आगामी इकाइयों में विभिन्न प्रकार की प्रविष्टियों के निर्माण की चर्चा की जायेगी।

2. सूचीकरण के सूचना स्रोत (Sources of Cataloguing)

सूचीकरण हेतु सूचना का मुख्य स्रोत वह समस्त ग्रन्थ या प्रलेख होता है जिसका सूचीकरण किया जा रहा है। रंगनाथन ने इस प्रसंग में एक उपसूत्र का प्रतिपादन भी किया है जिसका नाम आपने निर्धार्यता का उपसूत्र (Canon of Asceriainability) रखा है। इस उपसूत्र के अनुसार किसी भी प्रविष्टि में जो सूचना अंकित की जाये वह आवश्यक रूप से अभिनिश्चित होनी चाहिये। सूचीकरण में निर्धार्यता विशेष रूप से मुखपृष्ठ तथा उसके आस-पास के पृष्ठों (Overflow Pages) तक की सीमित रहती है।

दूसरे शब्दों में सूचीकरण के सूचना के स्रोत निम्नानुसार हैं :

1. ग्रन्थ का मुखपृष्ठ (title page) सूचीकरण सूचना का प्रमुख स्रोत है जिसके दो भाग होते हैं - मुखपृष्ठ का अग्र भाग (Recto) और उसका पश्च भाग (Verso)। सूचीकरण हेतु अधिकांश सूचना इसी स्रोत से ली जाती है। इसके अतिरिक्त ग्रंथ के निम्नांकित भागों से भी आवश्यकतानुसार सूचना प्राप्त की जाती है -
2. ग्रंथ का आवरण (Cover)।
3. ग्रन्थ की जिल्द और पीठिका (Spine)।
4. संक्षिप्त मुखपृष्ठ (Half title page) ग्रंथ माला (Series) सम्बन्धी सूचना प्राप्त करने का प्रामाणिक स्रोत माना जाता है।
5. समपर्ण पृष्ठ (Dedication page)।
6. प्राक्कथन (Foreword)।
7. प्रस्तावना (Preface)।
8. विषय सूची (Contents)
9. विषय प्रवेश (Introduction)।
10. मूल पाठ (Text)।
11. सतत आख्या (Running title)।
12. परिशिष्ट (Appendix)।
13. अनुक्रमणिका (Index)।
14. ग्रन्थसूची (Bibiography)।

3. सूची पत्रक की संरचना (Structure of Catalogue Card)

आजकल अधिकतर ग्रंथालयों में सूची का निर्माण पत्रक स्वरूप में किया जाता, है। पत्रक का आकार प्रकार और माप अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर निश्चित है। इसकी लम्बाई 5" (12.5 से.मी.) और चौड़ाई 3"(7.5 से.मी.,) होती है। नीचे इसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है :

1. **अग्र रेखा** (Leading Line): पत्रक पर प्रथम आड़ी रेखा होती है। सामान्यत: यह रेखा पत्रक के ऊपरी सिरे से 2.5 से.मी. की दूरी पर होती है। इस रेखा पर प्रत्येक प्रविष्टि का अग्रानुच्छेद अंकित' किया जाता है और इससे ऊपर कुछ भी अंकित नहीं किया जाता है।

2. **प्रथम शीर्ष** (First Vertical): पत्रक पर प्रथम खड़ी रेखा को प्रथम शीर्ष कहते हैं। यह भी लगभग पत्रक के बायें किनारे से 2.5 सेमी अथवा आठ अक्षरों की दूरी पर होती है। प्रत्येक प्रविष्टि का अग्रानुच्छेद इसी रेखा से आरम्भ होता है। सामान्यत: समस्त प्रविष्टियों के सभी अनुच्छेद की निरन्तरता इसी रेखा से होती है।

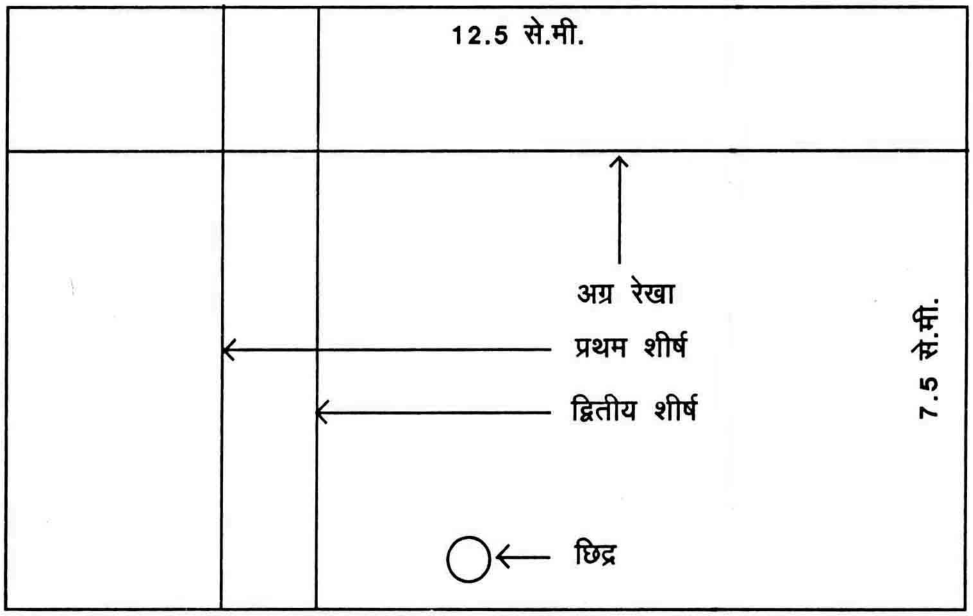

3. **द्वितीय शीर्ष** (Second Vertical) प्रथम शीर्ष से 1.2.5 से.मी. अथवा चार अक्षरों की दूरी पर स्थिति द्वितीय खड़ी रेखा को द्वितीय शीर्ष कहते हैं। अग्रानुच्छेद और परिग्रहण संख्या अनुच्छेद के अतिरिक्त सामान्यत: अन्य समस्त अनुच्छेद इसी रेखा से आरम्भ होते हैं।

उपरोक्त तीनों रेखायें पत्रक पर लाल स्याही से अंकित की जाती हैं।

4. **छिद्र** (Hole) पत्रक में नीचे की ओर मध्य में 1से.मी. ऊपर एक छेद होता है। दराज में पत्रकों को स्थिर रखने के लिए एक छड़ का उपयोग किया जाता है जो इन छिद्रों में से गुजरती है।

4. ग्रन्थालय हस्तलिपि (Library Hand)

सूची पत्रक जितने स्वच्छ आकर्षक और सुस्पष्ट हो उतना ही अच्छा है। अत: उनको टंकित करने की अनुशंसा की जाती है। किन्तु सभी ग्रंथालयों में और हर समय टंकित मशीन अथवा टंकनकर्ता उपलब्ध नहीं होते। अत: पत्रक हाथ से लिखे जाते हैं। ऐसी स्थिति में रंगनाथन के ग्रंथालय हस्तलिपि का उपयोग करने का सुझाव दिया है। ग्रंथालय हस्तलिपि से तात्पर्य है- सभी अक्षर, अंक और चिन्ह सुस्पष्ट, सीधे, साफ और एक दूसरे से पृथक-पृथक होने चाहिये। जहां तक संभव हो रोमन लिपि में मुद्रण में उपयोग किये जाने वाले बड़े और छोटे

वर्णों (Alphabets) का उपयोग किया जाना चाहिये। ग्रन्थालय हस्तलिपि का नमूना नीचे दिया जा रहा है।

विराम चिन्हों आदि का उपयोग

1. विराम चिन्हों आदि का उपयोग व्याकरण के सामान्य नियमों के अनुसार होता है जब तक की संहिता (Code)में कोई विशिष्ट प्रावधान न हो।

2. शब्द के संक्षिप्तिकरण (Abbreviation) की स्थिति में डॉट (.) लगाने की परिपाटी को सीसीसी के अनुसार त्याग दिया गया है।

5. वर्गीकृत सूची से तात्पर्य (Meaning of Classified Catalogue)

इस इकाई में हम रंगनाथन कृत क्लॉसीफाइड केटालॉग कोड के अनुसार वर्गीकृत सूची का निर्माण करना सीखेंगे। रंगनाथन के अनुसार वर्गीकृत सूची से तात्पर्य ऐसी सूची से है जिसमें कुछ प्रविष्टियाँ संख्या (Number) प्रविष्टियाँ होती हैं और कुछ प्रविष्टियाँ शब्द (Word) प्रविष्टियाँ होती हैं।

अत: वर्गीकृत सूची एक द्विभागीय सूची होती है। यह दो भाग निम्नानुसार होते हैं :

1. वर्गीकृत भाग (Classified part)
2. अनुवर्ण भाग (Alphabetical part)

प्रथम भाग अर्थात् वर्गीकृत भाग मुख्य भाग होता है और इसमें प्रविष्टियाँ वर्गीकृत क्रम (Classified order) से विन्यासित की जाती हैं। द्वितीय भाग इसके पूरक के रूप में कार्य करता है जिसको अनुक्रमणिका (Index) भी कह सकते हैं। इसमें प्रविष्टियाँ अनुवर्ण क्रम (Alphabetical order) में विन्यसित रहती हैं। इसका उपयोग मुख्य भाग से वांछित सूचना प्राप्त करने के लिये भी किया जाता है।

6. रंगनाथन कृत क्लॉसीफाइड केटालॉग कोड के अनुसार प्रविष्टियों का वर्गीकरण प्रविष्टियों और उनकी संरचना (Classification of Entries of CCC and their Structure)

रंगनाथन कृत क्लासीफाइड केटालॉग (= सीसीसी) का उपयोग वर्गीकृत सूची और शब्दकोशीय सूची दोनों के निर्माणार्थ किया जा सकता है। परन्तु इस इकाई में इस संहिता के अनुसार केवल आनुवर्गिक सूची का ही निर्माण निर्धारित है। अत: हम यहां केवल उसी की चर्चा करेंगे। प्रविष्टि को सूची में अन्तिम एकांश लेखा' के रूप में परिभाषित किया जाता है। सीसीसी के अनुसार प्रविष्टियाँ निम्नांकित प्रकार की हो सकती हैं :

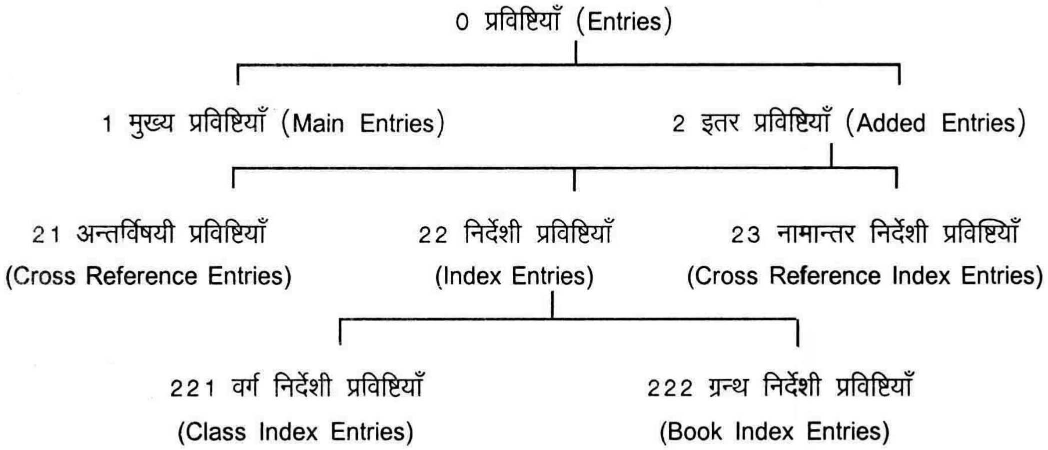

उपर्युक्त प्रविष्टियों में मुख्य प्रविष्टियाँ और अन्तर्विषयी प्रविष्टियाँ संख्या (Number) प्रविष्टियाँ हैं। अत: इनको वर्गीकृत भाग में वर्गक्रम से विन्यसित किया जाता है। शेष प्रविष्टियाँ अर्थात् वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ; ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ और नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियाँ शब्द (Word) प्रविष्टियाँ हैं। अत: इनको अनुवर्ण भाग में वर्णक्रम् में विन्यासित किया जाता है।

द्वितीय प्रकार का विभाजन

1. विषय प्रविष्टियाँ (Subject Entries): उन प्रविष्टियों को कहते हैं जो उपयोगकर्ता की विषय अभिगम को सन्तुष्ट करती हैं। उपर्युक्त प्रविष्टियों में मुख्य प्रविष्टियाँ, अन्तर्विषयी प्रविष्टियाँ और वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ इसी श्रेणी के अन्तर्गत आती हैं।

2. अविषय प्रविष्टियाँ (Non- Subject Entries): उन प्रविष्टियों को कहते हैं वे उपयोगकर्ता की विषय के अतिरिक्त अन्य अभिगमों अर्थात् लेखक (Author), आख्या (Title), सहकारक (Collaborator) और ग्रंथमाला (Series) को सन्तुष्ट करती हैं। उपर्युक्त प्रविष्टियों में शेष प्रविष्टियाँ अर्थात् ग्रंथ निर्देशी प्रविष्टियाँ और नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियाँ इस श्रेणी के अन्तर्गत आती हैं।

तृतीय प्रकार का विभाजन

1. विशिष्ट प्रविष्टियाँ (Specific Entries): उन प्रविष्टियों को कहते हैं जो किसी विशेष से सम्बन्ध रखती हैं। उपर्युक्त प्रविष्टियों में मुख्य प्रविष्टियाँ, अन्तर्विषयी प्रविष्टियाँ और ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियां इसी श्रेणी के अन्तर्गत आती हैं।

2. सामान्य प्रविष्टियाँ (General Entries): उन प्रविष्टियों को कहते हैं जो अनेक ग्रंथो से सम्बन्धित होती हैं। उपर्युक्त प्रविष्टियों में शेष प्रविष्टियाँ अर्थात् वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ और नामान्तर निर्देशी' प्रविष्टियाँ इसी श्रेणी के अन्तर्गत आती हैं।

6.1 मुख्य प्रविष्टि (Main Entry)

मुख्य प्रविष्टि किसी ग्रन्थ की सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रविष्टि होती है अर्थात् अधिकांश उपयोगकर्ताओं की अभिगम की सम्पूर्ति करती है। रंगनाथन के मतानुसार आजकल सर्वाधिक उपयोगकर्ताओं की रुचि अपने विशिष्ट विषय में होती है। अत: मुख्य प्रविष्टि विषय के अन्तर्गत निर्मित करनी चाहिये। परन्तु इसमें ग्रन्थ का विशिष्ट विषय वर्गीकरण की कृत्रिम भाषा में वर्गाक के रूप में अंकित रहता है। अत: इनको सूची के वर्गीकृत भाग में वर्ग क्रम में विन्यासित किया जाता है। संबंधित ग्रंथ का मुख पृष्ठ तथा आस-पास के पृष्ठ, मुख्य प्रविष्टि की सूचना के प्रमुख स्रोत होते हैं।

मुख्य प्रविष्टि एक विशिष्ट प्रविष्टि होती हैं जो ग्रन्थ के संबंध में अधिकतम सूचना प्रदान करती है। प्रत्येक ग्रन्थ के लिये एक मुख्य प्रविष्टि का निर्माण किया जाता है। इस प्रविष्टि में संकेत (Tracing) के रूप में ग्रंथ से संबन्धित समस्त इतर प्रविष्टियों के बारे में सूचना अंकित रहती है। सीसीसी के नियमांक MBO के अनुसार, मुख्य प्रविष्टि में निम्नानुसार अनुच्छेद होते हैं :

1. अग्र अनुच्छेद (Leading Section)
2. शीर्षक अनुच्छेद (Heading Section)
3. आख्या अनुच्छेद (Title Section)
4. टिप्पणी अनुच्छेद (Notes Section)
5. परिग्रहण क्रमांक अनुच्छेद (Accession Number Section)
6. संकेत अनुच्छेद (Traching Section)

इन अनुच्छेदों में निम्नानुसार सूचना अंकित की जाती है

1. **अग्र अनुच्छेद:** इस अनुच्छेद में ग्रंथ का क्रामक अंक (Call Number) अंकित किया जाता है। इसी कारण इसको क्रामक अंक अनुच्छेद भी कहते हैं। इसको अग्र रेखा पर प्रथम शीर्ष से आरम्भ करते हुए लिखना चाहिये। इसको सदैव पेन्सिल से लिखना चाहिये। ग्रंथ का क्रामक अंक, मुखपृष्ठ के पश्च भाग पर अंकित होता है। वहां से लेकर लिखना चाहिये। वर्गांक (Class Number) और ग्रन्थांक (Book Number) के मध्य दो अक्षरों का स्थान छोड़ना चाहिये।

2. **शीर्षक अनुच्छेद:** सबसे महत्वपूर्ण अनुच्छेद होता है। इसमें सामान्यत: ग्रन्थ के लेखक का नाम अंकित किया जाता है। लेखक न होने पर नियमानुसार ग्रंथ के सहकारक (Collaborator) का नाम अथवा उसकी आख्या अंकित की जाती है। शीर्षक के चयन (Choice) और उपकल्पन (Rendering) की चर्चा विभिन्न इकाइयों में की जायेगी।

3. **आख्या अनुच्छेद:** इस अनुच्छेद में क्रमशः (I) ग्रंथ की सम्पूर्ण आख्या (II) ग्रंथ का संस्करण, और (III) सहकारक संबंधी सूचना अंकित की जाती है। यह सूचना एक पैराग्राफ में तीन वाक्यों में दी जाती हैं।

4. **टिप्पणी अनुच्छेद**: सीसीसी के अनुसार टिप्पणियाँ निम्नानुसार छः प्रकार की हो सकती हैं:

(i) ग्रंथमाला टिप्पणी (Series note)

(ii) बहु- ग्रंथमाला टिप्पणी (Multiple Series note)

(iii) उद्गृहीत टिप्पणी (Extract note)

(iv) आख्या परिवर्तन टिप्पणी (Change of title note)

(v) उद्ग्रहण टिप्पणी (Extraction note), और

(vi) सम्बद्ध ग्रंथ टिप्पणी (Associated book note)

इन टिप्पणियों की चर्चा विभिन्न इकाइयों में की जायेगी।

5. **परिग्रहण क्रमांक अनुच्छेद:** परिग्रहण क्रमांक मुखपृष्ठ के पश्च भाग पर अंकित होता है। वहां से लेकर लिखा जाता है। इसको सबसे निचली रेखा पर प्रथम शीर्ष से आरम्भ करके लिखा जाता है। इसका उद्देश्य प्रशासकीय माना जाता है।

6. **संकेत अनुच्छेद:** इसको मुख्य प्रविष्टि पत्रक के पश्च भाग (Back) पर अंकित करने का प्रावधान है। इसको ग्रंथ की इतर प्रविष्टियाँ निर्मित करने के पश्चात् ही अंकित किया जा सकता है क्योंकि इसमें उक्त ग्रंथ की इतर प्रविष्टियाँ संबंधी सूचना अंकित रहती है। इसका उद्देश्य भी प्रशासकीय है अर्थात् आवश्यकता पड़ने पर किसी ग्रन्थ की मुख्य प्रविष्टि खोज कर उसे सम्बन्धित इतर प्रविष्टियों की जानकारी प्राप्त की जा सके।

संकेत अनुच्छेद (Tracing Section)

संकेत अंकित करने के लिये मुख्य प्रविष्टि पत्रक के पश्च भाग (Back) को एक काल्पनिक शीर्ष रेखा के द्वारा दो अर्थ भागों में विभाजित मान लिया जाता है। जिनको बाँया अर्द्ध और दाँया अर्द्ध की संज्ञा दी जाती है।

बाँये अर्द्ध भाग में ग्रंथ से संबंधित अन्तर्विषयी प्रविष्टियों के वर्गांक अंकित किये जाते हैं और उनके समक्ष 'p'(पृष्ठ), part (भाग), chap (अध्याय), sec (अनुच्छेद) आदि शब्द लिखकर संबंधित संख्यायें अंकित की जाती हैं। प्रत्येक अन्तर्विषयी प्रविष्टि के लिए एक रेखा का उपयोग किया जाता है। इनको वर्गीकृत क्रम में अंकित किया जाता है।

दाँये भाग में क्रमशः वर्ग निर्देशी प्रविष्टियों, ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियों और नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियों के शीर्षक अंकित किए जाते हैं। वर्ग निर्देशी प्रविष्टियों का अनुक्रम अंतिम खोज कड़ी से प्रथम खोज कड़ी होता है। ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियों का अनुक्रम लेखक प्रविष्टियाँ, सहकारक प्रविष्टियाँ, आख्या प्रविष्टियाँ और ग्रन्थमाला प्रविष्टियाँ होता है। नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियों का अनुक्रम वैकल्पिक नाम प्रविष्टि, एक शब्द के विभिन्न स्वरूप प्रविष्टि छदमनाम-वास्तविक - नाम प्रविष्टि, संपादक- ग्रन्थमाला प्रविष्टि और सजातीय-नाम प्रविष्टि होता है।

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि का प्रत्येक पद बड़े अक्षर से आरम्भ होता है। ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि और नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि के प्रत्येक शीर्षक का प्रथम शब्द बड़े अक्षर से आरम्भ होता है। इसके अतिरिक्त व्याकरण के समान्य नियमों का पालन किया जाता है। विवरणात्मक पद को रेखांकित किया जाता है, बड़े अक्षर से आरम्भ किया जाता है और इससे पूर्व अर्द्ध विराम (Comma) लगाया जाता है। यदि कोई शीर्षक एक रेखा में नहीं आ पाता है तो नैरन्तर्य अगली रेखाओं में दो अक्षरों का स्थान छोड़कर किया जाता है। प्रत्येक शीर्षक के अन्त में पूर्ण विराम (Full stop) लगाया जाता है।

प्रत्येक प्रकार की निर्देशी प्रविष्टियों के मध्य एक रेखा का रिक्त स्थान छोड़कर उनको समूहों के रूप में निर्दिष्ट किया जाता है।

मुखपृष्ठ

Memories, Dreams, Reflections

by

C.G. Jung

Edited by

Aneille Jaffe

London

Oxford University Press

1963

Other Information

Call No.	S N63
Acc.No.	17291
H.T.P.	Classics in Psychology. Edited by Richard M. Phillips. No.51. The book is divided in to following 3 Parts which are to be highlighted
Note:	Memories S: 43 P 1-62 Reflections S: 49 P 63-126 Dreams S: 811 P 127-197

मुख्य प्रविष्टि का नमूना

मुख्य प्रविष्टि-पत्रक का अग्र भाग

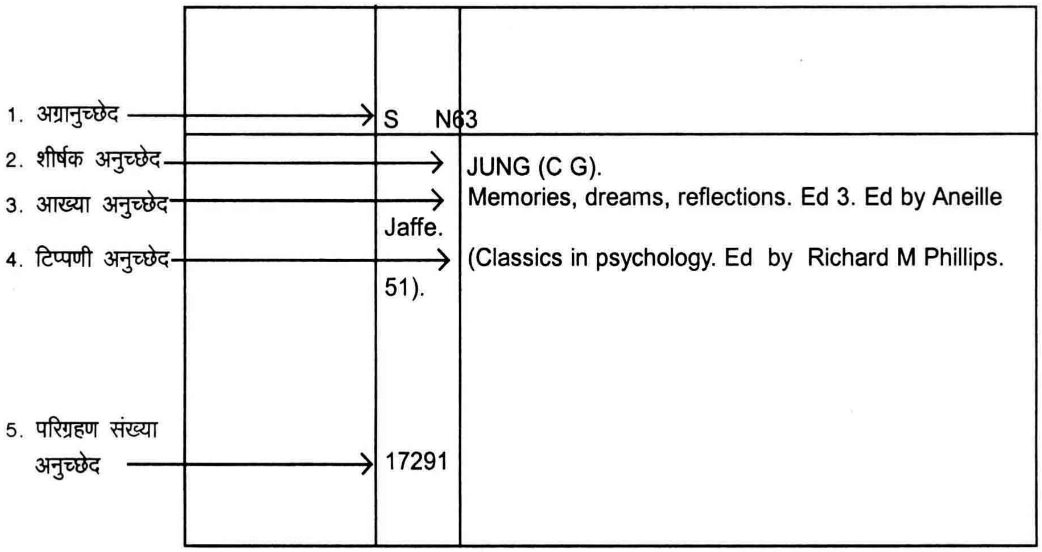

मुख्य प्रविष्टि पत्रक का पश्च भाग

6. संकेत अनुच्छेद ⟶ **संकेत (Tracing)**

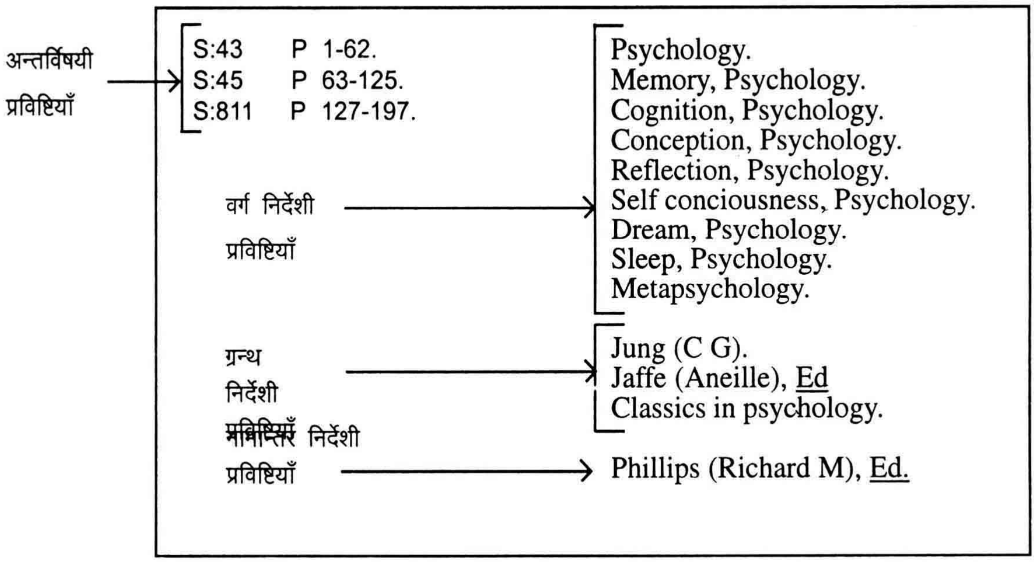

टिप्पणी: संकेत में अन्तविर्षयी प्रविष्टियों को वर्गीकृत क्रम में अंकित किया गया है। वर्ग निर्देशी प्रविष्टियों में सर्व-प्रथम मुख्य प्रविष्टि से व्युत्पन्न प्रविष्टियों के शीर्षक अंकित किये गये हैं, तत्पश्चात् अन्तविर्षयी प्रविष्टियों से व्युत्पन्न प्रविष्टियों के शीर्षक अंकित किये गये है।

मुख्य प्रविष्टि और संकेत में सब स्थानों पर क्रामक अंक (Call Number) और वर्गांक पेन्सिल से लिखे जायेंगे।

6.2 इतर प्रविष्टियाँ (Added Entries)

मुख्य प्रविष्टि उपयोगकर्ताओं की मुख्य अभिगम की संपूर्ति करती है। अन्य अभिगमों की संपूर्ति हेतु इतर प्रविष्टियों का निर्माण किया जाता है। रंगनाथन के अनुसार, "मुख्य प्रविष्टि के अतिरिक्त अन्य प्रविष्टियाँ , इतर प्रविष्टियाँ कहलातीं हैं।"सीसीसी'' के अनुसार यह निम्नांकित प्रकारों की होती हैं :

1. अन्तर्विषयी प्रविष्टियाँ
2. निर्देशी प्रविष्टियाँ
3. नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियाँ

6.2.1 अन्तर्विषयी प्रविष्टियाँ (Cross Reference Entries)

सीसीसी के नियमांक MJ के अनुसार अन्तर्विषयी प्रविष्टि में निम्नलिखित अनुच्छेद हैं:

1. अग्र अनुच्छेद (Leading Section)
2. द्वितीय अनुच्छेद (Second Section)
3. मूल प्रलेख विवरण अनुच्छेद (Locus Section)
   (i) ग्रन्थ का क्रामक अंक
   (ii) ग्रन्थ की मुख्य प्रविष्टि का शीर्षक
   (iii) ग्रन्थ की आख्या, संस्करण सहित और प्राप्ति स्थल जैसे पृष्ठ, अध्याय, भाग आदि।

अन्तर्विषयी प्रविष्टियों के नमूने

(1)

	S: 43	
		See also S N63 Jung. Memories,dreams, reflections. Ed 3. P 1-62.

(2)

	S: 45	
		<u>See also</u> S N63 Jung. Memories,dreams,reflections. Ed3. P 63-125.

(3)

	S: 811	
		<u>See also</u> S N63 Jung. Memories,dreams,reflections.Ed3. P 127-197

टिप्पणी: उपर्युक्त तीनों प्रविष्टियाँ अन्तर्विषयी प्रविष्टियाँ हैं। इनमे वर्गांक और क्रमश अंक पेंसिल से लिखे जायेंगे।

6.2.2 निर्देशी प्रविष्टियाँ (Index Entries)

निर्देशी प्रविष्टियाँ दो प्रकार की होती है :-

1. वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ (Class Index Entries)
2. ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ (Book Index Entries)

6.2.2.1 वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ (Class Index Entries)

मुख्य प्रविष्टि में ग्रन्थ का विशिष्ट विषय वर्गीकरण की कृत्रिम भाषा में अंकित रहता है। उपयोगकर्ता इसको समझने में असमर्थ रहते हैं। अत: उनके मार्गदर्शन के लिये प्राकृतिक भाषा में विषय प्रविष्टियों का निर्माण किया जाता है। जिनको सीसीसी में वर्ग निर्देशी प्रविष्टियों का नाम दिया गया है। इनकी व्युत्पत्ति वर्गांक से होती है। इनकी व्युत्पत्ति के लिये रंगनाथन ने एक विधि का प्रतिपादन किया है। जिसको श्रृंखला प्रक्रिया (Chain Procedure) नाम दिया गया है '। इस सम्बन्ध में विस्तृत नियम सीसीसी के भाग K में दिये गये हैं, जिनका अध्ययन आपको करना चाहिये। यहाँ उनको संक्षेप में उद्गृहीत किया जा रहा है।

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि वह सामान्य इतर शब्द प्रविष्टि है जो वर्ग के नाम से वर्गाक की ओर निर्दिष्ट करती है। मुख्य प्रविष्टि तथा अन्तर्विषयी दोनों के वर्गांकों से श्रृंखला प्रक्रिया द्वारा विषय शीर्षक प्राप्त कर वर्ग निर्देशी प्रविष्टियों का निर्माण किया जाता है।

6.2.2.1.1 श्रृंखला प्रक्रिया (Chain Procedure)

रंगनाथन ने श्रृंखला प्रक्रिया को परिभाषित करते हुए लिखा है, ' श्रृंखला प्रक्रिया किसी भी वर्गांक से विषय शब्द प्रविष्टि व्युत्पन्न करने की लगभग एक यांत्रिक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में वर्गाक को एक श्रृंखला के रूप में विश्लेषित किया जाता है।

कड़ियाँ निम्नांकित प्रकार की होती हैं :

1. **मिथ्या कड़ी** (False Link) एक ऐसी कड़ी है जिसका कोई अर्थ नहीं होता है अथवा जिसकी समाप्ति निम्नलिखित से होती है:

   i. योजक चिन्ह जैसे: , ; : . अथवा
   ii. दशा सम्बन्ध (Phase relation) का प्रतिनिधित्व करने वाले अंक जैसे 0a 0b 0c 0d 0g पर अथवा
   iii. अन्त: पक्ष दशा सम्बन्ध (Intra facet phase relation) का प्रतिनिधित्व करने वाले अंक जैसे 0j 0k 0m 0n 0r अथवा
   iv. अन्त: पंक्ति दशा सम्बन्ध (Intra array phase relation) का प्रतिनिधित्व करने वाले अंक जैसे 0t 0u 0v 0w 0y पर अथवा
   v. काल एकल से जो वर्गाक में काल पक्ष में स्वयं में काल पक्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं और अन्य किसी मूलभूत श्रेणी का प्रतिनिधित्व नहीं करते अर्थात् वे स्थान (Space), ऊर्जा (Energy), पदार्थ (Matter) अथवा व्यक्तित्व (Personality) के रूप में नहीं आते।

2. **अखोज कड़ी** (Unsougt Link): ऐसी कड़ी जिसके अन्तर्गत पाठ्य-सामग्री उत्पादित होने अथवा पाठकों द्वारा खोजने की सम्भावना न हो।
3. **खोज कड़ी** (Sought Link): उस कड़ी को कहते हैं जो न मिथ्या हो, न विलयित (Fused) और न अखोज हो अर्थात् जिस कड़ी पर पाठकों द्वारा पाठ्य-सामग्री खोजने की सम्भावना हो।
4. **विलुप्त कड़ी** (Missing Link): श्रृंखला में विलुप्त एकल से संबंधित रिक्तता (Gap) वाली कड़ी को विलुप्त कड़ी कहते हैं।
5. **छद्म कड़ी** (Pseudo Link): ऐसी कड़ी को जो ग्रन्थांक (Book Number) के किसी भाग के अंक या अंक समूह द्वारा बनती है, छद्म कड़ी कहते हैं।

प्रक्रिया

मुख्य प्रविष्टि का वर्गाक : S

श्रृंखला (Chain)

S = Pshchology (Sought Link)

टिप्पणी: उपर्युक्त वर्गांक में केवल एक ही अंक है अत: एक ही कड़ी बनेगी।

अन्तर्विषयी प्रविष्टियों के वर्गांक: S: 43

S: 45

S: 811

श्रृंखलायें (Chain)

(1)↓S	=	Pshchology (Sought Link)
↓S:	=	(False Link)
↓S: 4	=	Cognition, Conception in pshchology (Sought Link)
S: 43	=	Memory in psychology (Sought Link)
(2)↓S	=	Psychology (Sought Link)
↓S:	=	(False Link)
↓S: 4	=	Cognition, Conception in psychology (Sought Link)
S: 45	=	Reflection, Self Conciousness in psychology (Sought Link)
(3)↓S	=	Psychology (Sought Link)
↓S:	=	(False Link)
↓S:8	=	Metapsychology (Sought Link)
↓S:81	=	Sleep in Metapsychology (Sought Link)
↓S:811	=	Dream in Metapsychology (Sought Link)

6.2.2.1.2 वर्ग निर्देशी प्रविष्टियों की संरचना

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि एक विषय प्रविष्टि होती है जिसमें निम्नांकित तीन अनुच्छेद होते हैं: -

1. **अग्रानुच्छेद:** इसमें प्रत्येक मुख्य प्रविष्टि और अन्तर्विषयी प्रविष्टि के वर्गाकों से निर्मित श्रृंखलाओं की खोज कड़ियों (Sought links) के अन्तिम अंक के प्रतिनिधित्व करने वाले शब्द को प्रथम पद बनाया जाता है। प्रत्येक खोज शीर्षक से एक वर्ग निर्देशी प्रविष्टि का निर्माण होता है। अत: वर्ग निर्देशी प्रविष्टियों की संख्या खोज शीर्षकों पर निर्भर करती हैं। यदि शीर्षक व्यष्टिकृत (Individualising) नहीं होता तो व्यष्टिकृत करने के लिये प्रसंग के उपसूत्र की सहायता से एक या अधिक ऊपरी खोज कड़ियों के अन्तिम शब्दों से उपशीर्षकों की व्युत्पत्ति की जाती है। प्रत्येक शीर्षक या उपशीर्षक सिवाय इसके कि जब तक प्रशंसात्मक विशेषण (Qualifying adjective) न हों, सामान्य: प्रथमाविभक्ति (Nominative case) में एकाकी संज्ञा होता है। समस्त पद, उपयोग की जा रही वर्गीकरण पद्धति के लिये जाते हैं। यह अनुच्छेद अग्र रेखा पर प्रथम शीर्ष से आरम्भ होता है तथा अनुवर्ती पंक्तियाँ भी प्रथम शीर्ष से आरम्भ होती हैं।

इस प्रकरण में विस्तृत नियम सीसीसी के अध्याय KD और KE में दिये गये हैं जिनका पालन करना चाहिये।

2. **द्वितीय अनुच्छेद**: इसमें नियमांक KF2 के अनुसार निम्नलिखित निर्देशक शब्द अंकित किये जाते हैं:

For documents in this Class and its Subdivisions see the classified part of the catalogue under the Class Number

यह अनुच्छेद द्वितीय शीर्ष से आरम्भ होता है और अनुवर्ती पंक्तियाँ प्रथम शीर्ष से आरम्भ होती हैं। अन्य निर्देशक शब्दों की भांति यह निर्देशक शब्द रेखांकित नहीं किये जाते हैं। अन्त में पूर्ण विराम (Full stop) नहीं लगाया जाता।

3. **तृतीय अनुच्छेद:** इसमें अग्रानुच्छेद में दिये गये शीर्षक को दर्शाने वाला निर्देशांक (Ondex number) अंकित किया जाता है। इसको द्वितीय अनुच्छेद समाप्त होने वाली पंक्ति में जितना संभव हो सके उतना दाहिनी ओर पेन्सिल से लिखना चाहिये। द्रितीय अनुच्छेद और निदेशाक के मध्य कम से कम चार अक्षरों का स्थान होना चाहिये। यदि पर्याप्त स्थान न हो तो अनुवर्ती पंक्ति पर यथासंभव दाहिनी ओर लिखा जाता है।

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियों के नमूने

	MEMORY, PSYCHOLOGY.	
	For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified part of the catal under the Class Number S:43	

	COGNTION, PSYCHOLOGY	
	For documents .... Class Number S:4	

	PSYCHOLOGY	
	Class	For documents .... Number S

	REFLECTION, PSYCHOLOGY	
	Class	For documents .... Number S:45

	DREAM METAPSYCHOLOGY.	
	Class	For documents .... Number S:811

	SLEEP, METAPSYCHOLOGY.	
	Class	For documents .... Number S:81

	METAPSYCHOLOGY.	
	Class	For documents .... Number S:8

टिप्पणी : 1. Psychology और Cognition के अन्तर्गत एक ही बार वर्ग निर्देशी प्रविष्टियों का निर्माण किया गया है। यह तथ्य विशेष रूप में ज्ञातव्य है क्योंकि ग्रन्थालय में सूची में ऐसा ही करना चाहिये।

2. निर्देशक शब्द को केवल प्रथम प्रविष्टि में पूर्ण रूप से अंकित किया गया है। शेष में केवल प्रथम दो शब्द और अंतिम दो शब्द अंकित किये गये हैं। आगे भी ऐसा ही किया जायेगा। यह समय और बचाने के लिये किया गया है। वैसे ग्रन्थालय में प्रत्येक प्रविष्टि में इनको पूर्ण रूप से अंकित किया जाता है। वस्तुत:। इनको पत्रकों पर मुद्रित करवा लिया जाता है।

3. पत्रकों का आकार स्थान बचाने को छोटा कर दिया गया है और आगे भी ऐसा ही जायेगा। वस्तुत: प्रत्येक पत्रक समान आकार का 12.5 सेमी. और 7.5 से.मी. होता है।

6.2.2.2 ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ (Book Index Entries)

आनुवर्गिक सूची की विशिष्ट सहायक शब्द प्रविष्टि को ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि कहते हैं। यह मुख्यत: निम्नलिखित चार प्रकार की होती हैं और तदनुसार उपयोगकर्ताओं की अभिगमों की सम्पूर्ति करती हैं:

(i) लेखक/ सहलेखक निर्देशी प्रविष्टि

(ii) सहकारक/ सह-सहकारक निर्देशी प्रविष्टि

(iii) आख्या निर्देशी प्रविष्टि

(iv) ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि की संरचना

सीसीसी के नियमांक MK0 के अनुसार एक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि में निम्नानुसार अनुच्छेद होते हैं। सामान्यत: अधिकांश ग्रन्थों की ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियों में प्रथम तीन अनुच्छेदों की ही आवश्यकता होती है:

1. **अग्रानुच्छेद:** अग्ररेखा पर प्रथम शीर्ष से आरम्भ होता है। अनुवर्ती पंक्तियाँ प्रथम शीर्ष से आरम्भ होती है।

2. **द्वितीय अनुच्छेद**: द्वितीय शीर्ष से आरम्भ होता है। ग्रन्थमाला प्रविष्टि में शीर्ष से आरम्भ होता है।

3. **निर्देशांक** (Index number) द्वितीय अनुच्छेद की समाप्ति पर कम से कम चार अक्षरों का स्थान छोड़कर उसी पंक्ति पर यथासम्भव दाहिनी ओर पेन्सिल से लिखा जाता है। समुचित स्थान न होने पर अनुवर्ती पंक्ति में यथासम्भ दाहिनी ओर अंकित किया जाता है।

4. **टिप्पणी अनुच्छेद** : यदा-कदा आवश्यक पड़ती है।

नमूने की ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ

उपर्युक्त ग्रन्थ के लिये निर्मित की जाने वाली ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ नीचे प्रस्तुत की जा रही हैं :

लेखक निर्देशी प्रविष्टि (Author Index Entry)

	JUNG	(CG).
		Memories, dreams, reflection. Ed 3. S N63

सहकारक निर्देशी प्रविष्टि (Collaborator Index Entry)

	JAFFE	(Aneille), Ed.
		Jung: Memories, dreams, reflections. Ed 3. S N63

आख्या निर्देशी प्रविष्टि (Title Index Entry)

	MEMORIES, DREAMS, reflections Ed 3.	
		By Jung. S N63

टिप्पणी. 1. सीसीसी के नियमों के अनुसार आख्या प्रविष्टि निर्मित करने का प्रावधान अपवाद स्वरूप है। जिसकी चर्चा आगे की जायेगी। वस्तुत: इस ग्रन्थ की आख्या प्रविष्टि निर्मित नहीं होगी। यहाँ उसको नमूने के तौर पर समझाने के लिये बनाया गया है।

2.यह स्मरण रखना चाहिये कि ग्रंथ की आख्या का शीर्षक के रूप में प्रयुक्त पर प्रथम दो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे जाते है।

ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि (Series Index Entry)

	CLASSICS IN PSYCHOLOGY.	
	51	Jung: Memories,dreams, eflections. Ed 3. S N63

6.2.3 नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियाँ (Cross Reference Index Entries)

सीसीसी के अनुसार नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि एक सामान्य सहायक प्रविष्टि है जो एक शब्द या शब्द समूह से अन्य पर्यायवाची शब्द समूह की ओर निर्दिष्ट करती है। नियमांक LA'3 के अनुसार यह निम्नांकित पांच प्रकार की होती है:

1. वैकल्पिक नाम प्रविष्टि (Alternative Name Entry)
2. शब्द परिवर्ती रूप प्रविष्टि (Variant- Form of Word Entry)
3. छद्म नाम वास्तविक नाम प्रविष्टि (Pseudonym Real Name Entry)
4. ग्रन्थमाला-सम्पादक नाम प्रविष्टि (Editor of Series Entry)

5. सजातीय नाम प्रविष्टि (Generic Name Entry)

सामान्य: नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि उन शीर्षकों के अन्तर्गत निर्मित होती है जो उक्त ग्रन्थ की वर्ग निर्देशी प्रविष्टियों और ग्रंथ निर्देशी प्रविष्टियों में समाविष्ट नहीं हो सके हैं और उपयोगकर्ताओं द्वारा उनके अन्तर्गत पाठ्यसामग्री खोजने की सम्भावना है। वस्तुत: इनकी निष्पत्ति ग्रंथ निर्देशी प्रविष्टियों से मानी जाती है। इसी कारण इनको द्वितीय क्रम में व्युत्पन्नता की प्रविष्टियाँ (Entries of second order of derivation) कहते हैं।

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि की संरचना

सीसीसी नियमांक LA1 के अनुसार इस प्रविष्टि में निम्नानुसार तीन अनुच्छेद होते है:

1. **अग्रानुच्छेद**: यह अनुच्छेद अग्र रेखा पर प्रथम शीर्ष से आरम्भ होता है और अनुवर्ती पंक्ति भी प्रथम शीर्ष से आरम्भ होती है। इसमें उस शीर्षक को अंकित किया जाता है जिससे निर्देशित किया गया है।
2. **द्वितीय अनुच्छेद:** यह अनुच्छेद अनुवर्ती रेखा पर द्वितीय शीर्ष से आरम्भ होता है। इसमें आवश्यकतानुसार शब्द See अथवा 'See also' अंकित किये जाते हैं जिनको रेखांकित किया जाता है।
3. **निर्देशित शीर्षक अनुच्छेद:** यह अनुच्छेद अनुवर्ती रेखा पर द्वितीय शीर्ष से आरम्भ होता है और अनुवर्ती पंक्ति प्रथम शीर्ष से आरम्भ होती है। इस अनुच्छेद में निर्देशित शीर्षक अंकित किया जाता है।

टिप्पणी: यह विशेष रूप से ज्ञातव्य है कि इन प्रविष्टियों में ग्रंथ की आख्या और क्रामक अंक (Call Number) अंकित नहीं किये जाते जो ग्रंथ निर्देशी प्रविष्टियों में अवश्य अंकित किये जाते हैं।

नमूने की नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि

	PHILLIPS (Richard M), Ed.	
		<u>See</u> CLASSICS IN PSYCHOLOGY.

टिप्पणी: जैसा कि ऊपर बताया गया है नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियाँ पांच प्रकार की होती हैं। यह उनमें से ग्रन्थमाला-सम्पादक-नाम प्रविष्टि है। अन्य प्रकार की नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियाँ सम्बन्धित प्रकरणों में निर्मित करके समझायी जायेगी।

7. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रंथसूची (Bibliography)

1. सूद (एस पी): सूचीकरण प्रक्रिया. जयपुर, आर.बी.एस.ए., 1998.
2. वर्मा (ए के): क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण. रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999.
3. Krishna kumar: An introduction to cataloguing practice. New Delhi, Vikas, 1996.
4. Ranganathan (SR): Classified catalogue code etc.Ed5. Bangalore, Sarda Rangnathan Endowment for Library Science, 1992.
5. Ranganathan (SR): Cataloguing practice. Ed2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1994.

इकाई-2: एकल व्यक्तिगत लेखकत्व की कृतियों का सूचीकरण (Cataloguing of Books of Single Personal Authorship)

उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :-

1. व्यक्तिगत लेखक की अवधारणा से परिचित कराना,
2. एकल व्यक्तिगत लेखक से सम्बन्धित सूचीकरण नियमों से परिचित कराना,
3. एकल व्यक्तिगत लेखकत्व के ग्रंथो के क्रियात्मक सूचीकरण से परिचित कराना।

संरचना

1. लेखक की परिभाषा
2. लेखकत्व के प्रकार
    - 2.1 व्यक्तिगत लेखकत्व से तात्पर्य
        - 2.1.1 एकल व्यक्तिगत लेखकत्व : शीर्षक का वरण
        - 2.1.2 एकल व्यक्तिगत लेखकत्व: शीर्षक का उपकल्पन
3. आख्या अनुच्छेद के उपकल्पना के सम्बन्ध में मुख्य बिन्दु
4. ग्रंथमाला टिप्पणी अनुच्छेद
5. सूचीकृत मुखपृष्ठ
6. अभ्यास के लिये मुखपृष्ठ
7. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रंथसूची

1. लेखक की परिभाषा (Definition of Author)

लेखक के बिना कोई भी ग्रन्थ अस्तित्व में नहीं आ सकता। अत: लेखक, ग्रन्थ का जन्मदाता, रचयिता या सृजनकर्ता होता है। उस पर ग्रन्थ में वर्णित विचारों और अभिव्यक्ति की शैली का उत्तरदायित्व होता है। रंगनाथन ने अपने सीसीसी में लेखक को निम्नांकित दो भावों में व्यक्त किया है :

"भाव1- व्यक्ति (Person) जो किसी कृति का सृजन करता है अर्थात् उसमें सन्निहित विचार और अभिव्यक्ति का सृजन करता है।

भाव 2- समष्टि निकाय (Corporate body) जिस पर किसी कृति का उत्तरदायित्व होता है अर्थात् उसमें सन्निहित विचार और अभिव्यक्ति का उत्तरदायित्व होता है। (सीसीसी, पृ.126)

2. लेखकत्व के प्रकार (Type of Authorship)

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि लेखकत्व दो प्रकार के हो सकते है :

1. व्यक्तिगत लेखकत्व
2. समष्टिगत लेखकत्व

2.1 व्यक्तिगत लेखक की परिभाषा (Definition of Personal Author)

जैसाकि ऊपर बताया गया है कि जब किसी कृति की रचना के लिये एक या अधिक व्यक्ति निजी क्षमता में उत्तरदायी होते हैं जो उस कृति को व्यक्तिगत लेखक की कृति कहते हैं और उन व्यक्तियों को व्यक्तिगत लेखक कहते हैं। रंगनाथन ने व्यक्तिगत लेखक की परिभाषा इस प्रकार की है, "व्यक्ति, लेखक के रूप में अर्थात् कृति में निहित विचारों और उनकी अभिव्यक्ति का पूर्ण उत्तरदायित्व उस पर निजी क्षमता में होता है और किसी समष्टि निकाय के अन्तर्गत उस पद पर वह व्यक्ति आसीन हो नही होता न ही उस निकाय पर होता है। (सीसीसी पृ.126)

व्यतिगत लेखक की कृतियों को पुन: सीसीसी के अनुसार क्रियात्मक सूचीकरण की दृष्टि से दो वर्गों में विभक्त कर दिया गया है:

1. एकल व्यक्तिगत लेखकत्व की कृतियाँ
2. एक से अधिक व्यक्तिगत लेखकत्व की कृतियाँ

इस इकाई में हमारा अध्ययन केवल एकल व्यक्तिगत लेखकत्व की कृतियों तक सीमित रहेगा।

2.1.1 एकल व्यक्तिगत लेखक: शीर्षक का वरण (Choice of Heading of Single personal Author)

जब किसी कृति की रचना एवं उसमें वर्णित विचार एवं अभिव्यक्ति के लिये मात्र एक ही व्यक्ति उत्तरदायी हो मो उस कृति को एकल व्यक्तिगत लेखकत्व की कृति कहते हैं।

सीसीसी में एकल व्यक्तिगत लेखकत्व की कृतियों की मुख्य प्रविष्टियों के शीर्षकों के वरण के लिये किसी विशिष्ट नियम का समावेश नहीं है। अत: इस प्रकार की कृतियों के लिये सीसीसी में नियमांक MD1 प्रयुक्त किया जाता है जो निम्नानुसार है:

"शीर्षक का निर्माण निम्नलिखित में से अग्रतम (Earliest) के अनुसार होगा जो ग्रन्थ स्वीकार करता हो और....

1. एकल व्यक्तिगत लेखक का नाम;
2. सहव्यक्तिगत लेखकों के नाम
3. एकल समष्टिगत लेखक का नाम
4. सहव्यक्तिगत लेखक और सह समष्टिगत लेखक का नाम;
5. सह समष्टिगत लेखकों के नाम
6. एक अथवा दो अथवा अधिक छद्‌यनाम (Pseudonym)
7. एकल सहकारक (Collaborator) का नाम;

8. सह सहकारको का नाम; और

9. ग्रन्थ की आख्या (Title)।

यह नियम सीसीसी का आधारभूत नियम है और अन्य समस्त प्रकार की कृतियों के सूचीकरण के लिये भी मार्गदर्शक का काम करता है। अत: इसको सदैव स्मरण रखना चाहिये।

उपर्युक्त नियम के अनुसार यदि एकल व्यक्ति कृति का लेखक हो तो उसका नाम मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक के रूप में प्रयुक्त किया जायेगा।

2.1.2 एकल व्यक्तिगत लेखकत्व: शीर्षक उपकल्पन (Rendering of Heading of Single Personal Author)

उपकल्पन से तात्पर्य शीर्षक के स्वरूप (Form) से है। व्यक्तिगत नामों के उपकल्पन से संबंधित नियम सीसीसी के अध्याय JA में दिये गये हैं जिनका अध्ययन करना चाहिये।

अधिकांश प्राचीन व्यक्तिगत नाम एक शब्द के होते हैं। अत: उनके उपकल्पन में कोई विशेष समस्या नहीं है यथा:

KALIDAS

KAUITLYA

VALNIKI

ARISTOTLE

परन्तु आधुनिक व्यक्तिगत नाम एक से अधिक शब्दों, में निर्मित होते हैं। अत: उन नामों के उपकल्पन में अग्रलिखित क्रम को अपनाया जाता है:

1. प्रविष्टि पद (Entry element)
2. द्वितीय पद (Secondary element) और
3. व्यष्टिकृत पद (Individualising element)

यथा:

RANGANATHAN (Shiyali Ramamrita) (1892-1972)

उपर्युक्त उदाहरण में व्यष्टिकृत पद (अन्तिम पद) अर्थात् जन्म और मृत्यु का वर्ष अंकित किया गया है। स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप ग्रन्थालय इसको छोड़ सकता है। इन इकाइयों में सामान्यत: इसको छोड़ दिया गया है। यत्र- तत्र उपलब्ध होने पर अंकित किया गया है।

व्यक्ति का नाम उपकल्पित करने में नाम के संलग्क ('Attachments) तथा सम्मानसूचक शब्द जैसे Dr, Prof, Pdt, Sir, Rai, Saheb, Padmashri आदि और शैक्षणिक पदवियाँ जैसे M.A, MSc. Ph. D. आदि सामान्य: छोड़ दिये जाते हैं। अत: हम कह सकते हँ कि शीर्षक में व्यक्ति का विशुद्ध नाम अंकित किया जाता है।

आधुनिक पश्चिमी और अधिकांश भारतीय नामों में कुलनामों (Surnames) के लगाने की प्रथा है जो व्यक्ति नाम के अन्त में लगाये जाते हैं। सामान्यत: उनको प्रविष्टि पद बनाया जाता है। उनको रोमन बड़े अक्षरों में लिखा जाता है। साधारणतया यह एक शब्दीय होते हैं।

यदा-कदा दो या तीन शब्दीय भी हो सकते हैं। शेष भाग को उनके बाद प्राकृतिक क्रम में वृत्ताकार कोष्ठक में अंकित किया जाता है। उसके पश्चात दूसरे वृत्ताकार कोष्ठक में व्यक्ति का जन्म और मृत व्यक्तियों के संबंध में मृत्यु वर्ष भी अंकित किया जाता है। यथा:

एक शब्दीय प्रविष्टि पद

TAGORE (Rabindra Nath) (1861-1941).

GANDHI (Mohandas Karamchand) (1869-1948).

DEWEY (Melvil) (1851-1931)

दो शब्दीय प्रविष्टि पद

DAS GUPTA (S).

SEN GUPTA (B).

KRISHNA MENON (V.K)

तीन शब्दीय प्रविष्टि पद

DEV RAI MAHASAI (Munindra).

योजकीय (Hyphenated) प्रविष्टि पद

DAY- LEWIS (Cecil).

बिना कुलनाम वाले नाम

JAISHANKAR PRASAD. RAJENDRA PRASAD. SRI PRAKASH.

3. आख्या अनुच्छेद के उपकल्पन के सम्बन्ध में मुख्य बिन्दु

आख्या अनुच्छेद में सर्वप्रथम ग्रन्थ की आख्या अंकित की जाती है। यदि आख्या के आरम्भ में कोई उपपद (Article) अर्थात् A, An और The तथा सम्मान सूचक शब्द (Honorific) जैसे Holy, Srimad आदि हो तो उसको छोड़ दिया जाता है। यदि आख्या बड़ी हो तो उसमें से अनावश्यक अंश मध्य और अन्त में से छोड़ा जा सकता है। यदि मध्य में से छोड़ा जाये जो उसके स्थान पर तीन बिन्दु और यदि अन्त में से छोड़ा जाये तो शब्द etc जोड़ दिया जाता है।

उसी पैराग्राफ में पूर्ण विराम के पश्चात् यदि कोई हो तो, संस्करण के सम्बन्ध में सूचना अंकित की जाती है। प्रथम संस्करण की सूचना अंकित नहीं की जाती। द्वितीय और आगामी संस्करणों की सूचना अग्रानुसार अंकित की जाती है। यदि संस्करण का कोई विशिष्ट नाम हो तो उसको भी अग्रानुसार अंकित किया जाता है:

Ed 2.

New ed.

Authorised Ed

Centenary Ed.

उसी पैराग्राफ में पूर्ण विराम के पश्चात् यदि हो तो सहकारक विवरण (Collaborator statement) अंकित किया जाता है। सर्वप्रथम संक्षेप में सहकारक का काम और तत्पश्चात् उसका विशुद्ध नाम प्राकृतिक क्रम में अंकित किया जाता है।

यथा :

Ed by Ram Nath Sharma.

Tr by S N Agrawal.

Ed by S K Jain ; ill by J K Sharma.

4. ग्रन्थमाला टिप्पणी अनुच्छेद (Series Note Section)

जैसाकि प्रथम इकाई में बताया गया है, टिप्पणियाँ छः प्रकार की होती हैं। यहां हम केवल ग्रन्थमाला टिप्पणी की चर्चा करेंगे। शेष की चर्चा सम्बन्धित प्रकरणों में की जायेगी। सीसीसी ए-ग्रंथमाला और छद्म ग्रथमाला (pseudo-series) को मान्यता देता है। ग्रन्थमाला से तात्पर्य ग्रन्थों के एक संघात (set) के सामूहिक नाम से है।

ग्रन्थमाला टिप्पणी वृत्ताकार कोष्ठक में बन्द करके अंकित की जाती है। यदि ग्रन्थमाला के आरम्भ में कोई उपपद (Articlie) अर्थात् A, Anऔर The हो या कोई सम्मानसूचक शब्द हो तो उसको छोड़ दिया जाता है। ग्रन्थमाला के नाम के पश्चात् पूर्ण विराम लगाकर उसी कोष्टक में यदि कोई हो तो ग्रन्थमाला सम्पादक का विशुद्ध नाम अंकित किया जाता है। नाम से पूर्व शब्द 'Ed by' लिखे जाते हैं। तत्पश्चात् पूर्ण विराम के पश्चात् ग्रन्थमाला में ग्रन्थ की संख्या इण्डो-अरेबिक अंकों में लिखी जाती हैं।

उदाहरण

(Ranganathan aesies in library science.25).

(Agra University publication series. Ed by Ram Nath Shukla.23)

(Vikram University library science series. Ed by Anil kumar Jain and sudhir kumar.24).

(Home University library series. Ed by john smith and others. 6).

इसी प्रकार कभी-कभी किसी ग्रन्थ में एक से अधिक ग्रन्थमाला हो सकती हैं। यदि वे स्वतंत्र हों तो प्रत्येक को पृथक अनुच्छेद के रूप में निम्नानुसार लिखा जाता है :

उदाहरण

(Ranganathan series in library science. 2.)

(Mardras Library Association, publication series.21)

वैकल्पिक नाम (Alternative name) और आश्रित (dependent) ग्रन्धमालाओं को एक ही वृत्ताकार कोसक में उसी अनुच्छेद में अंकित किया जाता है।

उदाहरण

(Kashi Sanskrit series or Haridas Sanskrit granthamala.68).

(Kashi Sanskrit series or Haridas Sanskrit granthamala. 88. kavya section.12).

सीसीसी में तीन प्रकार की छद्म ग्रंथमालाओं (Pseudo-series) को भी मान्यता प्रदान की गई है। प्रथम प्रकार की छद्म ग्रन्थमाला में, "लेखक के नाम को संस्करण के नाम के साथ ग्रंथमाला का नाम माना जाता है।" दूसरे प्रकार की छद्म ग्रन्थमाला में, "लेखक के नाम को सजातीय आख्या (Generic title) के साथ ग्रंथमाला का नाम माना जाता है।' ' तृतीय प्रकार की छद्म ग्रन्थमाला में, "सजातीय आख्या को ग्रन्धामाला का नाम माना जाता है।" (सीसीसी पृ. 143)

यथा:

उदाहरण

(Shaw (George Bernard).New varoium ed. 17)

(Shukala (Ram Nath). Funamentals of economics.5)

(Ramsay (William), Ed Text books of physical chemistry.15)

5. सूचीकृत मुखपृष्ठ (Catalogued Titels)

मुखपृष्ठ 1

(सहकारक ,ग्रंथमाला टिप्पणी और निर्मित करते हुए छद्म कड़ी (pseudo link) के साथ एकल लेखक का ग्रन्थ)

CLASSIFED CATALOGUE CODE WITH ADDITIONAL RULES FOR DICTIONARY CATALOUGE CODE

S R Rangannathan

Assisted by

A Neelameghan

Asia Publishing House

Bombay New Dehli Madras Calcutta London

1964

Other Information

Half title page: Ranganathan series in library science; 2

Back of title page

Call number : 2:55N3 qN64

Accession Nember : 27893

Edition 5, 1964

Shiyali Ramamrita Ranganathan (1892)

Arashanapalai Neelameghan (1927)

मुख्य प्रविष्टि

	2:55N3	qN64
		RANGANATHAN (Shiyali Ramamrita) (1892-1972). Classified catalogue code with additional rules for dictionary catalogue. Ed 5. Assis by Arashanapali Neelameghan. (Ranganathan series in library science.2).
	27893	

पत्रक का पश्च भाग - संकेत (Tracing)

Code, Classified catalogue code. Classified catalogue code. Cataloguing, Library science Tenhnical treatment, Library science. Library Science. Ranganathan (Shiyali Ramamrita) (1892-1972). Neelameghan (Arashnapali) (1927), Assis. Ranganathan series in linrary science.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ

श्रृंखला

2:55N3q

2	=	Library Scince (Sougth link)
	↓	
2:	=	(False link)
	↓	
2:5	=	Technical Treatment in Library Science (Sought link)
	↓	

2:55 = Cataloguing in Library Science (Sought link)

↓

2:55N3 = Classified Catalogue Code (Sought link)

↓

2:55N3 q = code ((Sought pseudo link)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि- 1

	CODE, CLASSIFIED CATALOUGE code.	
	For Code of the kind, see the classified part of the catalogue under the call Number beginning with 2:55N3q	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि- 2

	CLASSIFIED CATALOUGE code.	
	For documents in this class and its Subdivisions,see the classified part of the catalogue under the class Number 2:55N3	

वर्ग निगेर्शी प्रविष्टि -3

	CATALOGUGIN, LIBRARY SCIENCE.	
	Class	For documents... Number 2:55

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 4

	TECHNICAL TREATMENT, LIBRARY SCIENCE.	
	Class	For documents... Number 2:5

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 5

	LIBRARY SCIENCE.	
		For documents... Class Number 2

टिप्पणियाँ : 1 प्रथम वर्ग निर्देशी प्रविष्टि ग्रन्थांक (Book number) की छद्म कड़ी से निर्मित हुई है जिसको सीसीसी के संशोधित नियमाक KB93, KB94 और KF25 (Cataloguing practice by S R Ranganathan. P474-5) के अनुसार निर्मित किया गया है।

2. द्वितीय वर्ग निर्देशी प्रविष्टि में ही केवल पूर्ण रूप से निर्देशी शब्द अंकित किये गये हैं। शेष में आरम्भ के दो शब्द और अंत के दो शब्द अंकित किये गये हैं। यह प्रणाली अभ्यास के लिये अपनायी गई है। आगे भी ऐसा ही किया जायेगा। वैसे ग्रन्थालय में समस्त वर्ग निर्देशी प्रविष्टियों में यह शब्द पूर्ण रूप से अंकित किये जाते हैं और उनको मुद्रित करवा लिया जाता है।

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ (Book Index Entries)

लेखक प्रविष्टि

	RANGANATHAN (Shiyali Ramamrita) (1892-1972).	
		Classified catalogue code. Ed 5. 2:55N3 qN64

टिप्पणी : 1. शीर्षक अनुच्छेद में मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक को यथावत अग्र रेखा पर प्रथम शीर्ष से आरम्भ करते हुए अंकित किया गया है। अनुवर्ती पंक्ति को भी प्रथम शीर्ष से आरम्भ किया जाता है।

2. द्वितीय अनुच्छेद में ग्रन्थ की मुख्य आख्या द्वितीय शीर्ष से अंकित की गई है। पूर्ण विराम के पश्चात् संस्करण विवरण अंकित किया गया है। इसकी अनुवर्ती पंक्ति भी प्रथम शीर्ष से आरम्भ होती है।

3. इस पंक्ति में पर्याप्त स्थान न होने के कारण निर्देशांक अर्थात् क्रमांक अंक (Call number) को अनुवर्ती पंक्ति में यथासप्रभव दाहिनी ओर अंकित किया गया है। इसको पेन्सिल से लिखना चाहिये। वर्गाक (Class number) और ग्रन्थांक (Book number) के मध्य दो अक्षरों का स्थान छोड़ा जाता है।

सहकारक प्रविष्टि

	NEELAMEGHAN (Arashanapalai) (1927), Assis,	
		Ranganathan: Classified catalogue code. Ed5. 2:55N3 qN64

टिप्पणी : 1 सहकारक का पूरा विशुद्ध नाम अंकित क्यिा गया है। उसको अग्र रेखा पर प्रथम शीर्ष से आरम्भ किया गया है। अनुवर्ती पंक्ति भी प्रथम शीर्ष से आरम्भ की जाती है। जन्म वर्ष जोड़ने के उपरान्त विवरणात्मक शब्द 'Assis' अंकित किया गया है। जिसको संक्षेप में लिखा गया है और बड़े अक्षर से आरम्भ किया गया है। उससे पूर्व अर्द्धविराम (Comma) लगाया गया है।

2. द्वितीय अनुच्छेद को अनुवर्ती रेखा पर द्वितीय शीर्ष से आरम्भ किया गया है। इसमें सर्व प्रथम मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक अनुच्छेद का प्रविष्टि पद अंकित किया गया है। तत्पश्चात्

कोलन लगाकर, ग्रन्थ की मुख्य आख्या तथा संस्करण विवरण अंकित किया गया है। अनुवर्ती पंक्ति प्रथम शीर्ष से आरम्भ की जाती है।

3. निर्देशांक (Index number) को उसी रेखा में जितना यथासम्भव दाहिनी ओर अगली रेखा में अंकित किया गया है। इसको पेन्सिल से लिखना चाहिये।

ग्रन्थमाला प्रविष्टि

	RANGANATHAN SRIES IN LIBRARY SCIENCE.	
	2	Ranganathan: Classified catalogue code. Ed5. 2:55N3 qN64

टिप्पणी : 1 ग्रंथमाला के पूरे नाम को रोमन बड़े अक्षरों में अग्र रेखा पर प्रथम शीर्ष से अंकित किया गया है। अनुवर्ती पंक्ति को भी प्रथम शीर्ष से आरम्भ किया जाता है।

2. द्वितीय अनुच्छेद में प्रथम और द्वितीय शीर्ष के मध्य में ग्रन्थमाला में ग्रन्थ के क्रमांक को अंकित किया गया है। तत्पश्चात् उसी रेखा में द्वितीय शीर्ष से मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का प्रविष्टि पद अंकित किया गया है। तत्पश्चात् कोलन लगाने के पश्चात् ग्रन्थ की मुख्य आख्या और संस्करण विवरण अंकित किया गया है।

3. निर्देशांक को अगली रेखा में यथा सम्भव दाहिनी ओर अंकित किया जाता है। इसको पेन्सिल से लिखना चाहिये।

मुखपृष्ठ -2

(सहकारक के साथ अन्तर्विषयी प्रविष्टि (Cross reference entry) की मांग करते हुए एकल लेखक का ग्रन्थ)

W. C. Berwick Sayers

A MANUAL OF CLASSIFICATION FOR LIBRARIES

Fourth Edition

Completely Revised and partly Rewritten by

Arthur Maltby

London

Andra Deutsch

1967

Other Information

Call number : 2:51 N67

Accession number : 25197

Note: Contains a bibliography on the subject form P. 333-351. It is to be brought into the notce of the readers. Its class number is 2:51a

मुख्य प्रविष्टि

	2:51 N67	
	Arthur	SAYERS (William Charies Berwick) (1881-1960). Manual of classification for libraries. Ed 4. Rev by Maltby
	25197	

संकेत

2:51a P333-51.	Classification, Library science. Technical treatment, Library science. Library science Bibilography, Classification, Library science. Sayers (William Charles Berwick) (1881-1960). Maltby (Arthur),Rev. Berwick Sayers (William Charies) (1881-1960).

टिप्पणी:

1. शीर्षक अनुच्छेद में लेखक का पूरा नाम और जन्म तथा मृत्यु वर्ष ज्ञात करके अंकित कर दिये गये हैं।

2. आख्या अनुच्छेद में से आरम्भिक उपपद 'A' छोड़ दिया गया है।

अन्तविर्षयी प्रविष्टि

	2:51a	
	P 333-51.	See also 2:51 N67 Sayers. Manual of classification forlibraries. Ed 4.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ (Class Index Entries)

श्रृंखलायें (Chains)

वर्गांक : मुख्य प्रविष्टि : 2:51

2 = Library Science (Sought Link)

↓

2: = (False link)

↓

2:5 = Technical Treatment in Library Science (Sought Link)

↓

2:51 = Classification in Library Science (Sought Link)

वर्गांक : अन्तर्विषयी प्रविष्टि : 2:51a

2:51a = Bibliography of Classification in Library Science (Sought Link)

टिप्पणी : क्योंकि वर्गांक 2:51 तक की श्रृंखला ऊपर बन चुकी है। अत: केवल उससे आगे की ही श्रृंखला निर्मित की गई है।

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि- 1

	CLASSIFICATION, LIBRARY SCIENCE.	
	For documents in this Class and is Subdivisions,see the Classified part of the catalogue under the class Number 2:51	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि- 2

	TECHNICAL TREATMNT,LIBRARY SCIENCE.	
	For documents .... Class Number 2:5	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि- 3

	LIBRARY SCIENCE.	
	For documents .... Class Number 2	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि- 4

	BIBLIOGRAPHY, CLASSIFICATION, LIBRARY SCIENCE.	
	For documents .... Class Number 2:51a	

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ (Book Index Entries)

लेखक निर्देशी प्रविष्टि

	SYAERS (William Charies Berwick) (1881-1960).	
	Manual of classification for libraries. Ed 4. 2:51 N67	

सहकारक निर्देशी प्रविष्टि

	MAL BY (Arthur), Rev.	
	Ed 4.	Sayers : Manual of classification for libraries. 2:51 N67

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि

	BERWICK SAYERS (William Charles)(1881-1960).	
	1960).	See SAYERS (William Charles Berwick) (1881-

मुखपृष्ठ - 3

(ग्रन्थमाला, आख्या परिवर्तन और संहिता संबंधी सम्बद्ध ग्रन्थ की टिप्पणियों के साथ एकल लेखक की कृति)

CATALOGUING PRACTICE

S R ranganathan

Assisted by

G Bhattacharyya

Documentation Research and Training Centre

Indian Statistical Institule Bangalore

Asia Publishing House

London

Other Information

Half title page shiyali Ramamrita Ranganathan (1892-1972)

Ranganathan series in library science ; 25 Ganesh Battacharyya(1932)

Call Number : 2:55N3 vN74 Second Edition (1974

Accession Number: 94781

Note: First edition was published under the title: Library catalogue: Fundamentals and procedure'

मुख्य प्रविष्टि

	2:55N3	vN74
	and pr	RANGANATHAN (Shiyali Ramamrita) (1892-1972) Cataloguing practice . Ed 2 Assis by Ganesh Bhattacharya (Ranganathan seriece in library science.25) "Published previously as Library catalogue: Fundamentals ocedure." "For an associated code see 2:55N3 qN64"

टिप्पणियाँ : उपर्युक्त मुख्य प्रविष्टि में निम्नानुसार तीन टिप्पणियाँ अंकित की गई हैं :

1. ग्रन्थमाला टिप्पणी
2. आख्या परिवर्तन टिप्पणी
3. सम्बद्ध ग्रन्थ (Associated book) टिप्पणी

संकेत

	Practice book, Classified catalogue code. Calssified catalogue code. Technical treatment, Library science. Library science. Ranganathan (Shiyali Ramamrita) (1892-1972). Ranganathan (Shiyali Ramamrita) (1892-1972). Battacharryya (Ganesh)(1932), Assis. Ranganathan series in library science

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि (class Index Entries)

श्रृंखला (chain)

2 = Library Science (Sought Link)

↓

2: = (False link)

↓

2:5 = Technical Treatment in Library Science (Sought Link)

↓

2:55 = Cataloguing in Library Science (Sought Link)

↓

2:55N3 = Classified Catalogue Code (Sought Link)

↓

2:55N3v = Practical on Classified Catalouge Code (Sought Link)

↓

टिप्पणी : अन्तिम कड़ी, छद्‌य कड़ी (Pseudo link) हैं जिसकी निष्पत्ति ग्रन्थांक से हुई हैं।

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ -1

		PARACTICAL, CLASSIFIED CATALOUGE code.
		For practical book of this kind, see the classified part of the catalogue under the call Number beginning with 2:55N3 v

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ -2

		CLASSIFIED CATALOGUE code.
		For documents in this class and its Subdivisions, see the classified part of the catalogue under the class number 2:55N3

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ -3

		CATALOGUING. LIBRARY SCIENCE.
		For documents...Class Number 2:55

वर्ग निदेंशी प्रविष्टियाँ -4

	TECHNICAL TREATMENT, LIBRARY SCIENCE.	
	For documents...Class Number 2:5	

वर्ग निदेंशी प्रविष्टियाँ -5

	LIBRARY SCIENCE.	
	For documents...Class Number 2	

टिप्पणियाँ : 1. प्रथम वर्ग निर्देशी प्रविष्टि ग्रन्थांक की छद्म कड़ी से निर्मित की गई है। अत: निर्देशात्मक शब्दों को आवश्यकतानुसार परिवर्तित कर दिया गया है।

2. अन्य वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ पूर्ववत सामान्य हैं। वस्तुत: इनको किसी ग्रन्थालय में निर्मित करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि मुख पृष्ठ 1 में बनाई ही जा चुकी हैं।

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

लेखक निर्देशी प्रविष्टियों

	RANGANATHAN (Shiyali Ramamrita) (1892-1972).	
	Cataloguing practice. Ed 2. "Published previously as Liabrary catalogue. : Fundamentals and procedure." 2:55N3 vN74	

	RANGANATHAN (Shiyali Ramamrita) (1892-1972).	
		Library catalogue: Fundamentals and procedure “Published later as Cataloguing practice. Ed2” 2:55N3 vN74

टिप्पणी. 1. आख्या परिवर्तन हो जाने पर पूर्ववर्ती आख्या को अंकित करते हुए, इतर प्रविष्टि लेखक के अन्तर्गत निर्मित होगी जिसका नमूना ऊपर दिया गया है।

2. यदि ग्रन्थालय में पूर्ववर्ती आख्या उपलब्ध है तो उसकी मुख्य प्रविष्टि और लेखक प्रविष्टियाँ सूची में से निकालकर उन पर उपरोक्तानुसार टिप्पणी अंकित कर दी जायेगी और नवीन लेखक प्रविष्टि बनाने की आवश्यकता नहीं हैं।

सहकारक निर्देशी प्रविष्टि

	BHATTACHARYYA (Ganesh) (1932). Assis.	
		Ranganathan: Cataloguing Practice. Ed 2 2:55N3 vN74

ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि

	RANGANATHAN SERIES IN LIBRARY SCEINCE.	
	25	Ranganathan: Cataloguing Practice. Ed 2 2:55N3 vN74

मुखपृष्ठ-4

(वैकल्पिक - आख्या (Alternative title) वाला एकल व्यक्तिगत लेखक)

THE LIGHT OF ASIA

Or

THE GREAT RENUNCIATION

(Mahabhinishikarmana)

Being the life and Techings of Gauama the prince of India
Founder of Buddism

By

Sir Edwin Arnold, M.A, K.C.I.E, C.S.I

London
Routledge and Kegan Paul Ltd.
1952

Other Information

Call number : 0111, 1M28, 1 N52
Acession number : 42789

मुख्य प्रविष्टि

	0111,1M 28,1 N52	
	42789	ARNOLD (Edwin) (1828). Light of Asia or Great renunciation = Mahabhinishkarmana :Being the life and teachings of Gautama etc.

टिप्पणियाँ : 1. तीनों वैकल्पिक आख्याओं को अंकित किया गया है। द्वितीय से पूर्व शब्द.'or' जोड़ दिया गया इकाई- 2 है और तृतीय से पूर्व = चिन्ह का उपयोग किया गया है।

2. पूर्ववर्ती दोनों आख्याओं से आरम्भिक उपपद.'The' छोड़ दिया गया है।

3. लेखक के नाम से आरम्भिक पदवी. 'Sir' और अंत में दी गई शैक्षणिक पदवियाँ छोड़ दी गई है।

संकेत

Light of Asia, ARNOLD (Edwin) (1828). Arnold (Edwin)(1828), Poetry. Poetry, English, Literaure. English, Literature. Annold (Edwin)(1828). Great renunciation. Mahabhinishkarma.

श्रृंखला (Chain)

O = Literature (Sought link)

↓

O1 = Indo- European Literature (Unsought link)

↓

O11 = Teuonic Literature (Unsought link)

↓

O111 = English Litrature (Sought link)

↓

O111, = (False link)

↓

O111,1 = English Poetry (Sought link)

↓

O111,1M28 = Poetry of Edwin Arnold (Sought link)

↓

O111,1M28, = (False link)

↓

O111,1M28,1 = (Light of Asia (Sought link)

टिप्पणियाँ : उपर्युक्त वर्गाक मे M28 को कालक्रम विधि (Chronological device) से प्राप्त किया गया है। सीसीसी के नियमांक KA222, KA30 और KA31 के अनुसरण में इन सब अंकों को एक अंक माना गया है।

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ -1

	LIGHT OF Asia, ARNOLD (Edwin) (1828)
	For document in this class and its Subdivisions, See the classified part of the catalogue under the Class Number O111,1M28,

वर्ग निदेंशी प्रविष्टियाँ -2

	ARNOLD (Edwin) (1828), POETRY.
	For documents .... Class Number O111,1M28,1

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ -3

	POETRY, ENGLISH.
	For documents .... Class Number O111,1

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ -4

	ENGLISH, LITERATURE.	
	Class	For documents .... Number O111

	LITERATURE.	
	Class	For documents .... Number O

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

लेखक निर्देशी प्रविष्टि

	ARNOLD (Edwin) (1828).	
		Light of Asia O111,1M28,1 N52

टिप्पणी : यद्‌यपि ग्रन्थकार अभिगम पूर्वोक्त निर्मित एक वर्ग निर्देशी प्रविष्टि द्‌वारा संतुष्ट की जा सकती है और सामान्यत: उपरोक्त ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि निर्मित करने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु रंगनाथन कृत .'Cataloguing practice' में ऐसे प्रकरणों में लेखक निर्देशी प्रविष्टि निर्मित की गई है। अत: यहाँ भी निर्मित कर दी गई है।

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियाँ

	GREAT RENUNCIATION	
		See Light of Asia

	MAHABHINISHKRMANA.	
		See Light of Asia

6. अभ्यास के लिये मुखपृष्ठ (Title Pages for Practice)

1. Economic Policy for the Thinking Man/By/C.B Turroni/Translated From German by/ E.Fitzerald/ London/Hodge&Co.Ltd./1980/Second Revised Edition/1980.

   Call Number: X N80 Accession Number: 16428

2. Excavation at Agroha, Punjab/By/H.L Srivatava, M.A./Joint Dirctor General Of Archaeology in India/ Government of India/ Manager/ Government Publications/Delhi1952.

   Half Title Page

   Memoirs of the Archeological Survey of India

   Call Number V443.A N52 Accession Number: 15782

3. Abhigyan Shakuntlam/Bykalidas With Translation Into English/By/H.K.Cooper/Sanskrit Series Office/Varanasi/1962

   Half Title Page

   Chowkhamba Sanskrit Series/Or/Varanasi Sanskrit Granthmala; No.51

   Call Number: O15, 1D40, 3 N62 Accession Number: 47392

टिप्पणी : 1. उपरोक्त प्रकरण में ग्रन्थमाला के दोनों वैकल्पिक नामों को मुख्य प्रविष्टि के टिप्पणी अनुच्छेद में वृत्ताकार कोष्ठक में निम्नानुसार अंकित कर दिया जायेगा :

(Chowkhamba Sanskrit Series/Or/Varanasi Sankrit Granthmala)

ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि केवल प्रथम नाम के अन्तर्गत बनेगी। वैकल्पिक नाम अन्तर्गत नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि निर्मित होगी

7. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची (Biblography)

1. सूद (एस पी) : सूचीकरण प्रक्रिया. जयपुर, आर.बी.एस.ए., 1998.
2. वर्मा (ए के) : क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण. रायपुर, सेन्द्रल बुक हाउस, 1999.
3. Krishana Kumar: An introduction to catalouguing practice. New Delhi, Vikas, 1996
4. Ranganathan (S R): Classified catalogue code etc. Ed 5. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.
5. Ranganathan (S R) : Catalguing practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowmen for Library Science, 1994.

इकाई -3: सह व्यक्तिगत लेखकत्व के ग्रंथों का सूचीकरण (Cataloguing of Books of Joint Personal Authorship)

उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य हैं : -

1. सहव्यक्तिगत लेखक की अवधारणा से परिचित कराना,
2. सहव्यक्तिगत लेखक से सम्बन्धित सूचीकरण नियमों से परिचित कराना,
3. सहव्यक्तिगत लेखकत्व के ग्रन्थों के क्रियात्मक सूचीकरण से परिचित कराना।

संरचना

1. सहलेखक की परिभाषा
2. सह व्यक्तिगत लेखकत्व की कृतियों के प्रकार
   2.1 दो सहव्यक्तिगत लेखकत्व की कृतियां,
   2.2 तीन या अधिक सहव्यक्तिगत लेखकत्व की कृतियाँ
3. अभ्यास के लिये मुखपृठ
4. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची

1. सहलेखक की परिभाषा (Definition of Joint Author)

जब दो या दो से अधिक लेखक संयुक्त रूप से किसी ग्रन्थ की रचना करते है तो उन्हें सहलेखक कहा जाता है। जहाँ शब्द 'संयुक्त्त रूप से' अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि समस्त लेखक परस्पर मिल-जुल कर समस्त ग्रन्थ की रचना करते हैं और समस्त ग्रन्थ में वर्णित विचारों और अभिव्यक्ति के लिये संयुक्त रूप से उत्तरदायी होते हैं। किसी भी लेखक का उत्तरदायित्व, ग्रन्थ के किसी अंश की रचना पर नहीं होता। यदि विभिन्न लेखकों का उत्तरदायित्व ग्रन्थ के विभिन्न अंशों की रचना पर है तो उसको सह लेखकों की रचना नहीं माना जाता अपितु समिश्र ग्रन्थ (Composite book) माना जाता है। इस प्रकार के ग्रन्थो के सूचीकरण के लिये अलग से नियमों का प्रावधान है।

रंगनाथन ने अपने सीसीसी में सहलेखक की परिभाषा इस प्रकार की है, ' 'दो या दो से अधिक लेखक, व्यक्तिगत या समष्टिगत, जो कृति में सन्निहित विचार और अभिव्यक्ति के लिये उत्तरदायी हैं, वह अंश जिसके लिये उनमें से प्रत्येक पृथक रूप से उत्तरदायी है न तो निर्दिष्ट किया गया है और न ही पृथक्करणीय है। " (सीसीसी पृ. 127). उपरोक्त परिभाषा से स्पष्ट है कि व्यक्ति भी सहलेखक हो सकते हैं और समष्टि भी। इस इकाई में केवल सहव्यक्तिगत लेखकों की चर्चा की गई है।

2. सहव्यक्तिगत लेखकों की कृतियों के प्रकार (Types of Books of Joint Author)

सीसीसी के अनुसार सहव्याकृतगत लेखकों की कृतियों को सूचीकरण की दृष्टि से दो वर्गों में विभक्त किया गया है :

1. दो सहव्यक्तिगत लेखकों की कृतियाँ
2. तीन या अधिक सहव्यक्तिगत लेखकों की कृतियाँ

2.1 दो सहव्यक्तिगत लेखकों की कृतियाँ

दो सहलेखकों की कृतियों के लिये मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक के वरण के लिये सीसीसी नियमांक MD32 प्रयुक्त होता है जो इस प्रकार है, "यदि मुखपृष्ठ पर दो और केवल दो सहलेखकों के नाम अंकित हैं तो दोनों नामों को शीर्षक के रूप में योजक शब्द से जोड़ते हुए प्रयुक्त किया जायेगा।"

मुखपृष्ठ-1

(दो सहव्यक्तिगत लेखक तथा एक सहकारक)

TRADING IN LPG

BY

Shankar Dayal Sharma

and

Prof. Om Prakash

Revised by

S.P. mittal

Metropolitan Book Co.

Delhi 1979

Other Information

Call number : X8(F558): 5 N79 Accession Number: 55213

Fourth Edition: 1979

मुख्य प्रविष्टि

	X8:(F558):5	N79
	55213	SAHRAMA (Shankar Dayal) and OM PRAKASH. Trading in LPG. Ed 4. Rev by S P Mittal.

टिप्पणी. 1. दोनों लेखकों के नामों को जिस क्रम से वह नाम मुखपृष्ठ पर अंकित हैं, योजक शब्द and से जोड़ते हुए शीर्षक में अंकित किया गया है।

2. दूसरे नाम में कुल नाम न होने के कारण सम्पूर्ण: नाम को यथाक्रम में रोमन बड़े ओक्षरों में अंकित किया गया है।

संकेत

Trade, Fuel gas.
Fuel gas. Industry, Economics.
Industry, Economics.
Economics.
Sharma (Shankar Dayal) and Om Prakash .
Om Prakash and Sharma (Shankar Dayal).
Mittal (S p). **Rev.**

श्रृंखला (Chain)

X = Economics (Sought link)
↓
X8 = Industry in Economics (Sought link)
↓
X8 (F5558) = Fuel gas Industry in Economics (Sought link)
↓
X8(F5558) = (False link)
↓
X8 (F5558)5 = Trade in fuel gas (Sought link)

टिप्पणी: उपरोक्त श्रृंखला में सीसीसी के नियमों के अनुसार विषय विधि से प्राप्त वर्गांक के भाग (F558) को एक अंक मानकर एक कड़ी का निर्माण किया गया है।

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ

	TRADE, FUEL GAS.	
	For document in this class and its Subdivisions, See the classified part of the catalogue under the Class Number X8(F558):5	

	FUEL GAS INDUSTRY, ECONOMICS.	
	For documents .... Class Number X8(F558)	

	INDUSTRY, ECONOMICS.	
	For documents .... Class Number X8	

	ECONOMICS.	
	For documents .... Class Number X	

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

लेखक निर्देशी प्रविष्टि

	SHARMA (Shankar Dayal) and OM PRAKASH	
		Trading in LPG. Ed 4. X8(F558):5 N79

	OM PRAKASH and SAHRMA (Shankar dayal)	
		Trading in LPG. Ed 4. X8(F558):5 N79

टिप्पणीयाँ: 1 दो सहलेखक होने पर प्रथम लेखक प्रविष्टि में दोनों नाम उसी क्रम में अंकित किये जाते हँ जैसे मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक अनुच्छेद में अंकित हैं। एक अन्य प्रविष्टि का निर्माण लेखकों के अन्तर्गत किया जाता है जिसमें उपरोक्तानुसार लेखकों के नामों का क्रम पलट दिया जाता है।

सहकारक प्रविष्टि

	MITTAL (S P), Rev.	
		Sharma and Om Prakash: Trading in LPG.Ed 4. X8(F558):5 N79

टिप्पणी दो सहसहलेखक होने पर दोनों के प्रथम पद योजक चिन्ह लगाकर द्वितीय अनुच्छेद में उपरोक्तानुसार अंकित किये जाते हैं।

मुखपृष्ठ 2

(दो सहव्यक्तिगत ग्रन्धकार के साथ सहकारक, ग्रंथमाला और ग्रन्थ गला सम्पादक।)

THE UNIVERSITY LIBRARY

The Organization, Administration and Functions of Academic Libraries

By

Louis Round Wilson

&

Morries F. Tauber

Edited by

Richard S. Angell

Second Edition

Columbia University Press

N.Y 1956

Other Information

Half title page: Columbia Studies in Library Science, Edited by Robert D. Leigh: no.8

Call Number: 234 N56 Accession Number: 32157

मुख्य प्रविष्टि

	234 N56	
	32157	WILSON(Louis Round) and TAUBER (Morries F) University library: The organization, administration and functions of academic libraries. Ed 2. Ed by Richard S Angeli (Columbia studies in library science. Ed by Robert D Leigh.8)

संकेत

University lidrary.

	Academical library. Library Science. Wilson (Louis Round) and Tauber (Morries F) Tauber (Morries F) and Wilson (Louies Round). Angell (Richard S), Ed. Columbia studies in library science. Leigh (Robert D), Ed.

श्रृंखला (chain)

2	=	Library science. (sought link)
	↓	
23	=	Acedmical Library (sought link)
	↓	
234	=	University library (sought link)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	UNIVERSITY LIBRARY.
	For document in this class and its sbdivions, see the classified part of the catalogue under the Class Number 234

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

	ACADEMICAL LIBRARY.	
	Class Number	For documents 23

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि -3

	LIBRARY SCIENCE.	
	Class Number	For documents 2

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

लेखकों निर्देशी प्रविष्टियाँ

	WILSON (Louis Round) and TAUBER (Morries F)	
		University library. Ed 2. 234 N56

	TAUBER (Morries F) and WILSON (Louis Round)	
		University library. Ed 2. 234 N56

सहकारक निर्देशी प्रविष्टि

	ANGELL (Richard S), Ed.
	Wilson and Tauber : University library. Ed 2. 234 N56

ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि (Series Index Entry)

	COLUMBIA STUDIES IN LIBRARY SCIENCE.	
	8	Wilson and Tauber : University library. Ed 2. 234 N56

टिप्पणियाँ. 1. दो सहलेखक होने पर दोनों के नाम प्रथम पद संयोजक 'and' द्वारा जोड़कर सहकारक और ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टियों में द्वितीय अनुच्छेद में अंकित किये जाते हैं।

2. ग्रन्थमाला सम्पादक होने का ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि (Cross Reference index Entry)

ग्रन्थमाला-सम्पादक प्रविष्टि (Editor-of-series CRIE)

	LEIGH (Robert D), Ed.	
		See COLUMBIA STUDIES IN LAIBRARY SCIENCE.

टिप्पणी : ग्रन्थमाला-सम्पादक के अन्तर्गत उपरोक्तानुसार नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि निर्मित होती है।

2.1 तीन या अधिक सहव्यक्तिगत ग्रन्थकारिता की कृतियाँ (Works of three or More joint Personal Authors)

तीन या अधिक सहलेखकों की कृतियों के लिये मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक के वरण के लिये सीसीसी नियमाक MD33 प्रयुक्त होता है जो अग्रानुसार है, "यदि मुखपृष्ठ पर तीन या अधिक सहलेखकों के नाम अंकित हैं तो अकेले प्रथमांकित नाम को शीर्षक के रूप में प्रयुक्त किया जावेगा और उसके पश्चात शब्द 'and other' जोड़ दिये जायेंगे।"

मुखपृष्ठ -3

(तीन सहव्यक्तिगत लेखकों के साथ एक ही श्रेणी के दो सहकारक ग्रन्थमाला और दो ग्रन्थमाला सम्पादक)

ORGANIZATION BEHAVIOUR AND ADMINISTRARION

Cases, Concepts and Research Findings

By

Paul R. Lawrence

Jhon A. Seller

Editors

Amy Wonslow

And

Carlton B. Joeckel

1961

Homewood

Lllinois

Other Information

Half title page:

The lrwin-Dorsey Series in Behavioural Science in Bussiness: no 74

Edited by Lowell Martin and N.D Needham

Call Number: X: 8 N61 Accession Number: 89612

मुख्य प्रविष्टि (main Entry)

	X:8	N61
		LAWRENCE (Paul R) and other. Organization, behavior and administration: Cases, concepts and research findings. Ed by Amy

	Windows and Corton B Joeckel (Irwin-Dorsey Seriesin behavioural science in business. Ed by Lowell Martin and Needham.74 89612

टिप्पणी. 1 केवल प्रथमांकित लेखक का नाम शीर्षक में अंकित किया गया है।

2. आख्या अनुच्छेद में कृति के दोनों सम्पादकों के नाम आख्या के पश्चात यथाक्रम में अंकित किये गये हैं।

3. इसी प्रकार टिप्पणी अनुच्छेद में ग्रन्थमाला के पश्चात् यथाक्रम में दोनों ग्रन्थमाला सम्पादकों के नाम अंकित किये गये हैं

संकेत(Tracing)

	Management, Economics Economics. Lawrence (Paul R) and others. Windows (Amy) and jocekel (Carlton B), Ed. Joeckel (Carlton B) and Winsliw (Amy),Ed Lrwin-Dorsey series in behavioural Sciece in business. Martin (Lowell) and Needham(N D), Ed. Needham (N D) and Martain (Lowell), Ed.

श्रृंखला (chain)

X	=	Economics (sought link)
	↓	
X:	=	(false link)
	↓	
X:8	=	Management in Economics (sought link)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि (Class Index Entries)

	MANAGEMENT, ECONOMICS.	
	For document in this class and its sbdivions, see the classified part of the catalogue under the Class Number X:8	

	ECONOMICS	
	For documents .... Class Number X	

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि (Book Index Entries)

ग्रन्थकार निर्देशी प्रविष्टि (Author Index Entries)

	LAWRENCE (Paul R) and others.	
		Organization, behaviour and administration. X:8 61

टिप्पणी : 1.केवल एक लेखक निर्देशी प्रविष्टि ही उपरोक्तानुसार निर्मित होगी। दूसरे और तीसरे लेखकों से लेखक निर्देशी प्रविष्टियाँ निर्मित नहीं होगी

2. आख्या अनुच्छेद में केवल मुख्य आख्या को अंकित किया गया है।

सहकारक : सम्पादक निर्देशक प्रविष्टियाँ (Collaborator : Editors Index Entries)

	WINSLOW (Amy) and JOECKEL (Carlton B), Ed.	
	Lawrence and other: Organization, behavior and administration.	

	X:8 N61

	JOECKEL (Corryton B) and WINSLOW (Amy), Ed.	
	Lawrence and other: Organization, behavior and administration. X:8 N61	

टिप्पणी.

1. यदि एक ही श्रेणी के दो सहकारक हैं तो दो सहकारक प्रविष्टियाँ उपरोक्तानुसार निर्मित होती हैं अर्थात् प्रथम में नाम उस क्रम में अंकित किये जाते हैं जैसे मुख्य प्रविष्टि के आख्या अनुच्छेद में अंकित होते हैं और दूसरी में पलट दिये जाते हैं।
2. द्वितीय अनुच्छेद में सर्वप्रथम मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का प्रथम पद दिया गया है शब्द 'and other' जोड़ दिया गया है। उसके पश्चात् मुख्य आख्या को दिया गया है। अन्य ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियों में भी ऐसा ही होगा।

ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि (series Index Entry)

	IRWIN - DORSEY SERIES IN BEHAVIOURAL SCINCE	
	IN BUSINESS. 74 Lawrence and other: Organization, behavior and administration. X:8 N61	

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि (Series Index Entry)

	MARTIN (Lowell) and NEEDHAM (N D), Ed	
		<u>See</u> IRWIN _DORSEY SERIES IN BEHAVIOURAL

	SCIENCE IN BUSNIESS.

	NEEDHAM(N D) and MARTIN (Lowell),Ed	
	See IRWIN _DORSEY SERIES IN BEHAVIOURAL SCIENCE IN BUSNIESS.	

टिप्पणी: दो ग्रन्थमाला सम्पादक होने पर दो नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियों का निर्माण होता है। प्रथम में सम्पादकों के नाम उसी क्रम में अंकित किये जाते हैं जैसे मुख्य प्रविष्टि के टिप्पणी अनुच्छेद में अंकित हैं। द्वितीय में नामों का क्रम पलट जाता है।

मुखपृष्ठ -4

(चार सहव्यक्ति लेखक ,उपसर्ग (Prefix) के साथ फ्रैंच नाम, भाषा सहित अनुवादक का नाम)

American series on physics: no.3 Editor: Alfred Muskett

TEACHING OF PHYSICS

By

Jean de la Fontaine

O. Stephens Spinks

Emily S. Doxter

Hanry j. Dibble

Tranclated from French by

Knud jeppesen

Edition 1

American Book Company

New York Chicago Boston

1963

Other Information

Call Number: T: 3 (c) N63 Accession Number: 19728

मुख्य प्रविष्टि (Main Entry)

	T:3 (c)	N63
	19728	LA FONTAINE (jean de) and others. Teaching of physics. Tr from Freach by knud jeppessen. (American series on physics. Ed by Alfred Muskett.3)

टिप्पणियाँ :

1. व्यक्तिगत नाम में उपसर्ग होने के कारण उपरोक्तानुसार प्रथम पद चुना जायेगा।
2. यदि कृति अनुवाद हो और मूल भाषा का नाम मुख पृष्ठ पर अंकित हो तो उसको अनुवादक के नाम के साथ उपरोक्तानुसार अंकित किया जाता है।
3. प्रथम संस्करण की सूचना अंकित नहीं की जाती। अत: संस्करण विवरण न होने पर कृति का प्रथम संस्करण ही माना जाता है।

संकेत (Tracing)

	Physics. Teahing technique. Teaching technique, Education. Education. La Fontaine (jean de) and other jappesen

(kund), Tr.
American series on physics.

Musket (Alfred),Ed.

श्रृंखला (chain)

T = Education (sought link)
↓
T: = (False link)
↓
T:3 = Teaching Teacher (sought link)
↓
T:3 (c) = Teaching Technique of physics (sought link)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ (Class Index Entries)

	PHYSICSM TEACHING TECHNQUE.
	For document in this class and its sbdivions, see the classified part of the catalogue under the Class Number T:3 (c)

	TEACHING TECHNQUE, EDUCATION.
	For documents .... Class Number T:3

	EDUCATION.	
	Class Number	For documents .... T

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ (Book index entries)

ग्रन्थकार निर्देशी प्रविष्टि (Author Index Entry)

	LAFONTAINE (jean de) and other.	
		Teaching of physics. T:3(c) N63

सहकारक निर्देशी प्रविष्टियाँ (collaborator Index Entry)

	JAPPESEN (kund), Tr.	
		La Fontaine and other: Teaching of physics. T:3(c)N63

ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टियाँ (Serial Index Entries)

	AMERICAN SERIES OF PHYSICS.	
	3	La Fontaine and other: Teaching of physics.

	T:3(c) N63

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियाँ (Cross Reference Index Entries)

वैकल्पिक नाम नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियाँ (Alternative Name CRIE)

	FONTAINE (jean de).	
		See LA FONTAINE (jean de).

ग्रन्थमाला-सम्पादक नामान्तर प्रविष्टि (editor-of-series CRIE)

	MUSKETT (Alfred),Ed.	
		See AMERICAN SERIES OF PHYSICS.

मुखपृष्ठ - 5

(चार लेखकों के साथ मिश्रित वर्ग (Complex Class) वाला वर्गांक अन्तर्विषयी प्रविष्टियों की आवश्यकता)

MACHANICS FOR ENGINEERS

Statics and Dynamics

By

Edward R. Maurer

Charles Carr

Roe L. John

(Second Edition.)

1986

Grove press inc.

New York

Other Information

Call Number: B70Bd N86 Accession Number: 17892

अन्तर्विषयी प्रविष्टियों (Cross Reference Entries) हेतु वर्गांक:

1 B7:20bD Pages: 7-117

2. B7:30bD: Pages: 119-225

मुख्य प्रविष्टि (Main Entry)

	B70bD	N86
	Ed2. 17892	MAURER (Edward R) and other. Machanics for engineers: statics and dynamics.

संकेत (Tracing)

	Engineering, biasing Mechanics Mechanics Mathematics.

	Engineering, biasing statics. statics. Engineering, biasing Dynamics. Dynamics. Maurer (Edward R) and other.

अन्तर्विषय प्रविष्टि (Cross Reference Entries)

	B7:20b	D
		<u>See also</u> B70bD N86 Maurer and other. Machanics for engineers. Ed 2. P7-117

	B7:30b	D
		<u>See also</u> B70bD N86 Maurer and other. Machanics for engineers. Ed 2. P119-25

श्रृंखलाएँ (Chain)

मुख्य प्रविष्टि का वर्गांक : B70bD

B = Mathematics (Sougth link)

↓

B7 = Mechanics (Sougth link)
↓
B70 = Indirector Digit
↓
B70b = inter-class phase relation (Bias) to be denoted by the term 'biasing'
↓
B70bD = Mathematics for Engineers (Sougth link)

1. अन्तर्विषयी प्रविष्टि का वर्गांक : B7:20bD

B7:2 = statics (Sougth link)
↓
B7:20 = indicaror Digit (False link)
↓
B7:20b = inter class phase relation (Bias) to be denoted by the term 'biasing'
↓
B7:20bd = statics for Engineers (Sougth link)

2. अन्तर्विषयी प्रविष्टि का वर्गांक : B7:30bD

B7:3 = statics (Sougth link)
↓
B7:30 = indicator digit (False Link)
↓
B7:30b = inter-class phase relation (Bias) to be denoted by the term 'biasing' (False link)
↓
B7:30bd = Dynamics for Engineers (Sougth link)

टिप्पणी: अन्तविर्षयी प्रविष्टियों के केवल उन अंशों से श्रृंखलायें निर्मित की गयी हैं जो मुख्य प्रविष्टि के वर्गांक के आगे की है।

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियों (Class Index Entries)

	ENGINEERING, biasing MECHANICS.	
		For document in this class and its sbdivions, see

	the classified part of the catalogue under the Class Number B70bd

	MACHANICS.	
	Class Number	For documents B7

	MATHEMATICS.	
	Class Number	For documents .... B

	ENGINEERING, biasing STATICS.	
	Class Number	For documents B7:20Bd

	STATICS.	
		For documents ....

	Class Number B7:2

	ENGINEERING, biasing DYNAMICS	
		For documents ....
	Class Number	
		B7:30bD

	DYNAMICS	
		For documents ....
	Class Number	
		B7:3

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ (Book index entries)

ग्रन्थकार निर्देशी प्रविष्टि (Author Index Entry)

	MAURER (Edward R) and other.	
		Machanics for engineers. Ed 2.
		B70bd N86

3. अभ्यास के लिये मुखपृष्ठ (Title pages for practice)

1. Theory and Practice of Message / and Medical Gymnastic / By/H/H Hyman / & / C.W. Hard / London / H.K. Lewis & co. / 1983.

   Call number: L83:4:64 N83 Accession Number: 17357

2. Engineering Societies Monographs; No. 11/Harison W. Graver, General Editor.

Heat and Thermodynamics / (being the Second Edition of Intermediate Heat) /By/F. tyler/and/R. Tyler/ London/ Edward Arnold ltd. /1965.

Call Number: C4 N65 Accession Number: 79823

3. McGraw-Hill Series in Nuclear Engineering; 5; Editor: H. Zinn and James D. Luntz. Chemical Engineering/By/Bernard E. Ducret/and/Rae-Uz-Zaman/Edited by/Jacob Board Faille/First Edition/ McGraw-Hill Book co. inc./N.Y/.1987

   Call Number: D70bF N57 Accession Number: 17829

4. Indian series in modern mathematics; no. 23/ General Editor : K.R Sharma

   Secondary School Mathematics / By Dr. Shanti Narayan / Bhola Ram / G.S. Barar / Edited by / Dr. S.D. Mishra / Asia Publishing House / New Delhi / 1979.

   Call Number: B N79 Accession Number: 41725

5. University Series in Undergraduate Mathematics; no. 12 Edited by P.R Sharma. Introduction to Logic / By / patric suppes / in collaboration with John.l.kelley / m.j.mansfiled / and / herman meyer / edition with an introduction and notes by / charies S. Pierce / 1987 / George Allen & Unwin / London

   Call Number: R1 N87 Accession Number: 89275

Note: Contains a bibliography on the subject from p 470-489. Its class Number: R1a

टिप्पणी : उपरोक्त मुख पृष्ठों में एक आड़ी रेखा तक मुखपृष्ठ पर एक पंक्ति है।

4. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची (Biblography)

1. सूद (एस पी) : सूचीकरण प्रक्रिया. जयपुर, आर.बी.एस.ए., 1998.
2. वर्मा (ए के). क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण. रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999.
3. Krishna Kumar: An introduction to cataloguing practice. New Delhi, Vikas, 1996.
4. Ranganathan (SR): classified catalogue code etc. Ed 5. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1994.

इकाई - 4: छद्मनामों के अन्तर्गत प्रकाशित कृति का सूचिकरण (Cataloguing Of Works Published Under Pseudonyms)

उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :-

1. छद्मनामधारी लेखक (Pseudonym) की अवधारणा से परिचित कराना,
2. छद्मनामान्तर्गत प्रकाशित कृतियों को सूचीकृत करने के लिये सीसीसी के नियमों से परिचित कराना,
3. इस प्रकार की कृतियों के क्रियात्मक सूचीकरण से परिचित कराना।

संरचना

1. छद्मनाम से तात्पर्य
2. शीर्षक का वरण
3. छद्मनाम का उपकल्पन
4. छद्मनामान्तर्गत प्रकाशित कृतियों की प्रविष्टियाँ
5. अभ्यास के लिये मुखपृष्ठ
6. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची

1. छद्मनाम से तात्पर्य (Meaning of Pseudonym)

अनेक लेखक विशेष रूप से साहित्य के क्षेत्र में, साहित्य रचना के लिये छद्मनाम रख लेते हैं। यह प्रवृत्ति संसार के अनेक देशों और विभिन्न भाषाओं के साहित्यों में दृष्टिगत होती है। उदाहरणार्थ प्राचीन भारत में 'विष्णुगुप्त' ने कौटिल्य नाम से अपने ग्रन्थ 'अर्थशास्त्र' की रचना की। आधुनिक भारत में इसका सर्वाधिक प्रसिद्ध उदाहरण 'प्रेमचन्द' है जिनका वास्तविक नाम 'धनपतराय' था। आपने उर्दू में 'नवाबराय' के नाम से लेखन कार्य किया। हिन्दी साहित्य में छद्मनामों के अन्य उदाहरण हैं 'नीरज', 'बच्चन', 'नागार्जुन', 'शिवानी', 'एक भारतीय आत्मा' आदि। कवियों द्वारा अंगीकृत उपनाम 'सुमन', 'दिनकर', 'निराला' आदि भी इसी श्रेणी में आते हैं। जिनको नाम के साथ प्रयुक्त किया जाता है। सामान्यत: इसके कई कारण हो सकते हैं जैसे अपने वास्तविक परिचय को छिपाना, शर्मीलापन, भीरूता, हंसी-मजाक, धोखा देना, घबराहट आदि। हमारी राय में इसका वास्तविक कारण है- कुछ लेखक यह समझते हैं कि हमें हमारे वास्तविक नाम से कोई विशेष सफलता नहीं मिली अर्थात् यह नाम रास नहीं आया अत: यदि किसी अन्य नाम से लेखन कार्य करें तो सफलता प्राप्त हो सकती है अथवा हो सकता है उनका वास्तविक नाम लम्बा और कठिन हो और वह कोई ऐसा नाम अंगीकृत करना चाहते हों जो सरलता से जनसाधारण की जुबान पर चढ़ जाये और वह लोकप्रिय हो जायें।

रंगनाथन ने अपने सीसीसी में छद्मनाम रखने वाले लेखक की परिभाषा इस प्रकार की है; "एक लेखक जो वास्तविक नाम से भिन्न कोई मिथ्या अथवा काल्पनिक नाम अथवा अन्य कोई विशिष्टता अपनाता है। छद्मनाम किसी लेखक को उसके जीवनकाल में अथवा जीवनोपरान्त अन्य व्यक्तियों द्वारा भी प्रदान किया जा सकता है। अथवा वह स्वत: ही सहज भाव से आरम्भ हो जाता है।" (सीसीसी, पृष्ठ 127 - 8).

उपरोक्त परिभाषा से स्पष्ट है कि

1. छद्मनाम लेखन कार्य के लिये अपनाया जाता है।
2. वह वास्तविक नाम से भिन्न कोई नाम जैसे "प्रेमचन्द' अथवा विशिष्टता जैसे 'एक भारतीय आत्मा' हो सकता है।
3. वह लेखक द्वारा अपनाया जा सकता है अथवा अन्य व्यक्तियों हारा भी उसको दिया जा सकता है अथवा स्वत: सूचीकरण- ही सहज भाव से प्रचलित हो सकता है।
4. वह लेखक के जीवनोपरान्त भी प्रचलित हो सकता है।

2. शीर्षक का वरण (Choice Of Heading)

छद्मनामान्तर्गत प्रकाशित कृतियों में शीर्षक के वरण की दृष्टि से प्रमुख समस्या यह आती है कि कौन से नाम को शीर्षक में अंकित किया जाये - वास्तविक नाम को अथवा छद्मनाम को? कुछ लेखकों ने एक से अधिक छद्मनाम के अन्तर्गत भी लेखन कार्य किया है। अत: समस्या आती है कि कौन से छद्मनाम को वरीयता प्रदान की जाये? रंगनाथन ने अपने सीसीसी में शीर्षक के वरण के लिये निर्धार्यता के उपसूत्र (Cannon of Ascertainability) को आधार बनाया है। इस उपसूत्र के अनुसार ग्रन्थ के मुखपृष्ठ (Title Page) और उसके आस-पास के पृष्ठों पर अंकित सूचना के आधार पर शीर्षक का वरण करना चाहिये।

नीचे इस प्रसंग से सम्बन्धित सीसीसी के नियमों को अंकित किया जा रहा है:

नियमांक MD41: यदि मुखपृष्ठ पर लेखक के नाम के स्थान पर केवल छद्मनाम ही अंकित हो तो उस छद्मनाम को ही शीर्षक के रूप में प्रयुक्त करना चाहिये और तत्पश्चात् विवरणात्मक पद Pseud जोड़ देना चाहिये। उदाहरणार्थ:

COLT (Clem), pseudo

PREMCHAND, pseudo

TWAIN (Marks), pseudo

नियमांक MD421 : यदि मुखपृष्ठ पर लेखक के छद्मनाम के साथ-साथ लेखक का वास्तविक नाम भी अधीनस्थ रूप में अंकित हो तो उसको विवरणात्मक पद pseud' के उपरान्त वृत्ताकार कोष्ठक में बन्द करके अंकित करना चाहिये। लेखक के वास्तविक नाम से पूर्व। 'ie' चिह्न अंकित करना चाहिये। कोष्ठक से पूर्व अर्धविराम लगाना चाहिये। वास्तविक नाम के शब्दों को प्राकृतिक क्रम में अंकित करना चाहिये। उदाहरणार्थ :

COLT (Clem), Pseud. (ie Nelson Coral Nye)

PREMCHAND, Pseud. (ie Dhanpat Rai).

TWAIN (Marks), Pseud. (ie Samuel Langhrone Clemens).

नियमांक MD422 : यदि मुखपृष्ठों पर लेखक का वास्तविक नाम अंकित हो और छद्मनाम अधीनस्थ रूप में अंकित हो, तो पूर्ववर्ती को शीर्षक के रूप में प्रयुक्त किया जायेगा। पश्चवर्ती को उसके पश्चात् वृत्ताकार कोष्ठक में जोड़ा जायेगा और उससे पूर्व ‘Ie’ चिह्न और बाद में विवरणात्मक पद ‘Pseud’ जोड़ा जायेगा। कोष्ठक से पूर्व अर्द्धविराम लगाया जायेगा।

CLACY (Halen), (i e cycle, Pseud)

TRIPATHY (SURYA Kant), (i e Nirala Pseud.)

नियमांक MD423 यदि लेखक का वास्तविक नाम ग्रन्थ में अंकित न हो तथा बाह्य स्रोत से ज्ञात किया जाये तो वास्तविक नाम को Pseud लिखने के पश्चात् वर्गाकार कोष्ठक में लिखा जाता है। वास्तविक नाम से पूर्व ie शब्द लिखा जाता है। कोष्ठक से पूर्व (,) का प्रयोग किया जाता है। वास्तविक नाम सामान्य क्रम में लिखा जाता है।

उदाहरणार्थ :

SHIVANI, Pseud [ie Gaura Pant].

NEERAJ, Pseud, [ie Gopal Das].

नियमांक MD424 यदि दो सहलेखकों द्वारा एक छद्मनाम का उपयोग संयुक्त रूप से किया जाता है और उनके वास्तविक नाम भी कृति में उपलब्ध हो जायें तो ‘i e’ चिह्न के बाद दोनों सहलेखकों के वास्तविक नाम सामान्य क्रम में वृत्ताकार कोष्ठक में अंकित किये जायेंगे और उन्हें योजक चिह्न and' से जोड़ दिशा। जायेगा।

TWO BROTHERS, Pseud, (ie Alfred Tennyson and Charles Tennyson).

टिप्पणी : उपर्युक्त उदाहरण में यह माना गया है कि वास्तविक नाम कृति में ही कहीं अंकित हैं

नियमांक MD425. यदि एक छद्मनाम का उपयोग तीन या अधिक सहलेखकों ने संयुक्त रूप से किया है तो वृत्ताकार कोष्ठक में प्रथमांकित लेखक का वास्तविक नाम सामान्य क्रम में अंकित करके शब्द 'सतत ०।तवD' जोड़ दिये जायेंगे।

उदाहरणार्थ :

THREE BROTHERS, Pseud, [ie Alfred Tennyson and Other].

टिप्पणी. उपर्युक्त उदाहरण में यह माना गया हे कि लेखकों के वास्तविक नाम कृति के बाहर से लाये गये हैं। नियमांक MD43 यदि लेखकों के वास्तविक नामों के स्थान पर दो या अधिक छद्मनाम का उपयोग हुआ हो तो उन्हें योजक शब्द and से जोड़ा जायेगा। लेखकों के नाम कृति के बाहर से लाये गये हैं।

JKFRS and SASC, Pseud, [ie James keir]

3. छद्मनामकारी लेखक का उपकल्पन (Rendering Of Heading Of Pseudonym)

उपर्युक्त कई उदाहरणों से स्पष्ट है कुछ छद्मनाम व्यक्तिगत नाम जैसे दृष्टिगोचर होते है जैसे 'Premchand', George eliot', 'Mark Twain' आदि और कुछ छद्मनाम व्यक्तिगत नाम जैसे दृष्टिगोचर नहीं होते है जैसे 'Ek Bhartiya Atma', 'Two Brothers,' kerala putra आदि।

जो नाम व्यक्तिगत नाम जैसे दृष्टिगोचर होते हैं उनका उपकल्पन अन्य व्यक्तिगत नामों जैसा ही होता है यथा :

ELIOT (GEORGE), Pseud

PREMCHAND, Pseud.

TWAIN (Mark), Pseud

जो नाम व्यक्तिगत नाम जैसे दृष्टिगोचर नहीं होते, उनके उपकल्पन के लिये सीसीसी में निम्नांकित नियमांक का प्रावधान नियमांक है।

नियमांक MD22 एक छद्मनाम, जिनकी संरचना किसी व्यक्ति के नाम जैसी नहीं है, उसको उसके पदों में बिना कोई उलट-पलट किये वैसे ही लिखा जायेगा जैसा वह ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर अंकित है।

यथा

EK BHARTIYA ATMA, Pseud

KERALA PUTRA, Pseud.

TWO BROTHERS, Pseud

4. छद्मनामान्तर्गत प्रकाशित कृतियों की प्रविष्टियाँ

मुखपृष्ठ -1

(लेखक का वास्तविक नाम कहीं से भी ज्ञातव्य नहीं लेखक का नाम आख्या में समाविष्ट और दो सहकारक)

UPHARA

A Collection of 10 stories

Of

O Henry

Edited by

Mehendra Mishra

Surendra Misra

Cuttack

Sisir Ranjan panigrahi

1963

Other Information

Call Number: 0111, 3M62x N63

Accession Number: 19783

मुख्य प्रविष्ट (Main Entry)

	0111, 3m62x N63	
	19783	HENRY (0'), Pseud Uphara: A collection of 10 stories. Ed by Mathendra Misra and surendra misra

टिप्पणी : लेखक का वास्तविक नाम ज्ञात ने होने के कारण नियमांक MD41 प्रायोज्य है।

संकेत (Tracing)

HENRY (0'), Pseud, fiction
Fiction, English.
English , Literature
Literature.

HENRY (0'), Pseud.
Misra (Mahendra) and misra (Surendra).
Ed.
Misra (Surendra) and Misra (Mahendra)
Ed.

श्रृंखला (Chain)

0	=	literature (Sough link)
	↓	
01	=	Indo European Literature (unSough link)
	↓	
011	=	Teutonic Literature (Sough link)
	↓	
0111	=	English literature (Sough link)
	↓	
0111,	=	(false link)
	↓	
0111,3	=	Fiction in English literature (Sough link)
	↓	
0111,3m62	=	Fiction of o' Henry (Sough link)
	↓	
0111,3M62x	=	Collection of o' Henry (unsough link).

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ (Class Index Entries)

	HENRY (0') Pseud, fiction.
	For Documents In This Class And Its Subdivision , See The Classified Part Of The Catalogue Under The Class Number 0111,3M62

	FICTION, ENGLISH
	For documents .... Class Number 0111,3

	ENGLISH, LITERATURE.	
	Class Number	For documents 0111

	LITERATURE.	
	Class Number	For documents 0

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ (Book index entries)

ग्रन्थकार निर्देशी प्रविष्टि (Author Index Entry)

	HENRY (0'), <u>Pseud</u>	
		Upharal. 0111,3 m 62x N63

टिप्पणी: यद्यपि लेखक अभिगम उपर्युक्त वर्ग प्रविष्टियों में से एक के अन्तर्गत संतुष्ट की जा चुकी है। अत: इसको निर्मित करने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु रंगना थन कृत 'Cataloguing practice' में ऐसे प्रकरणों में लेखक निर्देशी प्रविष्टि निर्मित की गई है। अत: यहाँ भी निर्मित की गई है।

सहकारक निर्देशी प्रविष्टियाँ (Collaborator Index Entries)

	MISRA (Mahendra) and MISRA (Surendra), <u>Ed.</u>	
		Henry (0), pseud: Uphara. 0111,3m 62x N63

	MISRA (Surendra) and MISRA (Mahendra), <u>Ed.</u>	
		Henry (0), pseud: Uphara. 0111,3m 62x N63

आख्या निर्देशी प्रविष्टियाँ (Title Index Entry)

	UPHARA	
		By Henry (0), <u>pseud:</u> 0111,3m 62x N63

टिप्पणी

1. उपर्युक्त ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियों के द्वितीय अनुच्छेद में नियमांक MK21 के नीचे दी गई व्याख्या के अनुसरण में छद्मनामधारी लेखक का पूरा नाम लिखा गया है (सीसीसी, पृ. 402)
2. ग्रन्थ की आख्या के अन्तर्गत प्रविष्टि निर्मित की गई है क्योंकि इसको विशिष्ट आख्या माना गया है जिसको पाठकों को याद रखने की सम्भावना है।

मुखपृष्ठ - 2

(छद्यनामधारी लेखक वास्तविक नाम ग्रंथ में उपलब्ध)

LIFE ON THE MISSISIPI

BY

MARK TWAIN

AUTHORISED EDITION

Harper & Bors, Publishers

New York London

1987

Other Information

Call Number: 0111, 3M35, 23 N87 Accession Number: 82317

Note: The real name of the author is Samuel Langhorne Clemens born in 1835 and diet in 1910 the information is given on the back of the title page.

मुख्य प्रविष्टि (Main Entry)

	0111, 3M35,23 N87	
		TWAIN (mark), pseudo (ie samuel Langhorne Clemens) Life on the Missisipi. Authorised ed.
	82317	

टिप्पणी :

1. लेखक का वास्तविक नाम ग्रन्थ में ही अंकित होने के कारण नियमांक MD421 प्रायोज्य है।
2. लेखक के जन्म और मृत्यु वर्ष ज्ञात होने पर भी शीर्षक में अंकित करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि व्यक्तिसाध्यकरण वास्तविक नाम से ही हो जाता है।
3. संस्करण का नाम होने पर उसे उपरोक्तानुसार अंकित किया जाता है।

संकेतन (Tracing)

	Life on the missispi, Twain (mark), pseud (ie Samuel Langhorne Clemens). Twain (Mark), pseudo, (ie Samuel) Langhorne Clemens), fiction. Fiction, English. English, Literature. Literarure. Twain (Mark), pseudo, (ie Samuel Langhorne Clemens). Clemens (Samuel Langhorne) (1835-1910)

श्रृंखला (chain)

0 = literature (Sough link)

↓

01 = Indo European Literature (unSough link)

↓

011 = Teutonic Literature (Sough link)

↓

0111 = English literature (Sough link)

↓

0111, = (false link)

↓

0111,3 = Fiction in English literature (Sough link)

↓

0111,3m35 = Fiction of mark Twain (Sough link)

↓

0111,3M35, = (false link)

↓

0111,3M35,2 = (false link)

↓

0111,3M35,23 = Life on the missisipi (Sough link)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ (Class Index Entries)

	Life on the missisipi, TWAIN (Mark), pseudo, (ie Samuel	
	Langhorne Clemens). For the document in this class and catalogue under the class number 0111,3M35,23	

	Twain (Mark), pseudo, (ie Samuel Langhorne Clemens).	
	For documents .... Class Number 0111,3M35	

	FICTION, ENGLISH.	
	For documents .... Class Number 0111,3	

	ENGLISH LITERATURE	
	For documents .... Class Number 0111	

	LITERATURE	
	Class	For documents .... Number 0

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ (Book index entries)

ग्रन्थकार निर्देशी प्रविष्टि (Author Index Entry)

	Twain	(Mark), pseudo, (ie Samuel Langhorne Clemens).
		Life on the missisipi. Authorised ed. 0111, 3M35, 23 N87

नामन्तर निर्देशी प्रविष्टि (Cross Reference Index Entry)

छद्मनाम-वास्तविक नाम प्रविष्टि (Pseudonym-real Name Entry)

	CLEMENTS	(Samuel language) (1835-1950)
		See TWAIN (Mark), Pesud.

मुखपृष्ठ- 3

(छद्मनाम व्यक्तिगत नाम जैसा नहीं)

ESSAYS FO TODAY

BY

A.G. Gardiner

(Alpha of the Plough)

First Edition

London

Macmillan & co. Ltd.

1985

Other Information

Half title page

University of Manchester, publication series; no. 5.

Edited by Cathelean Freemen.

Call Number: 0111, 6M65X N85 Accession Number: 17283

मुख्य, प्रविष्टि (Main Entry)

	0111,6M65X N85	
		GARDINER (AG),(ie Alpha of the plough, pseud). Essays of today. (University of Manchester, publication series.Ed by Cathelean Freemen.5).
	17283	

टिप्पणी : 1. छद्मनाम अधीनस्थ रूप में अंकित होने के कारण नियमांक MD422 प्राजोज्य होगा

2. प्रथम संस्करण होने के कारण संस्करण विवरण अंकित नहीं किया गया है।

संकेत (Tracing)

	Gardiner (AG), (ie Alpha Of The Plough, Pseud), Essays. Essays, English. English, Literature. Literature. Gardiner (AG), (ie Alpha Of The

	Plough, Pseud), Essays. University of Manchester, publication series. Alpha Of The Plough, Pseud. Freeman (Cathelean), Ed.

श्रृंखला

0	=	literature (Sought link)
	↓	
01	=	Indo European Literature (unsought link)
	↓	
011	=	Teutonic Literature (unsought link)
	↓	
0111	=	English literature (Sought link)
	↓	
0111,	=	(false link)
	↓	
0111,6	=	Essays in English literature (Sought link)
	↓	
0111,6m65	=	Eassay of A.G. Gardiner (Sought link)
	↓	
0111,3M65x	=	Collection of Essay of A.G. Gardiner (unsought link).

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ (Class Index Entries)

	Gardiner (AG), (ie Alpha Of The Plough, Pseud),
	For document in this class and its subdivisions, see the classified part of the cataiogues under the class number 0111,6M65

	ESSAYS ENGLISH	
	Class	For documents .... Number O111,6

	ENGLISH LITERATURE	
	Class	For documents .... Number O111

	LITERATURE	
	Class	For documents .... Number O

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियों (Book Index Entries)

	GRAINDER (AG), (ie Alpha Of The Plough, Pseud),	
	Essays of today.	0111,6M65x N85

	UNIVERSITY OF MANACHESTER, PUBLICATION SERIES.	
	5	Gardiner (AG), (ie Alpha Of The Plough, Pseud): Essays of today. 0111, 6M65x N85

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि (Cross Reference Index Entry)

छद्मनाम-वास्तविक नाम प्रविष्टि (Pseudonym-real Name Entry)

	ALPHA OF THE PLOUGH, pseudo	
		<u>See</u> Gardiner (AG) (1865).

टिप्पणी. छद्मनाम, व्यक्तिगत नाम जैसा नहीं लगता है। अत: इसको छद्मनाम के सामान्य क्रम में बिना उलट-पलट के अंकित किया गया है।

ग्रन्थमाला-सम्पादक प्रविष्टि (Editor-of-series Entry)

	FREEMAN (cathelean),Ed.	
		<u>See</u> UNIVERSITY OF MANACHESTERS, PUBLICATION SERIES.

मुखपृष्ठ - 4

(छद्‍यनामधारी लेखक, वास्तविक नाम बाह्य स्रोतों से ज्ञात)

THE WORKING OF DIARCHY IN INDIA

1919-1928

BY

Kerala Putra

Bombay

D.b. Taraporewala sons & co.

1928

Other Information

Call Number: V44:2'N3 N28 Accession Number: 48724

Note: the real name of the author is Prof K.M panikar as know from rererence books. He has written most of his book under his real name.

मुख्य प्रविष्टियाँ (Main Entry)

	v44:2 '	N3 N28
	48724	KERALA PUTRA, psued [ie K M Panikar]. Working of diarchy in India, 1919-1928.

टिप्पणी: 1. शीर्षक के वरण के लिये नियमांक MD423 प्रायोज्य है क्योंकि वास्तविक नाम कृति के बाहर से लाया गया है।

2. ग्रन्थकार का छद्मनाम, व्यक्तिगतनाम जैसा दृष्टिगोचर नहीं होता। अत: उसको उसके प्राकृतिक क्रम में उपकल्पित किया गया है

संकेतन (Tracing)

	Contitution, India, History. India, History. History. Kerala Puitra, Pseud, [ie K M Panikar]. Dyarchy in India (Working of-). Panikar (K M)

श्रृंखला (Chain)

V = History (Soughyt link)

↓

V4 = History of ASisa (Unsought link)

↓

V44 = History of India (Sought link)

↓

V44: = (False link)

↓

V44:2 = Constitutional History of India (Sought link

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ (Class Index Entries)

		CONSTITUTION, INDIA, HISTORY.
		For documents in this Class and its Subdivision, See the Classified Partr of the catalogue under the Class Number V44.2

		INDIA, HISTORY.
		For documents.. Class Number V 44

	HISTORY.	
	Class	For documents.. Number V

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ (Book Index Entries)

लेखक निर्देशी प्रविष्टि (Author Index Entry)

	KERALA PUTRA, Psued [ie KM Panikar]	
		Working of diarchy in India. 7V44:2 N28

आख्या निर्देशी प्रविष्टि (Title Index Entry)

	DYARCHY IN INDIA (Working of-).	
		By Kerala Putra, Pseud, [i e K M Panikar]. V44:2 N28

टिप्पणी: 1. क्योंकि आख्या में व्यक्तिवाचक संज्ञा. 'India' एवं एक अनोखा शब्द 'Dyarchy' है अत: आख्या प्रविष्टि निर्मित की गई है।

2. आख्या में 'Dyarchy in India' शब्दों में प्रत्यास्मरण-मन (Recall value) माना गया है। अत: उन शब्दों को प्रविष्टि पद बनाया गया है।

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि (Cross Reference Index Entry)

छद्मनाम-वास्तविक नाम प्रविष्टि (Pseudonym- Real- Name Entry)

	PANIKAR (K M).	
		<u>See also</u> KERALA PUTRA, <u>Pseud.</u>

टिप्पणी : उपरोक्त प्रविष्टि में निर्देशात्मक शब्द. 'See also' इसलिये प्रयुक्त किये गये है क्योंकि यह माना गया है कि इनके वास्तविक नामान्तर्गत प्रकाशित कृतियाँ भी ग्रन्थालय में उपलब्ध हैं।

मुख्यपृष्ठ - 5

(सहछद्मनामान्तर्गत प्रकाशित कृति Work published under Koint Pseudonym)

THE BOOK OF MYSTRy STORIES

By

Ellery Queen

1987

PAG Books Ltd.

London

Other Information

Call Number: O111, 3M89x N57 Accession Number: 17825

Note: Ellery Queen is jthe joint pseudonym of 'Frederick Danny and Manfred Bannington Lee' the information has been found out from outside the book.

मुख्य प्रविष्टि (Main Entry)

	O111, 3M89x N57	
		QUEEN (Ellery), Pseud, [i e Frederick Danny and Manfred Bannington Lee]. Book of mystry stories.
	17825	

टिप्पणी :

1. क्योंकि कृति दो सहलेखकों द्वारा एक संयुक्त छद्मनाम के अन्तर्गत रचित है। अत: नियमांक MD424 प्रायोज्य है।
2. लेखकों के वास्तविक नाम कृति के बाहर से लाये गये हैं। अत: वर्गाकार कोष्ठक में बन्द करके अंकित किये गये हैं।

संकेत (Tracing)

	Queen (Ellery), Pseud, [ie Frederick Danny and Manfred Bannington Lee], Fiction. Fiction, English. Litereature. Queen (Ellery), Pseud, [ie Frederick Danny and Manfred Bannington Lee], Danny (Frederick) and Lee (Manfred Bannington). Lee (Manfred Bannington) and Danny (Frederick).

श्रृंखला (Chain)

O = History (Sought link)

↓

O1 = IndoEuropean Literature (Unsought link)

↓

O11	=	Teutonic Literature (Unsought link)
	↓	
O111	=	(English Literature (Sought Link)
	↓	
O111,	=	(False link)
	↓	
O111,3	=	Fiction in Ellery Literature (Sought Link)
	↓	
O111,3M89	=	Fiction in Ellery Queen (Sought Link)
	↓	
O111,3M62x	=	Collection of Fiction of Ellery Queen (Unsought link).

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ (Class Index Entries)

	QUEEN (Ellery), <u>Pseud</u>, (ie Frederick Danny and Manfred
	Bannington Lee) For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Pard of the catalogue under the Class Number O111, 3M89

	FICTION, ENGLISH.
	For documents.. Class Number O111,3

	ENGLISH, LITERATURE.	
	Class	For documents.. Number O111

	LITERATURE.	
	Class	For documents.. Number O

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि (Book Index Entry)

	QUEEN (Ellery), Pseud, [ie Frederick Danny and Manfred	
	Bannington Lee]	Book of mystry stories. 0111, 3m89x N57

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि (Cross Reference Index Entries)

	DANNY (Frederick) and LEE (Manfred Bannington).	
		See QUEEN (Ellery), Pseud.

	LEE (Manfred Bannington) and DANNY (Frederick).	
		See QUEEN (Ellery), Pseud.

मुख्यपृष्ठ - 6

(छद्‌यनामधारी के लेखक, वास्तविक नाम बाहय स्त्रोत से ज्ञातव्य)

GEORGE ELIOT'S

LIFE AS RELATED IN HER LETTERS AND JOURNALS

Edited and Arranged by her Husband

J.W. Cross

Published by

Dodd Mead & Co

New York

1948

Other Information

Call Number: 0111, 3M19w, 1 N48 Accession Number: 17825

Note: The real name of the author is Mary Ann Evans. Aftre her marriage she became Know as Mary Ann Evans Cross. SHE HAS NOT WRITTEN ANY BOOK UNDER HER REAL NAME. The information is given in the book itself.

मुख्य प्रविष्टि (Main Entry)

	0111, 3	M19w,1 N48
	Cross. 17825	ELIOT (George), <u>Pseud</u>, (I e Mary Ann Evans Cross). Life as related in her latters and journals. Ed by JW

टिप्पणियाँ : 1. लेखक का नाम आख्या में समाविष्ट है, वहां से पृथक किया गया है।

2. नियमानुसार लेखक के नाम की आख्या अनुच्छेद में पुनरावृत्ति नहीं हो सकती। परन्तु उसके हटा देने में आख्या का अर्थ स्पष्ट नहीं रह जाता और भ्रमपूर्ण हो जाता है। अत: सूचीकार ने शब्द 'Her' जोड दिया है।

संकेत (Traching)

	Autobiography Eliot (George), <u>Pseud,</u> (ie Mary Ann Evans Cross). Biography, Eliot (George), <u>Pseud,</u> (ie Mary Ann Evans Cross). Eliot (George), <u>Pseud,</u> (ie Mary Ann Evans Cross), Fiction Fiction, English. English, Literature. Literature. Eliot (George), <u>Pseud,</u> (ie Mary Ann Evans Cross). Cross (J W), Ed. Cross (Mary Ann Evans) Evans (Mary Ann Evans)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ (Class Index Entries)

	AUTOBIOGRAPHY, ELIOT (George), Pseud, (I e Mary
	Ann Evans Cross). For Documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number O111,3m 19w,1

	BIOGRAPHY, ELIOT (George), Pseud, (I e Mary Ann
	Evans Cross). For documents .... Class Number O111,3M19w

	ELIOT (George), Pseud, (I e Mary Ann Evans Cross).
	For documents .... Class Number O111,3M19

	FICTION, ENGLISH
	For documents .... Class Number O111,3

	ENGLISH, LITERATURE.	
	Class	For documents .... Number O111

	LITERATURE.	
	Class	For documents .... Number O

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ (Book Index Entries)

लेखक निर्देशी प्रविष्टि (Author Index Entry)

	ELIOT	(George), Pseud, (i e Mary Ann Evans Cross).
		Life as related in her letters and journals. 0111,3M19w,1 N48

सहकारक निर्देशी प्रविष्टि (Collaborator Entry)

	CROSS	(J W), Ed.
	Life as	Eliot (George), Pseud, (i e Mary Ann Evans Cross). related in her letters and journals. O111,3M19w,1 N48

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियाँ (Cross Refernece Index Entries)

	CROSS (Mary Ann Evans)(1819)	
		See ELIOT (George), Pseud.

	CROSS (Mary Ann)(1819)	
		See ELIOT (George), Pseud.

5. अभ्यास के लिये मुखपृष्ठ (Title Page for Practice)

1. Collected Veraa/of/Lewis Cerroll/London/Macmilan/1933/

   Call Number: 0111, 1M32x N33 Accession Number: 15738

   Note: The real name of the author is Charles Ludwig Dodgson' given in yhe book itself.

2. Classics if Indian Literature Series; no. 12/Edited by Jwala Prased and R.K. Bhambri The Gift of a Cow/A Translation of Hindi Novel Godan/Premchand/Translated by J.C. Tandon and Kirpal Singh/ Bombay/World Press/ 1968.

   Call Number: 0152, M8021 N68 Accession Number : 44245

   Note: The real name of the author is 'Dhanpat arai' but he has not written any book under his real name. He has written some books in Urdu under the pseudonym 'Nawab Rai'.

3. Crime Club Series; no. 26. /Editor: Morley Lawrence/Footsteps Behind Me/By Anthony Gilbert/London/Collins Clear Type Press/1965.

Call Number: 0111, 3M09,22 N65 Accessain Number : 39275

Note: On the back of the title page, the real name of the author is givcen as Lucyt Malleson, but the author is well Known by his pseudonym.

4. Social Structure and Personality/By/A Psychologist (Arthur Trace)/ London/John <Murray/1963.

   Call Number : S:70gY N65 Accession Number : 92735

   Note : The Pseudonym of the author is given in prominent manner. The real nam, e has been added in bracket in subordinated manner.

6. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची (Bibliography)

1. सूद (एस पी) : सूचीकरण प्रक्रिया. जयपुर, आर.बी.एस.ए., 1998.
2. वर्मा (ए के) : क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण. रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999
3. Krishna Kumar : An introduction to cataloguing practice. New Delhi, Vikas, 1996.
4. Ranganathan (S R): Classified catalogue code ets. Ed 5. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.
5. Ranganathan (S R): Cataloguing practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1994.

इकाई - 5: सहकारक के अन्तर्गत प्रविष्ट वाले ग्रन्थों का सूचीकरण (Cataloguing of Books Entered under Collaborator)

उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य हैं : -

1. सहकारक की अवधारणा से परिचित होना,
2. उन परिस्थितियों से परिचित होना जिनमें किसी कृति को सहकारक के अन्तर्गत प्रविष्टि किया जाता है,
3. सहकारक के अन्तर्गत कृति को प्रविष्ट करने की मुख्य समस्याओं की जानकारी,
4. कृतियों के क्रियात्मक सूचीकरण से परिभाषित करना।

संरचना

1. विषय प्रवेश
2. सहकारक से तात्पर्य
3. सहकारक के अन्तर्गत मुख्य प्रविष्टि
4. सहकारक के अन्तर्गत प्रविष्ट होने वाली कृतियों का सूचीकरण
5. सहकारक के अन्तर्गत प्रविष्ट होने वाली कृतियों की प्रविष्टियाँ
6. अभ्यास के लिये मुखपृष्ठ
7. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची

1. विषय प्रवेश

अनेक ऐसी कृतियाँ प्रकाशित होती हैं जिन पर उनके रचियतओं के नाम अंकित नहीं होते। ऐसी कृतियों को अज्ञात लेखक (Anonymous) की कृतियाँ कहते हैं। यह तो निश्चित है कि किसी भी कृति का निर्माण बिना लेखक के नहीं हो सकता। वस्तुत: सभी कृतियाँ मानव मस्तिष्क की उत्पत्ति हैं। होता यह है कि उनके रचियता उन पर अपना नाम अंकित नहीं करते। छानबीन के द्वारा ऐसी अनेक कृतियों के सृजनकर्ताओं के नाम ज्ञात भी कर लिये जाते हैं। परन्तु वह नाम उनकी कृतियों पर अंकित नहीं किये जा सकते। अत: निर्धार्यता के उपसूत्र (Canon of Ascertainability) के अनुसार उनके नाम उन ग्रन्थों की मुख्य प्रविष्टियों के शीर्षक अनुच्छेद में भी अंकित नहीं किये जा सकते।

इसके अतिरिक्त कुछ ग्रन्थों का निर्माण स्वतंत्र निबन्धों, लेखों, कविताओं, कहानियों आदि को संकलित करके किया जाता है। उन लेखों, निबन्धों, कहानियों आदि के अपने- अपने रचयिता होते हैं। परन्तु प्रत्येक रचयिता केवल अपने अंशदान से संबंधित होता है। समूचे ग्रन्थ

से संबंधित नहीं होता। अत: उनके नाम मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक अनुच्छेद में अंकित नहीं किये जा सकते।

समस्या यह आती है कि ऐसे ग्रन्थों की मुख्य प्रविष्टियों के शीर्षक अनुच्छेद में क्या अंकित किया जाये? इसके दो ही विकल्प हैं - 1. उन ग्रन्थों को यदि उनके मुखपृष्ठ पर सहकारक/ सहकारकों के नाम अंकित हैं तो उनके अन्तर्गत प्रविष्ट किया जाये, अथवा 2. उनकी अपनी आख्याओं के अन्तर्गत प्रविष्ट किया जाये। सीसीसी के अनुसार प्रथम विकल्प को वरीयता प्रदान की गई है। सहकारक /सहकारकों के नाम अंकित न होने पर आख्या के अन्तर्गत प्रविष्ट करने का प्रावधान हैं। अपवाद स्वरूप सहकारक/ सहकारकों के नाम अंकित होने पर भी ग्रन्थ को आख्या के अन्तर्गत प्रविष्ट किया जाता है इनकी चर्चा अन्यत्र की जायेगी।

इस इकाई में हम केवल उन ग्रन्थों की चर्चा करेंगे जो सहकारक के अन्तर्गत प्रविष्ट किये जाते हैं

2. सहकारक से तात्पर्य (Meaning of Collaborator)

सीसीसी में सहकारक को इस प्रकार परिभाषित किया गया है, "वह व्यक्ति या समष्टि निकाय जो किसी कृति और अथवा उसके लेखक से द्वितीयात्मक क्षमता में सम्बद्ध होता है जो लेखकत्व के समकक्ष नहीं होती- उदाहरणार्थ, निदेशक (Director), मार्गदर्शक (Guide), सहायक (Assistant), व्याख्याकार (Commentator), चित्रकार (Illustrator), तक्षक (Engeaver), अनुवादक (Translator), संशोधक (Reviser), सम्पादक (Editor), प्रतिवेदक (Reporter), परिचय अथवा प्रस्तावना लेखक, संक्षेपक (Epitomiser), रूपान्तरकार (Adapter), लिब्रेटिस्ट (Liberatist), संगीतात्मक कृति में शब्दकार, चित्र ग्रन्थ का शब्दकार।" (सीसीसी पृ. 131)

3. सहकारक के अन्तर्गत मुख्य प्रविष्टि (Main under Collaborator)

अनेक ग्रन्थों में लेखक के नाम के साथ सहकारक /सहकारकों के नाम अंकित रहते हैं। ऐसे अनेक प्रकरण पिछली इकाइयों में आ चुके हँ। उन ग्रन्थों को उनके अपने-अपने लेखकों के अन्तर्गत प्रविष्ट किया जाता है। सहकारक के अन्तर्गत केवल उन ग्रन्थों को प्रविष्ट किया जाता है जिनके मुखपृष्ठों पर उनके लेखकों के नाम अंकित नहीं होते। अपवाद स्वरूप ऐसी कृतियों में सहकारक का नाम अंकित होने पर भी आख्या के अन्तर्गत मुख्य प्रविष्टि निर्मित होती है।

सहकारक का नाम मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक अनुच्छेद में देने से सहकारक, लेखक नहीं हो जाता। उसका नाम मुख्य प्रविष्टि में शीर्षक अनुच्छेद में सुविधा अथवा विवशता की दृष्टि से अंकित किया जाता है। यही कारण है कि उनके नाम के साथ उनके कार्यो को निरुपित करने वाले विवरणात्मक पद जैसे 'Ed' का उपयोग किया जाता है जो लेखक के नाम के साथ नहीं किया जाता। हमारा अनुभव है कि सामान्यत: ऐसे ग्रन्थों की खोज, पाठक सूची में सहकारक /सहकारकों के नाम के अन्तर्गत ही करते है।

4. सहकारक के अन्तर्गत प्रविष्ट होने वाली कृतियों का सूचीकरण के नियम (Cataloguing Rules of Books to be Entered under Copllaborator)

एकल सहकारक (Single Collaborator)

यदि ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर केवल एक सहकारक का नाम अंकित हो तो सीसीसी का नियमांक MD51 प्रायोज्य होता है जो अग्रानुसार है, 'यदि मुखपृष्ठ पर व्यक्तिगत लेखक अथावा सहव्यक्तिगत लेखकों के नाम अंकित नहीं होते अथवा समष्टि लेखकत्व इंगित नहीं होता अथवा लेखक विवरण में छद्‌यनामधारी लेखक या लेखकों के नाम नहीं दिये गये हैं बल्कि सहकारक का नाम दिया है तो उस नाम को शीर्षक के रूप में प्रयुक्त किया जायेगा और तत्पश्चात उस व्यक्ति की भूमिका को इंगित करने वाले विवरणात्मक पद को जोड़ दिया जायेगा।"

उदाहरणार्थ :

AGRAWAL (Dhirendra Kumar), <u>Tr.</u>

RADHAKRISHNAN (Sarvapalli), <u>Comm.</u>

RANGANATHAN (S R), <u>Ed</u>

अनेक प्रकार के सहकारक (Many Kinds of Collaborators)

यदि ग्रन्थ में कई प्रकार के सहकारको के नाम अंकित हों तो सीसीसी का नियमांक्र Md52 प्रायोज्य होता है जो अग्रानुसार है, "यदि मुखपृष्ठ पर दो या अधिक प्रकार के सहकारकों के नाम अंकित हों .... तो एक और केवल एक प्रकार के नाम को शीर्षक हेतु चुना जायेगा। उस नाम को चुना जायेगा जिसका योगदान अन्यों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है।"

उदाहरणार्थ यदि मुखपृष्ठ पर व्याख्याकार और अनुवादक दोनों के नाम अंकित हैं तो व्याख्याकार का योगदान, अनुवादक की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण माना जायेगा। अत: उसी के नाम को शीर्षक हेतु चुना जायेगा।

व्याख्याकार /भाष्यकार (Commentator)

सीसीसी में इस प्रसंग में एक विशिष्ट नियमाक MD53 का प्रावधान किया गया है जो अग्रानुसार है, "सम्पूर्ण मूल पाठ सहित भाष्यों के प्रकरण में, यह स्मरण रखा चाहिये कि यदि भाष्य प्राथमिक महत्व का है तो नियमांक (जो द्‌वितीय इकाई में उद्धरित किया गया है) की अवहेलना करते हुए व्याख्याकार /भाष्यकार का नाम शीर्षक में प्रयुक्त करना चाहिये।"

सह सहकारक (Joint Collaborator)

यदि एक ही श्रेणी में एक से अधिक सहकारको के नाम मुखपृष्ठ पर अंकित हों तो सीसीसी नियमांक MD54 प्रायोज्य होता है जो अग्रानुसार है, "यदि मुखपृष्ठ पर अनुच्छेद MD51 और उसके उपविभागों के अनुसरण में शीर्षक में प्रयुक्त होने वाली श्रेणी में दो या

अधिक नाम हैं तो शीर्षक का लेखन नियमांक MD3 और उसके उपविभागों (अर्थात सहलेखकत्व की कृतियों) के आधार पर किया जायेगा।"

5. सहकारक के अन्तर्गत प्रविष्ट होने वाली कृतियों का सूचीकरण (Cataloguing of Books to be Entered under Collaborator)

मुखपृष्ठ - 1

(एकल सहकारक)

SEVEN CENTURIES OF POETRY

CHAUCER TO DYLAN THOMAS

Edited By

A . N. Jeffares

New Edition

London

Longmans, Green & Co. Ltd

1961

Other Information

Call Number 0111, 1xN1 N61 Accession Number : 14528

मुख्य प्रविष्टि (Main Entry)

	0111, 1xN1 N61	
		JEFFARES (A N), <u>Ed</u>
		Saven Centuries of poetry : Chaucer to Dyian Thomas.
	New ed.	
	14528	

टिप्पणी :

1. ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर एक सहकारक का नाम अंकित है।अत: नियमांक MD51 प्रायोज्य है।

2. संस्करण का विशिष्ट नाम है "New Edition"। इस कारण उसको अंकित कर दिया गया है

संकेत (Tracing)

Poetry, English. English, Literature. Literature. Jeffares (A N), Ed.

श्रृंखला (Chain)

0	=	Literature (Sought link)
	↓	
01	=	Indo European Literature (Unsought link)
	↓	
011	=	Teutonic Literature (Unsought link)
	↓	
0111	=	English Literature (Sought link)
	↓	
0111,	=	(False link)
	↓	
0111,1x	=	Collection of English Poetry (Unsought link)
	↓	
0111,1xN1	=	(False link)

वर्ग निदेंशी प्रविष्टियाँ (Class Index Entries)

	POETR, ENGLISH.	
	For document in this Class and its Subdivisions, see थे Classified Part of the Catalogue under the Class Number 0111,1	

	ENGLISH, LITERATURE	
	For documens in this Clas nsd its Subdivision, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number O111	

	LITERATURE.	
	For documents .... Class Number O	

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि (Book Index Entry)

सहकारक निदेंशी प्रविष्टि (Collaborator Index Entry)

	JEFFARES (A N), Ed,	
		Seven Centuries of English poetry. New ed. O111, 1xN1 N61

मुखपृष्ठ - 2

(विभिन्न प्रकार के सहकारक)

MORE STORIES FROM THE ARBIAN NIGHTS

Translated by

Sir Richard Burton

Edited and Arraged with an Introduction by

Julian Franklyn

Illustrated by

McDonald Sinclair

London

Hamilton & Co.

1989

Other information

Call number : O28,3x N89 Accesson Number :197281

मुख्य प्रविष्टि (Main Entry)

	O28,3x	N89
		BURTON (Richard), Tr. More stories from the Arbian nights. Ed by Julian Franklyn ; ill by McDonald Sinculair. 1973281

टिप्पणी : ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर कई प्रकार के सहकारक अंकित हैं। अत: नियमांक MD52 प्रायोज्य है। उसके अनुसार अनुवादक का योगदान सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानते हुए उसको शीर्षक अनुच्छेद में अंकित किया गया है। शेष श्रेणी के सहकारकों को आख्या अनुच्छेद में अंकित कर दिया गया है।

संकेत (Tracing)

	Fiction, Arabic. Arabic, Literature. Literature Burton (Richard), Tr. Franklyn (Julian), Ed. Sinclair (McDonald), III Arabian nights (More stories from the-).

श्रृंखला (Chain)

O	=	Literature (Sought link)
	↓	
O2	=	Semitic Literature (Unsought link)
	↓	
O28	=	Arabic Literature (Sought link)
	↓	
O28,	=	(False link)
	↓	
O28,3	=	Arabic Fiction (Sought link)
	↓	
O28,3x	=	Works of Arabic Fiction (Unsought link)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियां (Class Index Entries)

	WORKS, FICTION, ARABIC.
	For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number O28,x

	FICTION, ARABIC.	
	Class	For documents .... Number O28,3

	ARABIC, LITERATURE.	
	Class	For documents .... Number O28

	LITERATURE.	
	Class	For documents .... Number O

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ (Book Index Entries)

सहकारक निर्देशी प्रविष्टियाँ (Collaborator Index Entries)

	BURTON (Richard), Tr.	
		More stories from the Arabian nights. O28,3x N89

	FRANKLY (Julian), Ed.	
		Burton, Tr.: More stories from the Arabian nights. O28,3x N89

	SINCLAIR (McDonald), III	
		Burton, Tr : More stories from the Arabian nights. O28,3x N89

आख्या निर्देशी प्रविष्टि (Title Index Entry)

	ARABIAN NIGHTS (More stories form the -).	
		By Burton, Tr. O28,3x N89

टिप्पणी :

1. विषय अबोधक आख्या (Fanciful title) और व्यक्तिवाचक विशेषण 'Arabian nights' होने के कारण आख्या प्रविष्टि निर्मित की गई है।
2. 'Arabian nights' में सर्वाधिक प्रत्यास्मरण-मान (Recall value) निहित होने के कारण उसको प्रविष्टि पद बनाया गया है।

मुखपृष्ठ - 3

(भाष्याकार)

SRIMAD BHAGVAD GITA

With an Introductory Essay, Sanskrit Text

English Translation and Notes

By

S. Radhakrishanan

1954

Blackie & Sons (India) Ltd.

Bombay Calcutta Madras

Other information

Call Number: R68,6:gN54 Accession Number : 41578

मुख्य प्रविष्टि (Main Entry)

	R68,6:g N54	
	English 41578	RADHAKRISHNAN (Sarvapalli), Comm. Bhagvad Gita with an introductory essay, Sanskrit text, translation and notes.

टिप्पणी:

1. भाष्य को अधिक महत्वपूर्ण माना गया है। अत: नियमांक MD53 प्रायोज्य है। अत: भाष्यकार का नाम शीर्षक अनुच्छेद में अंकित किया गया है।
2. आख्या में से आरम्भिक सम्मानसूचक शब्द ‘Shrimad' हटा दिया गया है।

संकेत (Tracing)

	Criticism, Bhagavad gita, Dvaita. Bhagvad gita, Dvaita. Dvaita, Indian philosophy. Indian Philosophy. Philosophy. Radhakrishnan (Sarvapalli), Comm.

श्रृंखला (Chain)

R = Philosophy (Souht (link)

↓

R6 = Indian philosophy (Sought link)

↓

R68 = Dvaita philosophy (Sought link)

↓

R68, = (False link)

↓

R68,6: = Bhagvad Gita in Dvaita philosophy (Sought link)

↓

R68, 6: = (False link)

↓

R68, 6:g = Criticism of Bhagvad Gita in Dvaita Philosophy (Sought link)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ (Class Index Entries)

CRITICISM, BHAGVAD GITA, DVAITA.

For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number

R68, 6:g

BHAGVAD GITA, DVAITA.

For documents……………………………………………………………………………………….

Class Number

R68,6

DVAITA, INDIAN PHILOSOPHY.

For documents……………………………………………………………………………………….

Class Number

R68

INDIAN PHILOSOPHY.

For documents……………………………………………………………………………………….

Class Number

R6

	PHILOSOPHY.	
	Class Number	For documents…………………………………………………………………………………. R

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ (Book Index Entries)

सहकारक निर्देशी प्रविष्टियां (Collaborator Index Entries)

	RADHAKRISHNAN (Sarvapalli), Comm.	
		Bhagvad gita. R66,6:g N54

मुखपृष्ठ -4

(विभिन्न प्रकार के सहकारक)

COMBUSTION PROCESS

Edited by

B. lewis

&

R.N. Peas

Translated from German by

W. Burton

Student Edition

Princeton, N.J.

Princeton University Press

1956

Other Information

Half title page: Chemical studies series; no. 8/Edited by Hugh L. Dryden
Call Number: E2131 N56 Accession Number: 27958

मुख्य प्रविष्टि (Main Entry)

	E: 2131 N56	
	Butorn. 27958	LEWIS (B) and PEAS (R N), Ed. Combustion process. Student ed. Tr from German by W (Chemical studies series. Ed by Hung L Dryden. 8)

टिप्पणियाँ : 1. नियमांक MD52 प्रायोज्य है जिसके अनुसरण में दो प्रकार के सहकारक होने के कारण सम्पादक श्रेणी को मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक हेतु चुना गया है। सम्पादकों का योगदान अनुवादक की अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण माना गया है। अनुवादक का नाम आख्या अनुच्छेद में अंकित किया गया है।

2. नियमांक MD54 अनुसरण में दोनों सम्पादकों के नाम मुख्य प्रविष्टि शीर्षक अनुच्छेद अंकित किये गये हैं।
3. मूल भाषा का नाम मुखपृष्ठ पर अंकित होने के कारण, आख्या अनुच्छेद में अनुवादक के नाम के साथ अंकित किया गया है।
4. संस्करण का एक विशिष्ट नाम होने के कारण, उसको भी आख्या अनुच्छेद में अंकित किया गया है।

संकेत (Tracing)

	Combustion, Physical chemistry. Chemical combination and action, Physical chemistry. Lewis (B) and Peas (R N), Ed. Peas(R N) and Lewis (B), Ed. Burton (W), Tr. Chemical studies series. Dryden (Hugh), Ed.

श्रृंखला (Chain)

E = Chemistry (Sought link)

↓

E: = (False link)

↓

E:2 = Physical Chemistry (Sought link)

↓

E:21 = Chemical Combination and Action in Physical Chemistry (Sought link)

↓

E:213 = Chemical Kinetic in Physical Chemistry (Sought link)

↓

E:2131 = Combustion in Physical Chemistry (Sought link)

↓

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ (Class Index Entries)

	COMBUSTION, PHYSICAL CHEMISTRY.	
	For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number E:2131	

	CHEMICAL KINETICS, PHYSICAL CHEMISTRY.	
	For documents.. Class Number E:213	

	CHEMICAL COMBINATION AND ACTION, PHYSICAL	
	CHEMISTRY.	
		For documents...
	Class	Number
		E:21

	PHYSICAL CHEMISTRY.	
		For documents...
	Class	Number
		E:2

	CHEMISTRY.	
		For documents...
	Class	Number
		E

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ (Book Index Entries)

सहकारक निर्देशी प्रविष्टियाँ (Collaborator Index Entries)

	LEWIS (B) and PEAS (R N), Ed.	
		Combustion process. Student ed. E: 2131 N56E

	PEAS	(R N) and LEWIS (B), Ed.
		Combustion process. Student ed. E:2131 N56

	BURTON (W), Tr.	
		Lewis and Peas, Ed : Combustion process Student
	ed.	
		E:2131 N56

ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टियाँ (Series Index Entries)

	CHEMICAL STUDIES SERIES.	
	8	Lewis and Peas, Ed : Combustion process. Student
	ed.	
		E:2131 N56

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि (Cross Reference Index Entry)

ग्रन्थमाला-सम्पादक प्रविष्टि (Editor of Series Entry)

	DRYDEN (Hung L), Ed.	
		See
		CHEMICAL STUDIES SERIES.

मुखपृष्ठ - 5

(एक प्रकार के दो से अधिक सहकारक)

READINGS IN FRENCH GOVERNMENT

Editors :

William Watson

Alfred Tulk

J. D. Reynold

Herbert Busemann

Translated from French by

Dennis Troth

1978

London

Jhon Gregor & Co.

Other Information

Half title page: Gregor critical studies; no. 16/Editors: William Steiner & Herbert Spencer

Call Number : W 6.53 N78 Accession Number : 14279

मुख्य प्रविष्टि (Main Entry)

	W6.53	N78
		WATSON (William) and others, Ed. Readings in French government. Tr from French by Dennis Troth. (Gregor critical studies. Ed by William Steiner and Herbert Spencer. 16). 14279

टिप्पणियाँ 1. इससे पूर्ववर्ती मुखपृष्ठ की भांति नियमांक MD52 प्रायोज्य है जिसके अनुसरण में दो प्रकार के सहकारक होने के कारण सम्पादक श्रेणी को मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक हेतु चुना गया है क्योंकि सम्पादकों का योगदान अनुवादक की अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण माना गया है। अनुवादक का नाम आख्या अनुच्छेद में अंकित किया गया है।

2. नियमांक MD54 के अनुसरण में केवल प्रथमांकित सम्पादक का नाम मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक अनुच्छेद में किया गया है और तत्पश्चात् 'and others' जोड़ दिये गये हैं।
3. मूल भाषा का नाम मुखपृष्ठ पर अंकित होने के कारण, आख्या अनुच्छेद में अनुवादक के नाम के अंकित किया गया है।

संकेत (Tracing)

France, Democracy Europe, Democracy. Democracy, Political Science. Political science. Watson (William) and others, Ed. Troth (Dennis), Tr. French government (Readings in -). Gregor critical studies. Steiner (William) and Spencer (Herbert), Ed. Spencer (Herbert) and Steiner (William), Ed.

श्रृंखला (Chain)

W = Political Science(Sought link)

↓

W6 = Democracy in Political Science (Sought link)

↓

W6. = (False link)

↓

W6.5 = Democracy in Europe (Sought link)

↓

W6.53 = Democracy in France (sought link)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ (Class Index Entries)

	FRANCE, DEMOCRACY.	
	For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number W6.53	

	EUROPE, DEMOCRACY	
	For documents.. Class Number W6.53	

	DEMOCRAC, POLITICAL SCIENCE.	
	For documents.. Class Number W6	

	POLITICAL SCIENCE.	
	For documents.. Class Number W	

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ **(Book Index Entries)**

सहकारक निर्देशी प्रविष्टियाँ **(Collaborator Index Entries)**

	WATSON (William) and others, Ed.	
		Readings in French government. W6.53 N78

	TROTH (Dennis), Tr.	
		Watson and others, Ed. Readings in French government. W6.53 N78

आख्या निर्देशी प्रविष्टि (Title Index Entry)

	FRENCH GOVERNMENT (Readings in-).	
		By Watson and others. Ed. W6.53 N78

टिप्पणी : 1. आख्या में 'French' व्यक्तिवाचक विशेषण होने के कारण आख्या प्रविष्टि निर्मित की गई है।

2. शब्द 'French Government' में सर्वाधिक प्रत्यास्मरण-मान (Recall Value) निहित माना गया है। अत: उसको प्रविष्टि पद बनाया गया है।

ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि (Series Index Entry)

	GREGOR CRITICAL STUDIES.	
	16	Watson and others, Ed. Readings in French government. W6.53 N78

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियाँ (Cross Reference Index Entries)

ग्रन्थमाला-सम्पादक प्रविष्टि (Editor of Series Entry)

	STEINER (Herbert) and Steiner (Willaim), Ed.	
		<u>See</u> GREGOR CRITICAL STUDIES.

	STEINER (William) and STEINER (Herbert), Ed.	
		<u>See</u> GREGOR CRITICAL STUDIES.

6. अभ्यास के लिये मुखपृष्ठ (Title Pages for Practice)

1. The Samaveda/Edited by/ Shri Ram Sharma/ Mathura/Gayatri Prakashan/1960
   Call Number :Q13:2 N60 Accession Number :82319
2. Documentation and its Facets/ (Being a symposium of Seventy Papers by Thirty two Authors) Edited by / S.R. Ranganathan/ Aisa

Publishing House/Bombay Calcutta New Delhi/Madras Lucknow New York London/1963.

Call Number : 2:97 N63 Accession Number : 28725

3. Mysoure Library Association, publication series; no. 2/Library Service for All/Edited by/ S R Ranganathan/ National Research Professor in Library Science/ and/ a Neelameghan/ Professor, Documentation Research and Training Centre/ Published by/ Mysore Library Association/ Banglore-3/1966.

   Call Number : 2 p7N66 Accession Number: 14379

4. Outside Readings in American Government/Editors: /H. Madocom Mcdonald/Wilfred D. Webb/Edward G. Lewis/William L. Straws/Third Ediion/New York/Thomas Y Crowell Co./1993.

   Call Number : W6.73 N83 Accession Number : 14259

5. Twelve short stories/Edited by/Moss Hart/George S. Kaufman/ James Moffat/ Illustrated by Arnold Benett/ New York/ Parrar & Rivichart/1933.

   Call Number : O111,3x N33 Accession Number : 73255

7. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसू`ची (Bibliography)

1. सूद (एस पी) : सूचीकरण प्रक्रिया. जयपुर, आर.बी.एस.ए., 1998.

2. वर्मा (ए के) : क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण. रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999.

3. Krishna Kumar : An introduction to cataloguing practice. New Delhi, Vikas, 1996.

4. Ranganathan (S R): Classified catalogue code etc. Ed t. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.

5. Ranganathan (S R): Cataloguing practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1994.

इकाई - 6: ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण : समष्टि निकाय : शासन (Practical Cataloguing of Books : Corporate Bodies: Government)

उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य हैं : -

1. समष्टि निकाय एवं समष्टि लेखक को परिभाषित करना,

2. समष्टि लेखकत्व के प्रकारों से परिचित कराना,

3. शासन को परिभाषित करना एवं उसके अंगों का परिचय देना,

4. शासन व उसके अंगों के उपकल्पन के नियमों से परिचित कराना।

संरचना

1. विषय प्रवेश
2. समष्टि निकाय एवं समष्टि लेखकत्व की परिभाषा
3. समष्टि लेखक के प्रकार
4. शासन
   - 4.1 शासन की परिभाषा
   - 4.2 शासन के अंग
5. शासन व उसके अंगों का उपकल्पन
   - 5.1 वैधानिक अंग
   - 5.2 शासन प्रमुख
   - 5.3 प्रशासकीय अंग
   - 5.4 उपशीर्षकों का अंतर्वेशन
   - 5.5 अस्थाई अंग
6. सूचिकृत मुखपृष्ठ
7. अभ्यास के लिए मुखपृष्ठ
8. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची

1. विषय प्रवेश (Inroduction)

आधुनिक समय में ग्रन्थालयों में व्यक्तिगत लेखकों की रचनाओं के अतिरिक्त समष्टि लेखकों की रचनायें भी प्रचुर मात्रा में क्रय की जाती हैं। इन ग्रन्थों में मानव के सभी अंगों की प्रामाणिक सूचनायें, सांख्यिकीय आंकड़े आदि होने के कारण ये शोधकर्ताओं के लिये बहुत ही उपयोगी होते हैं। शासकीय प्रकाशन कभी कभी तो विक्रय के लिये उपलब्ध होते हैं तथा कभी-

कभी सीमित वितरण के लिये ग्रन्थालयों के निःशुल्क उपलब्ध होते हैं, जिन्हें पाठकवर्ग मात्र ग्रन्थालयों में ही पाता है।

(इस इकाई में वर्णित सभी नियमाक रंगनाथनकृत क्लासीफाइड केटलॉग कोड तथा तारांकित सभी नियमाक रंगनाथनकृत केटालागिंग प्रेक्टिस में दिये गये हैं।)

2. समष्टि निकाय व समष्टि लेखकत्व की परिभाषा (Definition of Corporate Body and Corporate Author)

ए ए सी आर-2 में समष्टि निकाय को निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया गया है: -

एक संगठन या व्यक्तियों का वह समूह, जो एक विशेष नाम से जाना जाता है तथा एक सत्ता (Entity) के रूप में कार्य करता है अथवा कार्य कर सकता है। समष्टि निकायों की श्रेणियों के उदाहरण हैं- संघ, संस्था, व्यापारिक फर्म, लाभ निरपेक्ष उद्यम, शासन शासकीय संस्थाएं, धार्मिक संस्थायें, स्थानीय चर्च एवं सम्मेलन आदि।

ए ए सी आर-1 के अनुसार जब किसी ग्रन्थ के बौद्धिक या कलात्मक अन्तर्वस्तु की सृष्टि के लिए समष्टि निकाय पूर्णरूपेण उत्तरदायी होता है, तो उसे समष्टि लेखक कहते हैं।

रंगनाथन ने सी सी सी नियमांक के FC2 अन्तर्गत समष्टि निकाय को निम्नलिखित प्रकार परिभाषित किया है-

अर्थ 1 : सामूहिक रूप से प्राय: संयुक्त अथवा संगठित अथवा अनौपचारिक रूप से किसी सामान्य उद्देश्य अथवा किसी सामान्य कार्य के लिए यथा शासकीय, व्यवसायिक, औद्योगिक या सेवा या राजनीतिक कार्य अथवा कोई अन्य कार्य या विचार विनिमय के लिये अथवा सामूहिक विचार अभिव्यक्ति या कथन के लिए मिलने वाले व्यक्ति। उदाहरणार्थ राजस्थान सरकार, चेम्बर ऑफ कामर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, भारतीय ग्रन्थालय सम्मेलन आदि।

अर्थ 2 : सामूहिक रूप से- प्राय: संयुक्त अथवा संगठित अथवा अनौपचारिक रूप से किसी सामान्य उद्देश्य अथवा किसी सामान्य कार्य के लिए यथा शासकीय व्यवसायिक औद्योगिक या सेवा या राजनौतिक कार्य अथवा कोई अन्य कार्य या विचार विनिमय के लिए अथवा सामूहिक विचार अभिव्यक्ति या कथन के लिए आपस में मिलने वाले समष्टि निकाय। उदाहरणार्थ इफ्ला (IFLA) संयुक्त्त राष्ट्र संघ, भारतीय विश्वविद्यालय संघ आदि।

रंगनाथन ने उपर्युक्त परिभाषा में समष्टि निकाय को उसके कार्यों के आधार पर परिभाषित किया है। अर्थ 1 में वर्णित कार्यों को करने वाले व्यक्तियों के समूह को तथा अर्थ 2 में कार्यों को करने वाले समष्टि निकायों के संघों को भी समष्टि निकाय बताया गया है।

रंगनाथन ने समष्टि लेखक को निम्नलिखित प्रकार परिभाषित किया है :

जब ग्रन्थ में निहित विचारों तथा अभिव्यक्ति का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व किसी निष्प्रय अथवा उसके किसी अंग पर हो और किसी व्यक्ति या व्यक्तियों पर निजी रूप से नहीं हो, जो

उसके अंग हैं अथवा इसमें पदासीन हैं अथवा अन्य किसी प्रकार से उससे सम्बन्धित हैं, उसे समष्टि लेखक कहते हैं।

3. समष्टि लेखक के प्रकार (Types of Corporate)

रंगनाथन ने समष्टि लेखक को तीन प्रकार से बांटा है : -

1. शासन (Government)
2. संस्था (Institution)
3. सम्मेलन (Conference)

4. शासन (Government)

4.1 शासन की परिभाषा (Definition of Government)

ऐसे ग्रन्थ, जिनमें अभिव्यक्ति विचारों के लिए अथवा उसका कोई अंग उत्तरदायी हो, को शासकीय प्रकाशन कहा जाता है। शासकीय प्रकाशन कभी-कभी तो विक्रय के लिए उपलब्ध होते हैं तथा कभी-कभी सीमित वितरण (Limited circulation) के लिए निःशुल्क भी उपलब्ध होते हैं। शासकीय प्रकाशनों के मुख्य लक्ष्य निम्नलिखित हैं -

1. ऐसे सभी प्रकाशन जिनमें निहित विचार शासकीय एजेन्सियों के प्रयासों का होता है। परन्तु यह आवश्यक नहीं कि उनका भौतिष्ट्र प्रस्तुतीकरण शासकीय एजेन्सियों द्वारा ही किया जाये।

2. शासकीय एजेन्सियों द्वारा भौतिक रूप से अभिप्रेत कोई भी प्रकाशन जिसको शासकीय प्राधिकार द्वारा स्वीकृति प्राप्त हो तथा उसके प्रकाशन विवरण से अंकित होकर निर्गमित हो।

ए ए सी आर-2 के अनुसार शासन शब्द से समष्टि निकायों- कार्यपालिका, विधायिका तथा न्यायपालिका, एक निश्चित भू-भाग पर आधिपत्य होता है- की सम्पूर्णता का बोध होता है।

रंगनाथन ने सी.सी.सी नियमांक FC22 के अन्तर्गत शासन को निम्नलिखित प्रकार परिभाषित किया है : -

अर्थ 1 : एक निश्चित भूभाग पर समष्टि निकाय का पूर्ण या सीमित संप्रभुता का होना। साधारणतया इसके कार्यकारी विधायी, न्यायिक तथा प्रशासनिक कार्य होते हैं। इसके अन्य कार्यों में सुरक्षा, कराधान, वाणिज्य, जन यातायात, संचार आदि हैं, जो संप्रभुता के आधार पर सीमित होते रहते हैं।

अर्थ 2 : शासन द्वारा प्रदत्त अधिकारों के अन्तर्गत एक निश्चित भूभाग पर एवं निश्चित सीमा पर स्वायत्तता प्राप्त स्थानीय सार्वजनिक प्राधिकारी, जो किसी निश्चित स्थानीय सार्वजनिक क्षेत्र में सेवाओं का नियमन, उन्नयन तथा / अन्य सेवाओं का प्रावधान करता है।

अर्थ 3 : उपर्युक्त परिभाषित अर्थ 1 अथवा 2 के अन्तर्गत शासन के अंग।

4.2 शासन के अंग (Organs of Government)

सीसीसी में शासन के अंगों को दो प्रकारों से बांटा जा सकता है : -

1. स्थाई अंग
2. अस्थाई अंग

स्थाई अंग को पुन: तीन प्रकारों से बांटा जा सकता है : -

1. वैधानिक अंग
2. शासन प्रमुख
3. शासकीय अंग

वैधानिक अंग को पुनः तीन भागों में बांटा गया है :-

1. कार्यपालिका
2. विधायिका
3. न्यायपालिका

5. शासन व उसके अंगों का उपकल्पन (Rendering of Government and its Organs) प

पहले शासन के नाम को बड़े अक्षरों (Capital Letters) में लिखा जाता है, फिर कोमा लगाकर शासन के अंगों को पुन: स्मरणमान के उपसूत्र (Canon of Recall Value) के अनुसार लिखा जाता है।

5.1 वैधानिक अंग : - शासन के वैधानिक अंगों के उपकल्पन में द्वितीय शीर्षक के रूप में अंग का वह नाम जो ग्रन्थालय की भाषा में प्रचलित हो लिखा जाता है।

उदाहरणार्थ

1. INDIA, COUNCIL OF MINISTERS.
2. RAJASTHAN, VIDHAN SABHA
3. INDIA, LOK SABHA
4. UTTER PRADESH, HIGH COURT

5.2 शासन प्रमुख : - शासन प्रमुख के नाम के उपकल्पन में उस पद पर आसीन व्यक्ति का नाम द्वितीय शीर्षक के रूप में व्यष्टिकृत पद के रूप में दिया जाता है।

उदाहरणार्थ

1. RAJASTHAN GOVERNOR (Chenna Reddy)
2. INDIA, PRESIDENT (Rajendra Prasad)
3. INDIA, PRIME MINISTER Rajeev Gandhi)

5.3 प्रशासकीय अंग - प्रशासकीय अंग के नाम को द्वितीय शीर्षक के रूप में पुन: स्मरण मान के उपसूत्र के अनुसार लिखा जाता है।

उदाहरणार्थ

1. GUJRAT, EDUCATION (Ministry of -)
2. INDIA, AGRICULTURE (Ministry of -)

5.4 उपशीर्षकों का अन्तर्वेशन (Interpolation of Sub Headings)

नियमांक JC66 यदि प्रशासनिक विभाग शासन का द्‌वितीय या अन्य अंग हो तथा उसका नाम व्यष्टिकारक न हो और शीर्षक निर्माण में किसी प्रकार की समरूपता पूर्व श्रेणी (Earlier remove) के अंग जोड़े बिना समाप्त न होती हो, तो पूर्ण शासन के नाम व प्रशासनिक विभाग के मध्य ऐसे नाम उपशीर्षक के रूप में अन्तर्वेशित करने चाहिये।

इस प्रकार के कम से कम उपशीर्षक अन्तर्वेशित करने चाहिये। यदि उनकी संख्या दो या अधिक हो तो उन्हें अवरोही क्रमानुसार (Decending hierarchical sequence) अन्तर्वेशित करना चाहिये जैसे Department of Education, Ministry of Education, Government of Maharashtra का उपकल्पन निम्नलिखित प्रकार से होगा -

MAHARASHTRA, EDUCATION (Department-).

उपर्युक्त उदाहरण में Ministry of Education को अन्तर्वेशित करने की आवश्यकता नहीं है।

इसी प्रकार Director of Statistics, Ministry of Agriculture, Government of Rajasthan को निम्नलिखित प्रकार से उपकल्पित किया जायेगा -

RAJASTHAN, ARICULTURE (Minstry of-), STATISTICS (Director of -)

उपर्युक्त उदाहरण में Ministry of Agriculture अन्तर्वेशित करना अनिवार्य है।

5.5 अस्थाई अंग (Temporary Organ)

शासन द्‌वारा समय-समय पर विशेष कार्य व निश्चित अवधि हेतु आयोग (Commission), समिति (Committee), आदि स्थापित किए जाते हैं। समय एवं कार्य की समाप्ति पर यह आयोग, समिति आदि अपना प्रतिवेदन शासन को प्रस्तुत कर भंग हो जाते हैं। ऐसे आयोग व समिति के प्रतिवेदनों को सूचीकृत करने के लिए नियमांक JC7 व उसके उपखण्डों का प्रावधान है।

नियमांक JC7 : शासन के अस्थाई अंग के नाम के प्रविष्टि पद का उपकल्पन नियमांक व उसके उपखण्डों के अनुसार होगा।

नियमांक JC71 : शासन के अस्थाई अंग की अवस्था में उसके स्थापना वर्ष का प्रयोग व्यष्टिकृत पद के रूप में किया जायेगा।

नियमांक JC72 : तदथ आयोग, समिति आदि की अवस्था में उसके अध्यक्ष का नाम वृत्ताकार कोष्ठक में व्यष्टिकृत पद के बाद निम्नलिखित प्रकार से जोड़ा जायेगा : -

1. Chairman पद
2. कोलन (:)

3. सामान्य क्रम में अध्यक्ष के नाम के शब्द

उदाहरणार्थ : 1. INDIA, LIBRARY (Advisory Committee for - ies) (1956) (Chairman : K P Sinha)

2. RAJASTHAN, PAY (Commission) (1968) (Chairman : J S Ranwat).

6. सूचिकृत मुखपृष्ठ (Catalogued Titles)

मुखपृष्ठ- 1

(शासन का वैधानिक अंग)

NATIONAL HEALTH POLICY

LOK SABHA

GOVERNMENT OF INDIA

LOKSABHA SECRETARIAT

NEW DELHI

1985

Other Information

Call No. L:54.44 N 85

Acc. No. 32251

Pages in, 321 P.

Size 22 x 14 cm.

मुख्य प्रविष्टि

	L: 54.44	N 85
		INDIA, LOK SABHA. National health policy.
	32251	

संकेत

India, Preventon of diseases in gernal, Medicine.

Prevention of diseases in general, Medicine.

Public health and hygiene, Medicine.

Medicine.

India, Lok Sabha.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

INDIA, PREVENTION OF DESEASES IN GENERAL, MEDICINE.

For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number L:54.44

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

	PREVENTION OF DESEASES IN GENERAL, MEDICINE.	
	Class	For documents .... Number L:54

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि -3

	PUBLIC HEALTH AND HYGINE, MEDICINE.	
	Class	For documents .... Number L:5

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि -4

	MEDICINE.	
	Class	For documents .... Number L

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि-लेखक

	INDIA, LOK SABHA.	
		National health policy. L:54.44 N85

टिप्पणी

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का उपकल्पन वैधानिक अंग के उपकल्पन के नियम के अनुसार किया गया है।
2. इतर प्रविष्टियाँ-वर्ग निर्देशो एवं लेखक निर्देशी प्रविष्टियां नियमानुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ- 2

(शासन का वैधानिक अंग एवं दो उपअंग)

UNITED STATES, CONGRESS,
JOINT ECONOMIC COMMITTEE
SUBCOMMITTEE ON FISCAL POLICY

The Federal Budget, Inflation and
Full Emploment

WASHINGTON,
U.S. Government Printing Office
1970

Other information

Call No. X71:9915.73 N70
Acc. No. 15973
Size21.5cm.

मुख्य प्रविष्टि

	X71:9915.73 N70	
	UNITED STATES, CONGRESS, FISCAL POLICY (Subcommittee on -) 15973	

संकेत

	United states, full employment, Labour market. Full employment, Labour market. Labour market, personnel management, personal management, Budget. Budget, public finance. Public finace, Economics. Economics. United States, Congress, Fiscal Policy (Subocomittee on-). Labour problems.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	UNITED STATES, FULL EMPLOYMENT,
	LABOURMARKET. For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number x71.9915.73

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि -2

	FULL EMPLOYMENT, LABOUR MARKET.	
		For documents ....
	Class Number	x71:9915

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 3

	LABOUR MARKET, PRESONNEL MANAGEMENT.	
		For documents ....
	Class Number	x71:991

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 4

	PERSONNEL MANAGEMENT, BUDGET.	
		For documents ....
	Class Number	x71:9

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि -5

	BUDGET, PUBLIC FINANCE.	
		For documents ....
	Class Number	x71

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 6

	PUBLIC FINANCE, ECONOMICS.	
	For documents	
	Class Number	x7

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 7

	ECONOMICS.	
	For documents	
	Class Number	x

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि-लेखक

	UNITED STATES,CONGRESS, FISCAL POLICY
	Subcommittee on-)
	Federal budget, inflation and full employment.
	X71:9915.73 N70

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि-वैकल्पिक नाम

	LABOUR PROBLEMS.
	<u>See</u>
	PERSONNEL MANAGEMENT.

टिप्पणी

1. मुखपृष्ठ पर वैधानिक अंग के साथ-साथ उसके दो उपअंग भी दिये गये हैं। मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक अनुच्छेद में वैधानिक अंग के बाद दूसरे उपअंग दी नियमांक JC66 के अनुसार अंकित किया गया है।
2. अन्य सभी इतर प्रविष्टियां नियमानुसार बनाई गई हैं।
3. एक नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि विषय के वैकल्पिक नाम के अन्तर्गत। बनाई गई है।

मुखपृष्ट - 3

(शासन प्रमुख)

WE ACCEPT CHINA'S CHALLENGE

Speech in the Lok Sabha on

India's Resolve to drive out the Aggressor

By

Pandit Jawaharlal Nehru

Prime Minister of India

Publications Division

Ministry of Information and Broadcasting

New Delhi

1961

Other Information

Call No. V44:1941,(zG)N7' K1

Acc .No. 55554

Pages xi,244

Size 22.8cm.

मुख्य प्रविष्टि

	V44:1941,(zG)'N7 K1
	INDIA ,PRIME MINISTER, (Jawaharlal Nehru). We accept China's challenge: Sabha on India's resolve to drive out the aggressor. 55554

संकेत

Aggression, China, Foreign policy, India. China, Foreign policy, India. Foreign policy, India. India , History. History.

India, prime Minister (Jawaharlal Nehru)

Nehru (Jawaharlal).

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	AGGRESSION, CHINA, FOREIGN POLICY, INDIA.
	For docments in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number V44:1941,(zG)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2

	CHINA FOREIGN POLICY, INDIA	
		For documents ....
	Class Number	V44:1941

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-3

	FOREIGN POLICY, INDIA	
		For documents ....
	Class Number	V44:19

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-4

	INDIA, HISTORY.	
		For documents ....
	Class Number	V44

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-5

	HISTORY.	
		For documents ....
	Class Number	V

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि-लेखक

	INDIA,	PRIME MINISTER (Jawaharlal Nehru).
		We accept China’s challenge. V44:1941(zG)’N7 K1

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि-वैकल्पिक नाम

	NEHRU	(Jawaharlal).
		<u>See</u> INDIA,PRIME MINISTER (Jawaharlal Nehru).

टिप्पणी

1. ग्रन्थ का लेखक शासन प्रमुख होने के कारण मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक अनुच्छेद में शासन प्रमुख के नाम का उपकल्पन नियमानुसार किया गया।
2. अन्य सभी इतर प्रविष्टियां नियमानुसार बनाई गई है।
3. ग्रन्थ में लेखक के नाम के स्थान पर Pandit Lal Nehru लिखा होने के कारण पाठकों की अभिगम पूर्ति हेतु एक नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि बनाई गई है।

मुखपृष्ठ - 4

(शासन व उसका प्रथम श्रेणी का प्रशासनिर्क अंग)

Ministry of External Affairs

Government of India

List of India’s Representatives Abroad

Publications Division

Ministry of Information and Broadcasting

New Delhi

1973

Other Information

Call No.	V44,8 L3
Acc.No	21245
Pages	i-xi,1-85
Size	22.8cm.

मुख्य प्रविष्ट

	V44,8	L3
	21245	INDIA EXTERNAL AFFAIRS (Ministry of-) List of india’s representatives abroad.

संकेत

	Civil service,India History. India, History. History. India, External Affairs (ministry of-) Administrative service.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	CIVIL SERVICE ,INDIA HISTORY.	
	For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified part of the catalogue under the Class Number V44,8	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

	INDIA, HISTORY,	
	For documents .... Class Number V44	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 3

	HISTORY,	
	For documents .... Class Number V	

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि-लेखक

	INDIA, EXTERNAL AFFAIRS (Ministry of -)	
		List of India's representatives abroad. V44,8 L3

वैकल्पिक नाम नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि

	ADMINISTRATIVE.	
		<u>See</u> CLVIL SERVICE.

टिप्पणी

1. मुख पृष्ठ पर शासन के एक ही अंग का नाम दिये रहने के कारण शीर्षक का उपकल्पन नियमांक MD21,JC21 व JC6 एवं उनके उपखण्डों के अनुसार किया गया है। शासन के प्रशासनिक अंग को पुन: स्मरणमान के उपसूत्र के अनुसार लिखा गया है।
2. विषय वैकल्पिक नाम से एक नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि बनाई गई है।
3. अन्य सभी इतर प्रविष्टियां पूर्ण वर्णित नियमों के अनुसार बनाई गई है।

मुखपृष्ठ - 5

(शासन व उसके प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी के प्रशासनिक अंग)

Lbour Bureau Monograph, No.19

....

LABOUR CONDITIONS IN SILK FACTORIES

A Report

LABOUR BURREAU

MINISTRY OF LABOUR

GOVERNMENT OF INDIA

NEW DELHI

1984

Other Information

Call No. X8(M73):9.44’N82 N84

Acc.No. 150031

Pages ix,217

Size 27cm.

मुख्य प्रविष्ट

	X8(M73;3):9.44’N82	
	150031	INDIA, LABOUR (Bureau). Labour conditions in silk factories: A report. (Its momograph. 19)

संकेत

India,personnel management,Silk, Industry. Personal management,Silk,Industry.
Silk, Industry. Economics. Industry, Economics. Economics.
India, Labour (Bureau) India, Labour(Bureau), monograph. Labour problems.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	INDIA, PERSONNEL MANAGEMENT,INDUSTRY.	
	For documents in this Class and its Subdivisions,see the Classified part of the catalogue under the Class Number X8(M73;3):9.44	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

	PERSONNEL MANAGEMENT, SILK, INDUSTRY.	
	For documents	
	Class Number	X8(m73:3):9

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 3

	SILK, INDUSTRY, ECONOMICS.	
	For documents	
	Class Number	X8(M73:3)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि -4

	INDUSTRY, ECONOMICS.	
	For documents	
	Class Number	X8

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 5

	ECONOMICS.	
	For documents	
	Class Number	X

लेखक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

	INDIA,	LABOUR (Bureau).
		Labour conditions in silk factories. X8(MP3;3)9.44'N82 N84

ग्रन्थमाला ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

	INDIA,	ABOUR (Bureau),MONOGRAPH.
	19	Its: Labour conditions in silk factories. X8(M73;3)9.44'N82 N84

वैकल्पिक नाम नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि

	LABOUR PROBLEMS.	
		See PERSONNEL MANAGEMENT.

टिप्पणी

1. मुख पृष्ठ पर शासन के दो प्रशासकीय अंगों के नाम दिये रहने के कारण नियमांक के अनुसार प्रथम श्रेणी के प्रशासनिक अंग को उपशीर्षक के रूप में अन्तवेशित करने की आवश्यकता न होने के कारण नहीं लिखा गया है।
2. ग्रन्थमाला को व्यष्टि कृत करने के लिए मुख्य प्रविष्टि के टिप्पणी अनुच्छेद में ग्रन्थमाला के पूर्व Iets नियमांक JC52 के अनुसार जोड़ा गया है।
3. ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि के द्वितीय अनुच्छेद में ग्रन्थ के लेखक तथा ग्रन्थमाला के व्यष्टिकृत पद एक समान होने के कारण नाम के स्थान पर नियमांक JC52 के अनुसार Its पद लिखा गया है।
4. विषय के वैकल्पिक नाम से एक नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि बनाई गई है।

5. अन्य सभी इतर प्रविष्टियां नियमानुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ - 6

(शासन व उसके प्रथम एवं द्‌वितीय श्रेणी के प्रशासनिक अंग)

RESEARCH AND DEVELOPMENT STATIATICS

1998-1999

DEPARTMENT OF RESEARCH AND DEVELOPMENT

MINISTRY SCIENCE AND TECHNOLOGY

GOVERNMENT OF INDIA

NEW DELHI

Manager of Publications

2000

Other Information

Call No. A:f44sN99 P00

Acc.No. 543321

Pages viii, 189

Size 21.8 cm.

ISBN 544-388-471-9

मुख्य प्रविष्टि

	A:f 44sN99 P00	
	RESEARCH AND DEVELOPMENT (Department of-), 543321	INDIA, SCIENCE AND TECHNOLOGY (Ministry of), Resarch and development statistics, 19981999.

संकेत

	Statistics, India, Investigation, Natural sciences. India, investigation, Natural sciences. Natural sciences. Natural sciences. India, Science and Technology (ministry of-) Research and development (Department of-). Research.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	STATISTICS, INDIA, INVESTISTIGATION, NATURAL	
	SCIENTCES. For documents in this Class and its Subdivisions, see the Class part of the catalogue under the Class Number A:f.44s	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

	INDIA, INVESTIGATION, NATURAL SCIENCES.	
	For documents .... Class Number A:f.44	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 3

	INVESTIGATION, NATURAL SCENCES.	
	Class	For documents .... Number A:f

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 4

	NATURAL SCIENCES.	
	Class	For documents .... Number A

लेखक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि -

	INDIA, SCIENCE AND TECHNOLOGY (Ministry of-)	
	RESEARCH AND DEVELOPMENT (Department of-)	Research and development statistics, 1998-1999. A: f. 44sN99 P00

वैकल्पिक नाम नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि

	RESEARCH.	
		See INVESTIGATION.

टिप्पणी

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का उपकल्पन नियमांक JC66 के अनुसार पूर्व श्रेणी के प्रशासनिक अंग को शीर्षक में उपशीर्षक के रूप में समरूपता भंग करने के लिये आवश्यक होने के कारण लिखा गया है।
2. अन्य सभी इतर प्रविष्टियाँ नियमानुसार बनाई गई हैं।
3. एक नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि Research पद हेतु आवश्यकतानुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ - 7

(शासन का अस्थाई अंग)

REPORT

Of the

VOCATIONAL EDUCATION COMMISSION

HMSO LONDON

1989

Other Information

Call No. T9(Y4).56' N89

Acc. No. 55442

Pages ix,515

Size 18 cm.

Note: Vocational Education Commission was set up by Government of Great Britatin in 1987 under the chairmanship of prof, John Edward. The report is also known as Edward Commission report.

मुख्य प्रविष्टि

	T9(Y4).56'N87t N89	
	GREAT BRITAIN, VOCATIONAL EDUCATION (Commission) (1987) (Chairman: John Edward). Report. 55442	

संकेत

	Report great Britain, vocational education (commission) (1987) Report, Edward commission. Great Britain, Vocational, education. Vocational, education. Education Great braitain, vocational education (commission) (1987) (Chairman): Jhon Edward Edward commission.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	REPORT,GREATBRITAIN,VOCATIONAL EDUCATION	
	(Commission)(1987) For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classififed part of the catalogue under The Class Number T9(Y4).56'N87t	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

	REPORT, EDWARD COMMISSION.	
		For documents ....
	Class Number	T9(Y4).56'N87t

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 3

	GREAT BRITAIN, VOCATION, EDUCATION.	
		For documents ....
	Class Number	T9(Y4).56

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 4

	VOCATION, EDUCATION.	
		For documents ....
	Class Number	T9(Y4)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 5

	EDUCATION.	
		For documents ....
	Class Number	T

लेखक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - 1

	GREAT,BRITAIN,VOCATIONAL,EDUCATION(Commission)	
		(1987) (Chaiman: John Edward). Report. T9(Y4). 56'N87t N89

लेखक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि -2

	EDWARD COMMISSION.	
		Report. T9(Y4).56'N8 7t N89

टिप्पणी

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का उपकल्पन नियमांक JC6 व उसके उपखण्डों के अनुसार किया गया है तथा व्यष्टिकृत पद नियमांक JC 71 एवं JC72 के अनुसार जोड़े गये हैं।

2. नियमांक KJ1 के अनुसार वर्गांक की अन्तिम कड़ी से दो वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ बनाई गई हैं। अन्य वर्ग निर्देशी प्रविष्टियां सामान्य नियमों के अनुसार बनाई गई है।

3. नियमांक MK117 के अनुसार द्वितीय लेखक प्रविष्टि बनाई गई है।

मुखपृष्ठ - 8

(शासन का अस्थाई अंग)

REPORT OF THE OFFICIAL TEAM ON THE TEA INDUSTRIES, 1988

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

GOVERNMENT OF INDIA

NEW DELHI

Manager of Publication

1990

Other Information

Call No. X8(J451).44'N87 N90

Acc.No. 722551

Pages xii, 209

Size 24.4 cm.

Note the official team on tea Industries was appointed by the Ministry of Commerce and Industry, Government of India in December, 1987 under the chairmansip of E. Rajaram Rao. The report is also know as' Rao Theam report"

मुख्य प्रविष्टि

	X8(J451).44'N87t N90	
	(1987) 722551	INDIA, TEA INDUSTRY (Official Team on the -ies) (Chairman: E Rajaram Rao). Report, 1988

संकेत

Report, India, Tea industry (official team on the-ies)(1987).Report, Rao Team. India, tea, Industry. Tea, Industry. Industry. Economics. Economics. India Tea industry (Official Team of the- ies) (1987) (Chairman: E Rajaram Rao). Rao Team.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

REPORT, INDIA, TEA, INDUSTRY (Official Team on the - ies) (1987).

For documensts in this Class and its Subdivisions, seen the Classified part of the catalogue under the Class Number X8(J451).44'N87t

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि -2

REPORT, RAO TEAM.

For documents ....

Class Number X8(J451).44'N87t

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 3

	INDIA, TEA, INDUSTRY.	
		For documents ....
	Class	Number x8(J451)44

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि -4

	TEA, INDUSTRY.	
		For documents ....
	Class	Number X8(J451)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि -5

	INDUSTRY, ECONOMICS.	
		For documents ....
	Class	Number X8

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 6.

	ECONOMICS.	
		For documents ....
	Class	Number X

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - लेखक - 1

	INDIA, TEA INDUSTRY (Official Team on the-ies) 1987)	
	(Chairman: E Rajarn Rao).	
		Report, 1988 X8(J451).44'N87t N90

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - लेखक - 2

	RAO TEAM.	
		Report, 1988. X8(J451).44'N87t N90

टिप्पणी

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का उपकल्पन मुख पृष्ठ 7 के समान ही बनाया गया है। नियमांक JC631 के अनुसार प्रविष्टि तत्व एकवचन कर्त्ताकारक रूप में नहीं होने के कारण गौण तत्व में इसे छोटी आड़ी रेखा दारा दर्शाया गया है।
2. मुखपृष्ठ 7 के समान ही अन्य सभी इतर प्रविष्टियाँ बनाई गई हैं।

7. अभ्यास के लिये मुखपृष्ठ (Title pages for practice)

मुखपृष्ठ-1

(शासन व उसका वैधानिक अंग)

LOK SABHA

The National Library Bill, 1972

Lok Sabha Secretariate

NEW DELHI

JULY,1974

Other Information

Call No.	213.44(z) N74
Acc.No.	64281
Pages	ii, 21
Size	22 cm.

मुखपृष्ठ 2

(शासन व उसका वैधानिक अंग)

GOVERNMENT OF UNITED STATES

HOUSE OF REPRESENTATIVES

Admirality list of light for signals

in the United States

WASHINGTON

1967

Other Information

Call No.	MD525.73 K7
Acc.No.	33311
Pages	211

Size 24.8 cm.

मुखपृष्ठ - 3

(शासन प्रमुख)

SPEECHES DELIVERED

by

His Excellency the Honourbale

GIANI ZAIL SINGH

While

President of India

The Manager of Publications,

Government of India

New Delhi, 1989

Other Information

Call No.	V44y7N16 N89
Acc.No.	45571
Pages	xii, 249
Size	23 cm.
Note	Giani Zail Singh was president of India form 1984 to1989.

मुखपृष्ठ- 4

(शासन व उसका एक प्रशासनिक अंग)

THE INDIAN TAXATION PATTERN

Government of India

Ministry of Finance

The Manager of Publications,

New Delhi,

1990

Other Information

Call No.	X72.44	N90
Acc.No.	29922	
Pages	xii, 291	
Size	22x14 cm.	

मुखपृष्ठ 5

(शासन व उसके प्रथम एवं द्‌वितीय श्रेणी के प्रशासकीय अंग)

REPORT

Of the

DIRECTORATE GENERAL OF HEALTH SERVICES, CENTRAL BUREAU OF HEALTH INTELLIGENCE,

GOVERNMENT OF INDIA

MANAGER OF PUBLICATIONS

NEW DELHI

1997

Other Information

Call No.	L: 5.44r	N97
Acc No.	552231	
Pages	xii, 339p.	
Size	20.8 cm.	
ISBN	88-3021-4455	

मुखपृष्ठ-6

(शासन व उसके प्रथम एवं द्‌वितीय श्रेणी के प्रशासकीय अंग)

SELECTED STATISTICS OF INDIAS'S

EXPORT AND IMPORT TRADE

(1975-1995)

Dapartment of Statistics

Ministry of Commerce

Government of India

1996

New Delhi

Manager of publications

Other Information

Call No.	X:54.44'N95←N75s N96
Acc.No.	223451
Size	22.2 cm.
Pages	ix,199

मुखपृष्ठ 7

(शासन का अस्थाई अंग)

REPORT OF THE SECONDARY EDUCATION COMMISSION

(Oct. 1952-June 1953)

Ministry of Education

Government of India

New Delhi

1958

Other Information

Call No : T2,44'N52t j8

Page : xcii,1008

Acc No. : 82911

Size : 25.3 cm.

Chairman : A.L. Mudaliar

Year of Establishment of the Commission : 1952

मुखपृष्ठ - 8

(शासन व उसका अस्थाई अंग)

COOPERATICE AGRICULTURE IN INDIA

REPORT OF THE COMMITTEE ON AGRICULTURAL COOPERATION IN INDIA, 1967

Chairman: Dr. A.K. Swaminathan

Department of Agriculture

Government of India

New Delhi, 1968

Other Information

Call No. XM, 8(J).44'N67 N68

Acc.No. 53331

Pages xix, 419

Size 22.3 cm.

Note The Committee was setup in 1967.

मुखपृष्ठ - 9

(शासन व उसका अस्थाई अंग)

MODERNIZATION OF INDIAN BANK INDUSTRY

Report of the Committee on Bank Industry

Ministry of Commerce
Government of India
New Delhi 1995

Other Information

Call No.	X62.44’N94t N95
Acc No.	154332
Pages	ii, 519
Size	28 cm.
Note	the committee was appoint by Government of India under the chairmanship of prof kantar Ahuja in 1994.

8. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची (Bibliography)

1. सूद (एस पी) : सूचीकरण प्रक्रिया. जयपुर, आर.बी.एस.ए., 1998

2. वर्मा (ए के) : क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण. रायपुर. सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999

3. Krshna kumar: An introduction to catalogunng practice New Delhi, Vikas, 1996.

4. Ranganathan (S R): Classified catalogue code etc. Ed 5. Bangalore, Sarde Ranganathan Edownment for Library Science, 1992.

5. Ranganathan (S R): Cataloguing practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Libran Science, 1994.

इकाई - 7 : ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण संस्था एवं सम्मेलन (Practical Cataloguing of Books: Institution and Conference)

उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य है : -

1. संस्था एवं सम्मेलन को परिभाषित करना

2. संस्था एवं सम्मेलन के सूचीकरण नियमों का परिचय देना,

3. संस्था के प्रशासकीय अंग एवं अस्थाई अंग के ग्रंथों के सूचीकरण नियमों की जानकारी देना।

संरचना

1. विषय प्रवेश
2. संस्था
   - 2.1 संस्था की परिभाषा
   - 2.2 संस्था के अंग
   - 2.3 संस्था व उसके अंगो का उपकल्पन
3. सम्मेलन
   - 3.1 सम्मेलन की परिभाषा
   - 3.2 सम्मेलन के प्रकार
   - 3.3 सम्मेलन व उसके अंग का उपकल्पन
4. सूचीकृत मुखपृष्ठ
5. अभ्यास के लिए मुखपृष्ठ
6. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची

1. विषय प्रवेश (Introduction)

शासन के समान ही संस्था एवं सम्मेलन (जिन्हें अन्य नामों जैसे सभा, बैठक, अधिवेशन, संगोष्ठी, कार्यशाला आदि से भी जाना जाता है।) भी समष्टि निकाय की श्रेणियां हैं तथा उनके द्वारा रचित ग्रन्थों को संस्थाओं एवं सम्मेलनों के नाम से ही जाना जाता है। संस्थागत एवं सम्मेलन प्रकाशनों में निहित विचारों के लिये संस्था एवं सम्मेलन उत्तरदायी होते हैं तथा उन्हें प्रकाशनों के लेखक के रूप में माना जाता है।

2. संस्था (Institution)

2.1 संस्था की परिभाषा (Definition of Institution)

रंगनाथन ने सी सी सी नियमांक FC23 के अन्तर्गत संस्था को निम्नलिखित प्रकार परिभाषित किया है : -

अर्थ 1 : - शासन के अतिरिक्त अन्य प्रकार का स्वाधीन या स्वायत्तशासी समष्टि निकाय। इसका निर्माण शासन द्वारा किया जा सकता है, अथवा इसका गठन किसी अधिनियम के अन्तर्गत शासन अथवा स्वैच्छिक रूप से औपचारिक या अनौपचारिक रूप में किया जा सकता है। ये मात्र सम्मेलन आयोजन के अतिरिक्त अन्य कार्य करते हुए निरन्तर अस्तित्व में रहती है या निरन्तर अस्तित्व रखने के लिए प्रयत्नशील रहती है।

इस इकाई में वर्णित सभी नियमंक रंगनाथ क्लासिफाइएड केटलॉग कोड तथा तारांकित सभी नियमंक रंगनाथ केटालौगिंग प्रैक्टिस में दिये गए है।)

अर्थ 2 : - उपर्युक्त अर्थ 1 में परिभाषित संस्था का अंग।

उदाहरणार्थ राजस्थान ग्रन्थालय संघ तथा राजस्थान विश्वविद्यालय अर्थ 1 के अनुसार संस्थायें हैं तथा राजस्थान ग्रन्थालय संघ की परिषद व राजस्थान विश्वविद्यालय का समाजशास्त्र विभाग भी अर्थ 2 के अनुसार संस्था है।

2.2 संस्था के अंग (Rendering of Insttution)

संस्था के अंग शासन के अंगों के समान ही हैं। इन्हें भी दो भागों में बांटा जा सकता है : -

1. स्थाई अंग
2. अस्थाई अंग

स्थाई अंग को पुन: तीन प्रकारों में बांटा जा सकता है : -

(i) वैधानिक अंग
(ii) संस्था प्रमुख
(iii) प्रशासकीय अंग

2.3 संस्था का उपकल्पन (Rendering of Institution):

संस्था के नाम का उपकल्पन पुन: स्मरण मान के उपसूत्र (Canon of Value के अनुसार होगा अर्थात् संस्था के नाम में से उसके विषय को बाहर निकालकर बड़े अक्षरों (Capital letters) में लिखा जाता है तथा शेष बचे शब्दों को वृत्ताकार कोष्ठक में लिखा जाता है। यदि संस्था का नाम व्यष्टिकृत न हो तो दूसरे' वृत्ताकार कोष्ठक में निम्नलिखित व्यष्टिकृत पद जोड़े जाते हैं : -

राष्ट्रीय स्तरीय संस्था	=	देश का नाम वृत्ताकार कोष्ठक में
राज्य स्तरीय संस्था	=	राज्य का नाम वृत्ताकार कोष्ठक में
स्थानीय संस्था	=	शहर का नाम वृत्ताकार कोष्ठक में

उदाहरणार्थ

1. LIBRARY (Indian- Association).
2. UNIVERSITY GRANTS (Commission)(India)
3. LIBRARY (State Central-) (Maharashtra).
4. LIBRARY (Public-) (Ajmer).

2.3.1 संस्था के अंगों का उपकल्पन (Rendering of Organs of Institution)

संस्था के अंग या अंगों का उपकल्पन संस्था के नाम के बाद कोमा (,) लगाकर पुन: स्मरणमान के उपसूत्र के अनुसार किया जाता है।

2.3.1.1 वैधानिक अंग (Constitutional Organ):- संस्था के वैधानिक अंग का उपकल्पन निम्नलिखित प्रकार से होगा:

उदाहरणार्थ

LIBRARY (Indian-Association), EXECUTIVE.

2.3.1.2 संस्था प्रमुख (Head of Institution):- संस्था के प्रधान के नाम को उपकल्पन में उस पद पर आसीन व्यक्ति का नाम द्वितीय शीर्षक के रूप में व्यष्टिकृत पद के रूप में देना चाहिये।'

उदाहरणार्थ

UNIVERSITY (of Rajasthan).VICE CHANCELLOR (Rameshwar Sharma).

2.3.1.3 प्रशासकीय अंग (Administrative Organ): - संस्था के नाम के उपरान्त प्रशासकीय विभाग के कार्यो (Sphere of Work) को निरूपित करने वाले शब्द अथवा समूह को प्रविष्टि पद के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। जैसे Division of Cataloguing and Classification of American library Association को निम्नलिखित प्रकार से उपकल्पित किया जायेगा -

LIBRARY (American-Association). CAPTALOGUING AND CLASSIFICATION (Division of-)

2.3.1.4 उपशीर्षकों का अन्तर्वेशन (Interpolation of sub Headings) - नियमांक JC66 के साद्दश्य ही यदि संस्था का प्रशासनिक विभाग संस्था का द्वितीय या अन्य श्रेणी का अंग हो तथा उसका नाम व्यष्टिकृत न हो और यदि शीर्षक निर्माण में किसी प्रकार की समरूपता पूर्व श्रेणी (Earlier remove) के अंग जोड़े बिना समाप्त न होती हो तो संस्था के नाम व प्रशासनिक विभाग के मध्य ऐसे नाम उपशीर्षक के रूप में अन्तर्वेशित करने चाहिये। इस प्रकार के कम से इकाई-, कम उपशीर्षक अनर्वेशित करने चाहिये। यदि उनकी संख्या दो या अधिक हो तो, उन्हें अवरोही क्रमानुसार (Descending Hierarchical Sequence) अन्तर्वेशित करना चाहिये। उदाहरणार्थ'

American Library Association, Resources and Technical Service Division, Cataloguing and Classification Section, Bylaws Committee का पकल्पन निम्नलिखित प्रकार से होगा -

LIBRARY (American- Association), CATALOGUING AND CLASSIFICATION (Section), BYLAWS (Committee).

उपर्युक्त उदाहरण के बीच अंग Resources and Technical Division की सुविधा से हटाया जा सकता है, क्योंकि Cataloguing and Classification Section सदैव इसी का अंग होता है।

उदाहरणार्थ

परन्तु American library Association, Regerence Service Division, History Section, Conference programme Committee का उपकल्पन निम्नलिखित प्रकार से होगा-

LIBRARY (American- Association), REFERENCE SERVICE (Division), HISTORY (Section), CONFERENCE PROGRAMME (Committee).

उपर्युक्त उदाहरण में सभी पद सोपानों को अवरोही क्रम में उपकल्पित किया गया है। इसमें बीच के अंगों का उपशीर्षकके रूप में अन्तर्वेशन आवश्यक है।

2.3.1.5 अस्थाई अंग (Temporary Organ) - जब संस्था किसी विशेष कार्य पूर्ति हेतु किसी तदर्थ समिति (Adhoc Committee) का गठन किसी व्यक्ति की अध्यक्षता में करती है, तो उस समिति को उस संस्था का अस्थाई अंग कहा जाता है।

संस्था के अस्थाई अंग का उपकल्पन शासन तथा उसके प्रशासनिक अंग के समान ही होता है, तथा व्यष्टिकरण के लिए उसका स्थापना वर्ष जोड़ा जाता है। यदि तदर्थ आयोग, समिति आदि हो, तो उसके अध्यक्ष का नाम व्यष्टिकृत पद के बाद वृत्ताकार कोष्ठक में जोड़ा जाता है।

उदाहरणार्थ

BANK (Reserve-0f India), AGRICULTURAL CREDIT (Advisiory Committee on-) (1958) (Chairman: kasturi Santhanam).

2.3.1.6 संयुक्त समिति, आयोग आदि (Joint Committee, etc.): - यदि दो या अधिक किसी कार्य के लिये संयुक्त रूप से समिति या आयोग का गठन करें तथा उनके प्रतिवेदनों को भी संयुक्त रूप से प्रकाशित करें, तो उनके उपकल्पन के लिये सी सी सी सूची संहिता में निम्नलिखित नियम का प्रावधान किया गया है : -

नियमांक JD 38: नियमाक JC8 के सादृश्य।

यदि कोई अंग दो या दो से अधिक संस्थाओं द्वारा स्थापित किया गया हो तो उस अंग के नाम के पूर्व, स्थापित करने वाली संस्थाओं के नाम को शीर्षक के रूप में प्रयोग किया जायेगा तथा उनके नाम को योजक द्वारा जोड़ा जायेगा।

उदाहरणार्थ

LABOUR (International- Organization) and HEALTH (Word-Organization).OCCUPATIONAL HEALTH (Jointc.Committee on-)

3. सम्मेलन (Conference)

3.1 सम्मेलन की परिभाषा (Definition of Conference)

ए ए सी आर- 2 की परिभाषिक शब्दावली में सम्मेलन की निम्नलिखित दो परिभाषायें दी गई हैं

1. सामान्य रुचि के विषयों के विचार विमर्श तथा उनके कार्यान्वयन के उद्देश्य से आयोजित व्यक्तियों अथवा विभिन्न निकायों के प्रतिनिधियों की कोई बैठक

2. समष्टि निकाय के प्रतिनिधियों की कोई बैठक जो उसके विधायी अथवा शासकीय निकाय के रूप में गठित की गई है। रंगनाथन के सी सी सी नियमांक FC 24 के अन्तर्गत सम्मेलन को निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया है : अर्थ 1 : विचार विनिमय या विचार भावनाओं के निर्माण तथा अभिव्यक्ति हेतु तदर्थ सम्मेलन

1. जो इनके द्वारा नहीं बुलाया जाता हो-
   - 11. शासन और शासन के मात्र अपने कर्मचारियों या संविधान सभा द्वारा संप्रभुता सम्पन्न राज्य बनाने हेतु या
   - 12. संस्था और संस्था के मात्र अपने सदस्यों की स्थापना सभा द्वारा संस्था के निर्माण हेतु या
   - 13. एक या अधिक शासनों दारा संयुक्त रूप से मात्र तथा उसके कर्मचारियों तक ही सीमित हो, या
   - 14. एक से अधिक संस्थाओं द्वारा संयुक्त रूप से तथा मात्र उसके सदस्यों तक ही सीमित हो।
2. जो इनके द्वारा आयोजित एवं संचालित किया जाता हो-
   - 21. कुछ व्यक्तियों अथवा समष्टि निकायों द्वारा स्वेच्छापूर्ण सामान्य रुचि के विषयों पर विचार विनिमय हेतु या
   - 22. निकाय के कार्य या अस्तित्व, सम्मेलन आयोजित करने तथा संचालित करने के अलावा और कोई न हो, या
   - 23. निकाय जिसका प्राथमिक कार्य मात्र समय-समय पर सम्मेलन बुलाना और संचालित करना हो।

अर्थ 2 : उपर्युक्त परिभाषित अर्थ 1 के अन्तर्गत सम्मेलन के अंग।

उदाहरणार्थ

भारतीय गणित सम्मेलन 1957 अर्थ 1 के अनुसार सम्मेलन है तथा इसकी स्वागत समिति अर्थ 2 के अनुसार सम्मेलन है।

3.2 सम्मेलन के प्रकार (Types of Conference)

सी सी सी में सम्मेलन को निम्नलिखित दो प्रकारों में बांटा गया है : -

1. आवधिक सम्मेलन (Periodic Conference)
2. अनावधिक सम्मेलन (Non Periodic Conference)

अनावधिक सम्मेलन को पुन: तीन प्रकारों में बांटा गया है : -

अ. विशिष्ट नाम वाले सम्मेलन

ब. राजनयिक सम्मेलन

स. बिना विशिष्ट नाम वाले सम्मेलन

3.3 सम्मेलन व उसके अंग का उपकल्पन (Rendering of Conference and Organ of Conference)

सम्मेलन के नाम का उपकल्पन पुन: स्मरणमान के उपसूत्र के अनुसार होगा अर्थात् सम्मेलन के नाम में से उसके विषय को बाहर निकाल कर बड़े अक्षरों (Capital Letters) में लिखा जाता है तथा शेष बचे शब्दों को पहले वृत्ताकार कोष्ठक में लिखा जाता है। जिस शहर में सम्मेलन हुआ हो उसे दूसरे वृत्ताकार कोष्ठक में तथा जिस वर्ष में सम्मेलन हुआ हो उसे तृतीय वृत्ताकार कोष्ठक में अंकित किया जाता है।

उदाहरणार्थ

International Relign Conference held at Varanasi in 1989 का उपकल्पन निम्नलिखित प्रकार से होगा:-

RELIGION (International- Conference) (Varanasi) (1989)

सी.सी.सी. में सम्मेलन के अंग का उपकल्पन निम्नलिखित प्रकार से होगा : -

उदाहरणार्थ

ADULTEDUCATION (Indian-Conference) (Bhopal) (1992), RECEPTION (Committee).

4. सूचिकृत मुखपृष्ठ (Catalogued Titles)

मुखपृष्ठ -1

(पूर्ण संस्था)

SURVEY OF INDIAN JUTE INDUSTRY

NCAER

NATIONAL COUNCIL OF APPLIED ECONOMIC RESEARCH

Delhi

Publications Division,

NCAER

August, 1998

Other information

Call No.	x8(J741). 44’N98t4 N98
Acc. No.	19988
Pages	viii, 211
Size	21. Cm.

मुख्य प्रविष्टि

	X8(J41).44’n98t4	
	(India).	ECONOMIC (National Council of Applied- Research)
		Survey of Indian jute industry.
	19988	

संकेत

Survey, India, Jute Industry.
India. Jute, Industry.
Jute, Industry.
Industry, Economics.
Economics.
Economics (National Council of Applied - Research) (India).

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	SURVEY, INDIA, JUTE, INDUSTRY.	
	For documensts in this Class and its Subdivisions, seen the Classified part of the catalogue under the Class Number X8 (J741).44'N98t4	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि -2

	INDIA, JUTE, INDUSTRY.	
	For documents .... Class Number X8(J741).44	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 3

	JUTE, INDUSTRY.	
	For documents .... Class Number X8(J741)	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 4

	INDUSTRY, ECONOMICS.	
		For documents ....
	Class Number	X8

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 5

	ECONOMICS.	
		For documents ....
	Class Number	X

लेखक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

	ECONOMICS (National Council of Applied-Research)	
	(India).	
		Survery of Indian jute industry.
		X8(J741).44'n98t4 N98

टिप्पणी

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक अनुच्छेद के संस्था के नाम में से उसके विषय को बाहर निकाल कर पुन: स्मरणमान के उपसूत्र के अनुसार बड़े अक्षरों में तथा शेष शब्दों को वृत्ताकार कोष्ठक में सामान्य अक्षरों में लिखा गया है।
   चूंकि संस्था का नाम व्यष्टिकृत नहीं है इसलिये अगले वृत्ताकार कोष्ठक में नियमानुसार व्यष्टिकृत पद जोडा गया है।
2. अन्य इतर प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमों के अनुसार बनाई गई हैं।।।

मुखपृष्ठ-2

(संस्था एवं उसका एक प्रशासकीय अंग)

RIGHTS AND FREEDOMS

Seal of U.N.O.

UNITED NATIONS

DEPARTMENT OF PUBLIC INFORMATION

Paris

U.N.O.

1985

Other information

Call No. W:5 N 85

Acc. No. 52123

Size 26.4 cm.

H.T.P. Human rights services. No. VII. Edited by John Wright.

मुख्य प्रविष्ट

	W:5	N85
	of-) 52123	UNITED NATIONS, PUBLIC INFORMATION (Departments Rights and freedoms. (Human rights series. Ed by John Wright.7).

संकेत

	Relation of the state with citizen, Political science. United Nations, Public Information (Department of -) Human rights series. Civil right and duty. Wright (John).Ed.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	RELATION OF THE STATE WITH CITIZEN, POLITICAL	
	SCIENCE. For documents in this Class its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number W:5	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि -2

	POLITICAL SCIENCE.	
	For documents .... Class Number W	

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

	UNITED NATIONS,PUBLIC INFORMATION (Department of-)	
		Rights and freedoms. W:5 N85

ग्रन्थमाला - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

	HUMAN RIGHTS SERIES.	
	7	United Nations, Public Information (Departments of-)
	: Rights and freedoms W:5 N85	

वैकल्पिक नाम - नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि

	CIVIL RIGHT AND DUTY.	
		<u>See</u> RELATION OF THE STATE WITH CITIZEN.

ग्रन्थमाला सम्पादक - नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि

	WRIGHT (John), Ed.	
		<u>See</u> HUMAN RIGHTS SERIES.

टिप्पणी

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक अनुच्छेद में संस्था का नाम अलंकारिक होने तथा इसके नाम में कोई विषय द्योतक पद के अभाव में नाम को सीधा उपकल्पित किया गया है तथा संस्था के अंग के नाम को पुन: स्मरणमान के उपसूत्र के अनुसार उपशीर्षक के रूप में लिखा गया है। अर्ध मुखपृष्ठ पर अंकित ग्रन्थमाला के नाम को नियमानुसार टिप्पणी अनुच्छेद में अंकित किया गया है।
2. अन्य सभी इतर प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमों के अनुसार बनाई गई हैं।
3. एक नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि विषय के वैकल्पिक नाम तथा दूसरी ग्रन्थमाला सम्पादक के नाम की अभिगम पूर्ति हेतु क्रमानुसार बनाई गई है।

मुखपृष्ठ - 3

(संस्था व उसके प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी के प्रशासकीय)

GUIDELINES FOR LIBRARY PLANEERS

By

Building Equipment Section of

Library Building Division of

American Library Association

Seal of A.L.A.

Edited by

Keith Dons

Chicago A.L.A.

1987

Other Information

Call No. NA73, 22 N87

Acc. No. 61117

Pages ix, 215

Size 22x15 cm.

Contain diagrams, illustrations etc.

मुख्य प्रविष्टि

	NA 73, 22 N87	
	LIBRARY (American- Association), BUILDING EQUIPMENT (Section). Guidelines for library planners. Ed by Keith Dons. 61117	

संकेत

Library building, United States, Architecutute.
Building, United States, Architecture.
United States, Architecture.
Architecture.

Library (American - Association),
Building Equipment (Section).
Dons (Keith), Ed.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	LIBRARY BUILDING, UNITED STATES, ARCHITECTURE.	
	For documents in this Class its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number NA73, 22	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

BUILDING, UNITED STATES, ARCHITECTURE.

For documents ....

Class Number NA73,2

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 3

UNITED STATES, ARCHITECTURE.

For documents ....

Class Number NA73

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 4

ARCHITECTURE.

For documents ....

Class Number NA

लेखक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

LIBRARY (American - Association), BUILDING EQUIPMENT (Section).

Guidelines for library planners. NA 73,22 N87

सहकारक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

	DONS	(Keith), Ed.
		Library (American-Association), Building Equipment (Section) : Guidelines for library planners. NA73,22 N87

टिप्पणी

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक अनुच्छेद में संस्था के नाम के बाद नियमांक JC66 के सादृश्य ही संस्था के प्रथम श्रेणी के अंग को शीर्षक अनुच्छेद में उपशीर्षक के रूप में अन्तर्वेशित करने की आवश्यकता न होने में नहीं लिखा गया है।
2. अन्य सभी इतर प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमों के अनुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ - 4

(संस्था व उसके प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी के प्रशासकीय अंग)

LIBRARIES AND LIBRARIANSHIP
IN UNITED STATES

by

Public Library Section

Of

Post - War Planning Committee

Of

American Library Association

1986

A.L.A.

CHICAGO

Other Information

Call No.	2.73'N85 N86
Acc. No.	89511
Pages	ix,199
Size	22.3 cm.

मुख्य प्रविष्ट

	22.73'N85 N86	
		LIBRARY (American-Association), POST-WAR PLANNING (Committee), PUBLIC LIBRARY (Section). Public libraries and librarianship in United States.
	89511	

संकेत

United States, Local library.
Local library.
Library science.

Library (American-Association), Post-war Planning (Committee), Public Library (Section).
Public library.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	UNITED STATES, PUBLIC LIBRARY.	
	For documents in this Class and its Subdivisions, See the Classified part of the catalogue under the class Number 22.73	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

	LOCAL LIBRARY.	
	For documents .... Class Number 22	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 3

	LIBRARY SCIENCE.	
	For documents .... Class Number 2	

लेखक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

	LIBRARY (American-Association), POST-WAR PLANNING)	
	Committee), PUBLIC LIBRARY (Section). Public libraries and librarianship in United States. 22.73'N85 N86)	

वैकल्पक नाम - नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि

	PUBLIC LIBRARY	
		<u>See</u> LOCAL LIBRARY.

टिप्पणी

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक अनुच्छेद में संस्था के नाम के बाद नियमांक JC66 सादृश्य की संस्था के दोनों श्रेणी के अंगों को शीर्षक अनुच्छेद में उपशीर्षक के रूप में अन्तर्वेशित किया गया है।
2. अन्य सभी इतर प्रविष्टियां पूर्ण वर्णित नियमों के अनुसार बनाई गई हैं।
3. एक नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि Public Library से बनाई गई है।

मुखपृष्ठ - 5

(संस्था एवं उसका अस्थाई अंग)

SPONSORED RESEARCH OF COLLEGES AND UNIVERSITIES

Seal of Council

A Report of the Committee on Institutional Research Policy

WASHINGTON

American Council of Education

1987

Other information

Call No. T48.73'N86t N87

Acc. No. 23873

Pages vii, 187

Size 25 cm.

Note: In 1986, the Executive Committee of the American Council of Education created the above committee under the chairmanship of Prof. Virgil M. Hancher. The report is alos known as Hancher Committee report.

मुख्य प्रविष्टि

	T48.73	N86t N87
	EDUCATION (American Council of-), INSTITUTIONAL RESEARCH POLICY (Committee on-) (1986) Chairman: Virgil M Hancher). Sponsored research policy of colleges and universities_: A report. 23876	

संकेत

	Report, Education (American Council of-), Institutional Research Policy (Committee on-) (1986). Report, Hancher Committee. United States, Research University Research, University University, Education. Education. Education (American Council of-), Institutional Research Policy (Committee on-) (1986) (Chairman: Virgil M Hancher). Hancher Committee.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	REPORT, ECUCATION (American Council of-).	
	INSTITUTIONAL RESEARCH POLICY (Committee on-) (1986). For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number T48.73'N86t	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

	REPORT, HANCHER COMMITTEE.	
	For documents .... Class Number T48.73' N86t	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 3

	UNITED STATES, RESEARCH, UNIVERSITY.	
	For documents .... Class Number T48.73	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 4

	RESEARCH, UNIVERSITY.	
	For documents	
	Class Number	T48

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 5

	UNVERSITY, EDUCATION.	
	For documents	
	Class Number	T4

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि -6

	EDUCATION.	
	For documents	
	Class Number	T

लेखक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

	EDUCATION (American Council of-), - INSTITUTIONAL
	RESEARCH POLICY (Committee on-) (1986) (Chairman: Virgil M Hancher). Sponsored research policy of colleges and universities. T48.73'N86t N87

लेखक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - 2

	HANCHER COMMITTEE.	
		Sponsored research policy of colleges and universities. T48.73'N86t N87

टिप्पणी

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक में संस्था के नाम के उपकल्पन के बाद नियमांक का सादृश्य ही संस्था के अस्थाई अंग के नाम को शीर्षक में लिखा गया है तथा नियमांक JC71 एवं JC72 के सादृश व्यष्टिकृत पद वृत्ताकार कोष्ठक में जोड़े गये हैं।
2. नियमांक KJ1* के अनुसार वर्गांक के अन्तिम कड़ी से दो वर्ग निर्देशी प्रविष्टियां बनाई गई हैं। अन्य वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ सामान्य नियमों के अनुसार बनाई गई हैं।
3. नियमांक MK117* के अनुसार द्वितीय लेखक निर्देशी प्रविष्टि बनाई गई है।

मुखपृष्ठ - 6

(संस्था एवं उसका अस्थाई अंग)

LEARNING BY DOING

Report of a working Group on Vocational Education

Appointed by

National Council of Education Research & Training

Seal
of
NCERT

New Delhi

NCERT, 1996

Other Information

Call No. T9(Y4).44'N95t N96

Acc. No. 877781

Pages xii, 277

Size 23 cm.

Note: Prof. P.L. Verma was the chairman of the Working Group, appointed by NCERT in 1995.

The report is also known on "Verma Group" report

मुख्य प्रविष्टि

	T9 (T4).44'N95t N96	
	EDUCATION (National Council of- Research and training) (India), VOCATIONAL EDUCATION (Working Group on-) (1995) (Chairman : PL Verma) Learning by doing Report 877781	

संकेत

Report, Education (National Council of- Research and Training) (India). Vocational Education (Working Group on-) (1995). Report, Verma Group. India, Vocation, Education. Vocation, Education Education Education (National Council of- Research and Training) (India). Vocational Education (Working Group on-) 1995) (Chairman : P L Verma) Verma Group.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

REPORT, EDUCATION (National Council of - Research and training) (India). VOCATIONAL EDUCATION (Working Group on-) (1995)

For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number T9 (Y4).44'N95t

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

REPORT, VERMA GROUP.

For documents ....

Class Number T9(Y4). 44'N95t

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 3

INDIA, VOCATION, EDUCATION.

For documents ....

Class Number T9(Y4).44

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 4

VOCATION, EDUCATION.

For documents ....

Class Number T9(Y4)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 5

	EDUCATION.	
	Class	For documents .... Number T

लेखक- ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि-1

	EDUCATION (National Council of-Research and training)	
	India) (1995)	VOCATIONAL EDUCATION (Working Group on (Chairman : P L Verma) Learning by doing T9(Y4).44'N95t N96

लेखक- ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि-2

	VERMA GROUP.	
		Learning by doing T9(Y4).44'N95t N96

टिप्पणी

सभी प्रविष्टियां मुखपृष्ठ 5 के अनुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ - 7

(सम्मेलन)

PROCEEDINGS

OF THE NATIONAL CONFERENCE ON

REHABILITATION SERVICE AND RESEARCH

Sponsored by vocational Rehabilitation and
Welfare Unit of Department of Social Welfare, Government
Of India Held on Dec. 4-6, 1987
at
Medical College, Trivendram, India

Published by
Organising Committee
1988

Other Information

Call No. L:4:67p44,N87 N88

Acc. No. 88331

Pages xii,414

Size 21.3 cm.

मुख्य प्रविष्टि

	L:4:67	o44, N87 N 88
	Conference on-) (Trivendram) (1987). 88331	REHABILITATION SERVICE AND RESEARCH (National Proceedings

संकेत

	Proceedings, Rehabilitation Service and Research (National Conference on-) (Trivendram) (1987). Conference proceedings, Relief work, Social pathology. Relief work, Social pathology. Treatment, social pathology. Social pathology Social pathology Sociology. Rehabilitation Service and Research (National Conference on-) (Trivendram) (1987). Rehabilitation.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	PROCEEDINGS, REHABILITATION SERVICE AND
	RESEARCH. (National Conference on-) (Trivendram) (1987). For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number Y:4:67P44,N87

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

	CONFERENCE PROCCEDINS, RELIEF WORK, SOCIAL
	PATHOLOGY. For documents .... Class Number Y:4:67p44,N87

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 3

	RELIEF WORK SOCIAL PATHOLOGY	
	For documents	
	Class Number	Y:4:67

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 4

	TREATMENT, SOCIAL PATHOLOGY	
	For documents	
	Class Number	Y:4:6

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 5

	SOCIAL PATHOLOGY.	
	For documents	
	Class Number	Y:4

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 6

	SOCIOLOGY.	
	For documents	
	Class Number	Y

लेखक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

	REHABILIATION SERVICE AND RESEARCH (National	
	Conference on-)(Trivendram) (1987). Proceedings. Y:4:67p44,N98 N88	

वैकल्पिक नाम - नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि

	REHABILITATION.	
		<u>See</u> RELIEF WORK.

टिप्पणी

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का उपकल्पन नियमांक का MD21 एवं JE1 व उसके उपखण्डों तथा व्यष्टिकरण नियमांक का JE2 के अनुसार किया गया है।
2. सभी इतर प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमों के अनुसार बनाई गई हैं।
3. Rehabilitation से विषय की मांग करने वाले पाठकों की अभिगम पूर्ति नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ - 8

(सम्मेलन एवं सम्पादक)

INDIAN FINE ARTS

Today and Tomorrow

Proceedings of the National Fine Arts सेमिनार

Held at University of Rajasthan, Jaipur

From 14th to 17th June, 1997

Edited by

Prof. Kripal Singh

JAIPUR

RBSA Publishers, 1998

Other Information

Call No. N44p44,N97 N98

Acc. No. 88441

Pages xiv, 319

Size 25.7 cm.

Note : There are several illustration in the book.

मुख्य प्रविष्टि

	N44p44,N97 N98	
	Singh. 88441	FINE ARTS (National-Seminar) (Jaipur) (1997) Indian fine arts : Today and tomorrow. Ed by Kripal

संकेत

Proceedings. Fine Arts (National-Seminar) (Jaipur) (1997).

Conference proceedings, India, Fine arts.

India, Fine arts.

Fine arts.

Fine Art (National-Seminar) (Jaipur) (1997)

Kripal Singh, Ed.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	PROCEEDINGS, FINE ARTS (National-Seminar) (Jaipur)	
	(1997). For documents in this Class and its Subdivisions, See the Classified Part of the catalogue under the Class Number N44p44, N97	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

	CONFERENCE PROCEEDINGS, INDIA, FINE ARTS.	
	For documents .... Class Number N44p	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 3

	INDIA, FINE ARTS.	
	For documents .... Class Number N44	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

	FINE ARTS.	
	For documents .... Class Number N	

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - लेखक

	FINE ARTS (National-Seminar) (Jaipur) (1997).	
		Indian fine arts. N44p44,N97 N98

सहकारक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

	KRIPAL SINGH, Ed	
		Fine Arts (National-Seminar) (Jaipur) (1997) : Indian fine arts. N44p44,N97 N98

टिप्पणी

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का उपकल्पन मुखपृष्ठ 7 के समान ही किया गया है।
2. अन्य सभी इतर प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमों के अनुसार बनाई गई हैं।

5. अभ्यास के लिए मुखपृष्ठ (Title Pages for Practice)

मुखपृष्ठ 1

(पूर्ण संस्था)

BOTANICAL SOCIETY OF INDIA

Classification and Description of Plants
Found in India

PUBLISHED BY

Forest Research Institute, Dehradun

1981

Other Information

Call No. I: 11.44 N81

Acc. No. 96644

Pages xiv, 895

Size 23 cm.

मुखपृष्ठ - 2

(संस्था एवं उसका प्रथम श्रेणी का प्रशासकीय)

INDIAN WOMEN IN RURAL DEVELOPMENT

Critical Issues

Women Cell

International Labour Organization

Genevel

ILO

1998

Other Information

Call No. Y15-3:7:7:44 N98

Acc. No. 112233

Pages 27 cm.

Size ix, 201p.

मुखपृष्ठ - 3

(संस्था एवं उसका प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी का प्रशासकीय अंग)

PUBLIC LIBRARY SERVICE

A Guide to Evaluate with Minimum Standards

Prepared by

Coordination Committee on Revision
Of Public Library Standards,
Public Library Division,
American Library Association

Chicago,
A.L.A.
1989

Other Information

Call No.	22.73	N89
Acc. No.	41413	
Pages	xi, 189	
Size	23 x 16 cm.	

मुखपृष्ठ - 4
(संस्था एवं उसका प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी का प्रशासकीय अंग)

A HAND BOOK FOR TEACHER-LIBRARIANS

Prepared by the
Elementary Sub-Committee of the
Education Committee of the
Indian Library Association
Edited by
M.K. Sharma

New Delhi,
Indian Library Association
1987

Other Information

Call No. 231y8 N87

Acc. No. 662244

Pages vii, 211

Size 25 cm.

मुखपृष्ठ - 5

(संस्था एवं उसका अस्थाई अंग)

Report of the Astronomical Committee

Seal of CSIR

Publication Buereau

Council of Scientific and Industrial Research

New Delhi, 1958

Other Information

Call No. B9.2’N57t N58

Acc. No. 511181

Size 25 x 14 cm.

Note: CSRI an automobile body appointed Astronomical Committee in 1957 under the chairmanship of renowned scientist Prof. G.S. Kanwar of Delhi University.

मुख्यपृष्ठ - 6

(संस्था एवं उसका अस्थाई अंग)

COOPERATION FOR ECONOMIC DEVELOPMENT OF EASTERN AFRICA

Seal of UNO

Report of the Eastern Africa Team

New York
United Nations
1971

Other Information

Call No. x:75.69N70t N71
Acc. No. 12969
Pages xii, 515
Size 28 cm.
Note : The chairman of the team was N.T. Wang. The team was established by United Nations in 1970.

मुखपृष्ठ - 7

(सम्मेलन एवं दो सह सम्पादक)

ROCEEDINGS
of the

INTERNATIONAL CONFRENCE ON TUBERCULOSIS

Edited by
Dr. V.A. Kamath

New Delhi
Scientific Publishers,
1992

Other Information

Call No. L: 42lpl,N91 N92
Acc. No. 88114
Pages xiii, 705

Size	25 cm.

मुखपृष्ठ - 8

(सम्मेलन एवं दो सह सम्पादक)

ADULT EDUCATION AND CHALLENGES OF THE 1990s

Proceedings of the international Adult Education Conference held at Nottinghom, Great Britain.

From Dec. 21-23, 1995

Edited by

Walter Leirman

And

Jindra Kulich

1996

London

Croom Helm

Other Information

Call No.	T3pl, N95	N96
Acc. No.	66671	
Pages	xii, 415	
Size	23.2 cm.	

मुखपृष्ठ - 9

(सम्मेलन एवं दो सह सम्पादक)

PROCEEDINGS OF THE SUMMER SCHOOL AND COLLOQIUM IN MATHEMATICAL LOGIC

Held at Manchester, 11-13 August, 1987

Edited by

R.O. Gandy

And

C.M.E. Yates

North Holland Publishing Co.

Amsterdom,

London

Other Information

Call No.	R14p56, N87 N88
Acc. No.	77331
Pages	ix, 451
Size	23 x 16 cm.

7. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थ सूची (Bibliography)

1. सूद (एस पी) : सूचीकरण प्रक्रिया. जयपुर, आर.बी. एस.ए., 1998.

2. वर्मा (ए के) : क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण. रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1998.

3. Krishna Kumar : An introduction to cataloguing practice. New Delhi, Vikas, 1996.

4. Ranganathan (S R): Classified catalogue code etc. Ed 5. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.

5. Ranganathan (SR): Cataloguing practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1994.

इकाई - 8 ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण ग्रन्थमाला एवं समिश्र ग्रन्थ (Practical Cataloguing of Books : Series and Composite Books)

उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य हैं : -

1. ग्रन्थमाला को परिभाषित करना और उसके प्रकारों की जानकारी देना,

2. ग्रन्थमाला के विभिन्न प्रकारों को मुख्य प्रविष्टि में लिखने के नियम एवं ग्रन्थमाला प्रविष्टि बनाने के नियमों की जानकारी देना

3. समिश्र ग्रन्थ, उसके प्रकार एवं विभिन्न प्रकारों- सामान्य समिश्र ग्रन्थ एवं कृत्रिम समिश्र ग्रन्थ को परिभाषित कर उनका अर्थ स्पष्ट करना

4. सामान्य समिश्र ग्रन्थ एवं अभिनन्दन ग्रन्थ को सूचीकृत करने के नियमों का समझना,

5. कृत्रिम समिश्र ग्रन्थ को सूचीकृत करने के नियमों का ज्ञान कराना।

संरचना

1. विषय प्रवेश
2. ग्रन्थमाला
   2.1 ग्रन्थमाला की परिभाषा
   2.2 ग्रन्थमाला के प्रकार एवं उनके सूचीकरण के नियम
3. समिश्र ग्रन्थ
   3.1 परिभाषा
   3.2 प्रकार
4. सामान्य समिश्र ग्रन्थों के सूचीकरण के नियम
   4.1 मुख्य प्रविष्टि की संरचना
   4.2 इतर प्रविष्टियों की संरचना
5. कृत्रिम समिश्र ग्रन्थों के सूचीकरण के नियम
   5.1 मुख्य प्रविष्टियों की संरचना
   5.2 इतर प्रविष्टियों की संरचना
   5.3 संकेत
6. सूचीकृत मुखपृष्ठ
7. अभ्यास के लिये मुखपृष्ठ
8. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची

(इस इकाई में वर्णित सभी नियमांक रंगनाथनकृत क्लासीफाइड केटलॉग कोड तथा तारांकित सभी नियमाक रंगनाथनकृत केटालागिंग प्रेक्टिस में दिये गये हैं।)

1. विषय प्रवेश (Introduction)

कुछ ग्रन्थों में ग्रन्थात्मक सूचनाओं के अन्तर्गत लेखक, सहकारक, आख्या, संस्करण, प्रकाशनादि विवरण के अतिरिक्त मुखपृष्ठ, मुखपृष्ठ के पार्श्व भाग अथवा अर्ध मुखपृष्ठ पर ग्रन्थमाला की सूचना भी जाती है। ग्रन्थमाला सामान्यतया प्रकाशक द्वारा एक ही विषय के ग्रन्थों को एक स्थान पर एकत्रित करने हेतु दी जाती है कुछ ग्रन्थमालाओं के साथ ग्रन्थमाला सम्पादक या सम्पादकों के नाम भी दिये रहते हैं। इसके अतिरिक्त सामान्यतया क्रमांक भी दिया रहता है। पाठकों द्वारा ग्रन्थमाला की मांग की पूर्ति हेतु ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि तथा ग्रन्थमाला की अभिगम पूर्ति हेतु ग्रन्थमाला सम्पादक नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि का प्रावधान सी सी सी सूची संहिता में किया गया है।

इसी प्रकार सामान्य समिश्र ग्रन्थ (संकलित ग्रन्थ जिनमें सम्पादक या संकलनकर्ता लेखकों की रचनाओं को संकलित कर प्रकाशित करता है), अभिनन्दन ग्रन्थ एवं कृत्रिम समिश्र ग्रन्थ जिनका निर्माण प्रकाशक द्वारा दो या अधिक ग्रन्थों को एक साथ प्रकाशित कर अथवा ग्रन्थालय द्वारा दो या अधिक ग्रन्थों को एक साथ जिल्दबंद कर किया जाता है, का भी ग्रन्थालयों में होना सामान्य है। इन दोनों प्रकार की पाद्य सामग्री के सूचीकरण हेतु विशेष नियमों का प्रावधान किया जाता है। इस इकाई में इन्हीं नियमों का सोदाहरण वर्णन किया गया है।

2. ग्रन्थमाला (Series)

2.1 ग्रन्थमाला की परिभाषा (Definition of Series)

सी सी सी नियमांक FH के अन्तर्गत ग्रन्थमाला को निम्नलिखित प्रकार प्रकाशित किया गया है :-

ग्रन्थों का ऐसा समूह जो किसी ग्रन्थ का मूलभाग नहीं होता और जिसमें निम्नलिखित विशेषतायें होती हैं : -

1. सामान्यत: ग्रन्थों का प्रकाशन क्रमिक रूप से एक ही प्रकाशक अथवा निकाय या व्यक्ति के द्वारा किया जाता है,
2. प्रत्येक ग्रन्थ की अपनी स्वतन्त्र एवं पृथक आख्यायें होती हैं एवं उनकी अपनी अन्य विशेषतायें होती हैं,
3. प्रत्येक ग्रन्थ का प्राय: पृथक लेखक होता है,
4. सम्पूर्ण समूह का बोध कराने के लिये एक सामूहिक आख्या होती है, जिसे ग्रन्थमाला का नाम दिया जाता है। इस नाम का प्रयोग सभी ग्रन्थों, जो उस ग्रन्थमाला के अन्तर्गत प्रकाशित होते हैं, में मुद्रित रहता है,
5. प्रत्येक ग्रन्थ का एक पृथक क्रमांक दिया रहता है।

2.2 ग्रन्थमाला के प्रकार एवं सूचीकरण के नियम (Types of Series and their Cataloguing Rules)

ग्रन्थमाला को निम्नलिखित श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है :

1. सामान्य ग्रन्थमाला (Simple Series)
2. ग्रन्थमाला की विविधता (Multiplicity of Series)
3. कृत्रिम ग्रन्थमाला (Pseudo Series)

2.2.1 सामान्य ग्रन्थमाला (Simple Series)

यदि ग्रन्थ में मात्र एक ही ग्रन्थमाला मुद्रित हो तो उसे सामान्य ग्रन्थमाला कहते हैं। ग्रन्थमाला टिप्पणी के निम्नलिखित तीन उपविभाग होते हैं :-

(i) ग्रन्थमाला का नाम
(ii) ग्रन्थमाला के सम्पादक का नाम
(iii) ग्रन्थमाला का क्रमांक या उसका स्थानापन्न

ग्रन्थमाला के नाम को ग्रन्थमाला टिप्पणी में लिखते समय उसके पूर्व लगे प्रारम्भिक उपपद (Initial articles) व आदर सूचक शब्दों को नियमाक JG4 के अनुसार हटाकर लिखा जाता है। इस टिप्पणी को वृत्ताकार कोष्ठक में द्वितीय शीर्ष से प्रारम्भ करते हुए लिखा जाता है और प्रत्येक उपविभाग के अन्त में पूर्ण विराम (.) का प्रयोग किया जाता है। (देखिये इस इकाई के मुखपृष्ठ 1 की मुख्य प्रविष्टि)

सामान्य ग्रन्थमाला बिना सम्पादक, एकल सम्पादक, दा सम्पादका एव दो से अधिक सम्पादकों सहित हो सकती है।

बिना क्रमांक वाली ग्रन्थमाला को मुख्य प्रविष्टि में अंकित करते समय नियमांक MF131 के अनुसार स्थानापन्न स्वरूप प्रकाशन वर्ष एवं प्रकाशन वर्ष भी अनुपलब्ध होने पर ग्रन्थालय में ग्रन्थों की अवाप्ति के क्रम में 1, 2, 3 आदि क्रमांक प्रदान किया जाता है।

एकल ग्रन्थमाला पुन: निम्नलिखित प्रकारों में विभक्त किया जा सकता है: -

1. प्रकाशक ग्रन्थमाला

उदाहरणार्थ Wiley Farm series
McGraw-Hill series in science

2. रूप ग्रन्थमाला

उदाहरणार्थ Everyman's reference library
Children reference library

3. विषय ग्रन्थमाला

उदाहरणार्थ Advances in chemistry series
Physical chemistry monograph series

4. अलंकारिक ग्रन्थमाला

उदाहरणार्थ Advances in library series
Thinkers library

5. नाम ग्रन्थमाला

उदाहरणार्थ Ranganathan series in library science

Kaula library science series

6. भाषण ग्रन्थमाला

उदाहरणार्थ Ranganathan lectures, 1955

The Hilbert lectures, 1957

7. शोध प्रबन्ध ग्रन्थमाला

उदाहरणार्थ University of Rajasthan, thesis, 1991,12

University of Delhi, dissertation, 1995,9

ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि की संरचना (Structure of series Index Entry)

ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि की संरचना निम्नलिखित प्रकार है : -

1. **अग्र अनुच्छेद :** अग्र अनुच्छेद में प्रथम शीर्ष से प्रारम्भ करते हुए ग्रन्थमाला का नाम बड़े अक्षरों (Blick Letters) में लिखा जाता है। ग्रन्थमाला के नाम के पूर्व लगे प्रारम्भिक उपपदों व आदर सूचक शब्दों को लिखने से पूर्व हटा दिया जाता है।

2. **द्वितीय अनुच्छेद :** द्वितीय अनुच्छेद में निम्नांकित सूचनायें अंकित की जाती हैं -

   1. प्रथम शीर्ष से प्रारम्भ करते हुए ग्रन्थमाला क्रमांक।
   2. द्वितीय शीर्ष से प्रारम्भ करते हुए मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक में प्रयुक्त व्यक्तिगत लेखक या लेखकों के मात्र प्रविष्टि पद तथा कृत्रिमनामधारी लेखक व समष्टि लेखक का पूरा नाम, कोलन चिन्ह (:) संक्षिप्त आख्या एवं संस्करण विवरण।
   3. निर्देशांक : द्वितीय अनुच्छेद वाली पंक्ति पर ही उचित स्थान होने पर अन्यथा अगली पंक्ति पर दाहिनी ओर पेन्सिल से अंकित किया जाता है।

(देखिये इस इकाई के सूचीकृत मुखपृष्ठ 1 की ग्रन्थमाला प्रविष्टि)

ग्रन्थमाला सम्पादक नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि (Editor of Series CRIE)

इस प्रविष्टि के तीन अनुच्छेद निम्नलिखित प्रकार होते हैं : -

1. अग्र अनुच्छेद : इसमें ग्रन्थमाला सम्पादक के नाम को नियमानुसार अर्थात प्रविष्टि तत्व बड़े अक्षरों में, गौण पद वृत्ताकार कोष्ठक में सामान्य अक्षरों में तथा विवरणात्मक पर, Ed. लिखा जाता है।

2. द्वितीय अनुच्छेद : इसमें See पद रेखांकित करते हुए अंकित किया है।

3. निर्देशित शीर्षक. इस अनुच्छेद में ग्रन्थमाला का नाम बड़े अक्षरों में अंकित जाता है।

(देखिये इस इकाई के सूचीकृत मुखपृष्ठ 2 की ग्रन्थमाला सम्पादक नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि)

2.2.2 ग्रन्थमाला की विविधता (Multiplicity of Series)

ग्रन्थमालाओं की विविधता के आधार पर निम्नलिखित प्रकारों में विभक्त किया जा सकता है :

1. स्वतन्त्र ग्रन्थमाला।

यदि किसी ग्रन्थ में एक से अधिक ग्रन्थमालायें मुद्रित हैं, एवं वे आपस में नहीं हैं तो उन्हें स्वतन्त्र ग्रन्थमाला कहते हैं।

'इस प्रकार की ग्रन्थमालाओं को मुख्य प्रविष्टि के टिप्पणी अनुच्छेद में अलग-वृत्ताकार कोष्ठक में लिखा जाता है। (देखिये इस इकाई का मुखपृष्ठ 5)

2. आश्रित ग्रन्थमाला

यदि किसी ग्रन्थ में एक से अधिक ग्रन्थमालाओं का उल्लेख हो, जिनमें से एक उप-ग्रन्थमाला हो जो अपनी मुख्य ग्रन्थमाला पर निर्भर करती हो, तो उसे आश्रित ग्रन्थमाला कहते हैं।

ऐसी ग्रन्थमालाओं को टिप्पणी अनुच्छेद में एक ही वृत्ताकार कोष्ठक में लिखते एवं मुख्य ग्रन्थमाला को उपग्रन्थमाला से सेमीकॉलम चिन्ह (;) द्वारा पृथक किया जाता है। (देखिये इस इकाई का मुखपृष्ठ 6)

3. वैकल्पिक ग्रन्थमाला

यदि किसी ग्रन्थमाला में अंकित ग्रन्थमालाओं में मध्य 'या' 'अथवा' (or) हो तो मूल ग्रन्थमाला के बाद पद or लिख कर वैकल्पिक ग्रन्थमाला का नाम लिखा जाता है। (देखिये इस इकाई का मुखपृष्ठ 7)

2.2.3 कृत्रिम ग्रन्थमाला (Pseudo series)

सी सी सी सूची संहिता में कृत्रिम ग्रन्थमाला को तीन प्रकारों में विभक्त किया है, जिनकी निम्नलिखित विशेषतायें होती हैं : -

1. कृत्रिम ग्रन्थमाला प्रकार - 1

ग्रन्थों का वह समूह जो सप्पुटीय ग्रन्थ नहीं होते एवं जिनमें निम्नलिखित विशेषतायें होती हैं :-

(i) सभी ग्रन्थों का लेखक तथा संस्करण एक ही होता है।

(ii) मूल संस्करण के अतिरिक्त प्रत्येक ग्रन्थ की पृथक एवं विशिष्ट आख्या होती हैं।

(iii) प्रत्येक ग्रन्थ का एक क्रमांक होता है।

उदाहरणार्थ

	0142,3	M28x N62
	3. 99321	TOLSTOY (Leo). Works: Childhood, boyhood and youth. Centenary Ed; ed (Tolstoy (Leo). Centenary eddied by Esther Piercy.5).

2. कृत्रिम ग्रन्थमाला प्रकार - 2

ग्रन्थों का ऐसा समूह जो सम्पुटीय ग्रन्थ नहीं होते हैं तथा जिनमें निम्नलिखित विशेषतायें होती है :

(i) सभी ग्रन्थों का एक ही लेखक होता है।

(ii) सभी ग्रन्थों की आख्याओं का एक ऐसा भाग होता है जिसे सामान्य आख्या के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

(iii) सामान्य भाग के अतिरिक्त प्रत्येक ग्रन्थ की अपनी एक पृथक एवं विशिष्ट आख्या होती है।

(iv) प्रत्येक ग्रन्थ को क्रमांक प्रदान किया जा सकता है, अथवा उसका अपना क्रमांक होता है।

(v) सामान्य आख्या के साथ लेखक के नाम का प्रयोग करने से ऐसा प्रतीत होता है कि वह एक ग्रन्थमाला है।

उदाहरणार्थ

	C5 N93	
	GRIMSHELL (E) Optics. Tr by L A Woodward. (GHrimshell (E) : Text books of physics. Ed by R Tomaschek. 4) . 99322	

3. कृत्रिम ग्रन्थमाला प्रकार - 3

निम्नलिखित विशेषताओं वाले ग्रन्थों का वह समूह जिसके कई सम्पुट ग्रन्थ नहीं होते उन्हें कृत्रिम ग्रन्थमाला प्रकार 3 कहा जाता है : -

(i) सभी ग्रन्थों का लेखक एक ही होता है।

(ii) सभी ग्रन्थों की एक सामान्य आख्या होती है।

(iii) सामान्य आख्या के अतिरिक्त प्रत्येक ग्रन्थ की अपनी पृथक आख्या भी होती है।

(iv) प्रत्येक ग्रन्थ का एक क्रमांक भी होता है।

(v) सामान्य आख्या का प्रयोग ग्रन्थमाला के रूप में किया जा सकता है।

उदाहरणार्थ

	V56'I9 N20	
	OMAN (Charles) Histiry of England from the accession of Richard II to death of Richard III (1377-01485). (Hunt (William) and Pool (Regnald), Ed: Political History of England. 4). 99323	

3. समिश्र ग्रन्थ (Composite Books)

3.1 अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definiution)

ऐसा ग्रन्थ, जिसके विभिन्न अंशों या लेखों को अलग-अलग लेखकों द्वारा लिखा गया हो परन्तु उसको एक ही ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित किया गया हो, को समिश्र ग्रन्थ कहते हैं।

ए ए सी आर- 1 में समिश्र प्रकाशन (Composite Work) की निम्नलिखित परिभाषा दी गई है :

"ऐसी मौलिक रचना, जिसका सृजन विभिन्न लेखकों के पृथक एवं विशिष्ट योगदानों से मिलकर किसी सम्पूर्ण रचना के रूप में हुआ हो'

ए ए सी आर-2 की पारिभाषिक शब्दावली (Glossary) में समिश्र ग्रन्थ की कोई परिभाषा नहीं दी गई है। फिर भी संकलन (Collection) की परिभाषा में कुछ सीमा तक समिश्र ग्रन्थ के सम्मिलित किया जा सकता है।

सी सी सी में समिश्र ग्रन्थ नियमांक FF4 के अन्तर्गत निम्नलिखित प्रकार परिभाषित किया गया है : -

"ऐसा ग्रन्थ जिसमें दो या अधिक लेख दिये गये हों तथा प्रत्येक लेख की स्वयं की आख्या हो, वैचारिक तारतम्यता न हो, तथा सामान्यतया (आवश्यक रूप से नहीं) विभिन्न लेखकों द्वारा रचित हो, को समिश्र ग्रन्थ कहते हैं।"

3.2 प्रकार (Type)

सी सी सी में प्रदत्त नियमों के आधार पर समिश्र ग्रन्थ को दो प्रकारों में बांटा जा सकता है :-

(अ) सामान्य समिश्र ग्रन्थ (Ordinary Composite Book)

(ब) कृत्रिम समिश्र ग्रन्थ (Artificial Composite Book)

4. सामान्य समिश्र ग्रन्थों के सूचीकरण के नियम (Cataloguing Rules of Ordinary Composite Books)

सी सी सी में सामान्य समिश्र ग्रन्थ को निम्नलिखित प्रकार परिभाषित किया गया है:-

"ऐसा ग्रन्थ जिसके सभी लेखों को सामूहिक रूप से प्रदर्शित करने के लिये एक सामान्य आख्या (Generic Title) प्रदान की गई हो, को सामान्य समिश्र ग्रन्थ कहते हैं।"

सी सी सी में सामान्य समिश्र ग्रन्थ की विभिन्न प्रविष्टियों के निर्माण के लिये निम्नलिखित नियमों का प्रावधान है:-

4.1 मुख्य प्रविष्टि की संरचना (Structure of Main Entry)

सी सी सी में सामान्य समिश्र ग्रन्थ की मुख्य प्रविष्टि के लिये निम्नलिखित, नियमांक का प्रावधान है : -

नियमांक NAI : सामान्य समिश्र ग्रन्थ. को उसमें प्रदत्त लेखों के लेखकों की उपेक्षा करते हुए सामान्य ग्रन्थ के समान ही सूचीकृत किया जायेगा। अर्थात् मुख्य प्रविष्टि सम्पादक या संग्रहकर्त्ता के नाम से बनाई जायेगी और उसमें लेखों के लेखकी के नाम देने की आवश्यकता नहीं होती।

4.2 इतर प्रविष्टियों के प्रकार एवं उनकी संरचना (Types of Added Entries and their Structure)

सामान्य समिश्र ग्रन्थ के लिये निम्नलिखित प्रकार की इतर प्रविष्टियाँ आवश्यकतानुसार बनाई जाती हैं : -

1. विशिष्ट अन्तर्विषयी प्रविष्टि (Special Cross Reference Entry)
2. श्रृंखला अन्तर्विषयी प्रविष्टि (Chain Cross Reference Entry)
3. वर्ग निर्देशी प्रविष्टि (Class Index Entry)
4. ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि (Book Index Entry)
5. अंशदान निर्देशी प्रविष्टि (Contribution Index Entry)
   - 5.1. अंशदाता निर्देशी प्रविष्टि (Contributor Index Entry)
   - 5.2. अंशदाता सहकारक निर्देशी प्रविष्टि (Contributor-to- Contributor IndeEntry)
6. अभिनन्दन ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि (Festscrift Index Entry)
   - 6.1 अभिनन्दित ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि (Dedicatee Index Entry)
7. नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि (Cross Reference Index Entry)

उपर्युक्त्त क्रम 5 से 6.1 तक वर्णित प्रविष्टियां भी ग्रान्थ्ज निर्देशी प्रविष्टियां ही है, परन्तु उनकी संरचना सामान्य ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियों से थोड़ी भिन्न होती है।

4.2.1 विशिष्ट अन्तर्विषयी प्रविष्टि (Special Cross Reference Entry)

समिश्र ग्रन्थ बहुविषयी ग्रन्थ (Multifocal book) होने के कारण एक से अधिक विषयों से संबंधित होते हैं। लेखों के विषयों को पाठकों की दृष्टि में लाने के लिये विशिष्ट अन्तर्विषयी प्रविष्टियां बनाई जाती हैं। इन प्रविष्टियों की संरचना नियमांक NA21* के अनुसार निम्नलिखित प्रकार की होती है : -

1. निर्देशित किये जाने वाले लेख का वर्गांक (अग्र अनुच्छेद)
2. निर्देशित किये जाने वाले लेख का शीर्षक (व्यक्तिगत नाम की अवस्था में गौण पद व व्यष्टिकृत पद को हटाकर),
3. निर्देशित किये जाने वाले लेख की संक्षिप्त आख्या,
4. निर्देशक पद <u>See</u>
5. निर्देशित ग्रन्थ का मुख्य प्रविष्टि में प्रदत्त क्रामक अंक
6. निर्देशित ग्रन्थ का शीर्षक (व्यक्तिगत नाम की अवस्था में गौण पद व व्यष्टिकृत पद को हटाकर)

7.1 निर्देशित ग्रन्थ की संक्षिप्त आख्या,

7.2 पूर्ण विराम (.),

7.3 मुख्य प्रविष्टि में प्रदत्त संस्करण विवरण, तथा

7.4 निर्देशित ग्रन्थ में निर्देशित किये जाने वाले लेख का प्राप्ति स्थान जैसे P, Sec Chap, Part या अन्य कोई समकक्ष पद।

4.2.2 श्रृंखला अन्तर्विषयी प्रविष्टि (Chain Cross Reference Entry)

यदि निर्देशित किये जाने वाले लेख के किसी अंश विशेष को पाठकों की दृष्टि में लाना हो, तो इसके लिये श्रृंखला अन्तर्विषयी प्रविष्टि का प्रावधान है। इसकी संरचना नियमांक NA22* के अनुसार निम्नलिखित प्रकार है : -

1. द्वितीय श्रेणी के निर्देशित किये जाने वाले लेख के भाग का वर्गांक,
2. निर्देशक पद See also;
3. प्रथम श्रेणी के निर्देशित किये जाने वाले लेख का शीर्षक,

4.1 प्रथम श्रेणी के निर्देशित किये जाने वाले लेख की आख्या,

4.2 पूर्ण विराम (.)

4.3 द्वितीय श्रेणी के निर्देशित किये जाने वाले लेख के भाग का लेख में प्राप्ति स्थान जैसे P, See, Chap, Part या अन्य कोई समकक्ष पद,

5.1 वर्णनात्मक पद Forming.

5.2 प्रथम श्रेणी के लेख का मेजबान ग्रन्थ में प्राप्ति स्थान जैसे P, Sec, Chap, Part या अन्य कोई समकक्ष पद।

5.3 पद of तथा इसके बाद पूर्ण विराम नहीं लगेगा (.),

6. मेजबान ग्रन्थ मुख्य प्रविष्टि में प्रदत्त क्रामक अंक,

7. मेजबान ग्रन्थ का मुख्य प्रविष्टि में प्रदत्त शीर्षक (व्यक्तिगत नाम की अवस्था में गौण पद व व्यष्टिकृत पद हटाकर),

8.1 मेजबान ग्रन्थ की संक्षिप्त आख्या,

8.2 पूर्ण विराम (.),

8.3 मुख्य प्रविष्टि में प्रदत्त संस्करण विवरण (यदि दिया गया हो)

4.2.3 वर्ग निर्देशी प्रविष्टि (Class Index Entry)

सामान्य समिश्र ग्रन्थ की वर्ग निर्देशी प्रविष्टियां सामान्य ग्रन्थ के समान ही बनाई जाती हैं। यह ध्यान रखा जाना आवश्यक है कि पहले मेजबान ग्रन्थ के वर्गांक की वर्ग निर्देशी प्रविष्टियां बनाई जाती हैं तथा उसके बाद प्रथम श्रेणी के निर्देशित किये जाने वाले लेख तथा द्वितीय श्रेणी वाले निर्देशित किये जाने वाले लेख के भाग के वर्गांक से वर्ग निर्देशी प्रविष्टियां बनाई जाती हैं।

4.2.4 ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि (Book Index Entry)

सामान्य ग्रन्थ में बनने वाली सभी ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियां सामान्य सम्मिश्र ग्रन्थ के लिये भी बनाई जाती हैं।

4.2.5 अंशदाता निर्देशी प्रविष्टि (Contributor Index Entry)

मेजबान ग्रन्थ में सभी लेखों के लेखकों के लिये अंशदाता निर्देशी प्रविष्टि बनाई जायेगी। इस प्रविष्टि की संरचना नियमांक NA62* के अनुसार निम्नलिखित प्रकार होगी -

1. लेख के सहकारक का नाम,

2.1 लेख के लेखक का प्रविष्टि पद,

2.2 कोलन (:) चिन्ह

2.3 लेख की संक्षिप्त आख्या,

3. विवरणात्मक पद Forming तथा इसके बाद P, Sec, Chap, Part या अन्य पद

4. मेजबान ग्रन्थ का शीर्षक (व्यक्तिगत नाम की अवस्था में गौण, पद व पद हटाकर)

5.1 संक्षिप्त आख्या,

5.2 पूर्ण विराम,

5.3 मुख्य प्रविष्टि में प्रदत्त संस्करण विवरण, यदि कोई हो,,

6. मेजबान ग्रन्थ का क्रामक अंक, जो कि निर्देशांक के रूप में लिखा जायेगा।

4.2.7 अभिनन्दन ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि (Restschrift Index Entry)

किसी व्यक्ति अथवा संस्था के सम्मानार्थ प्रकाशित ग्रन्थों की सूची में एक स्थान पर एकत्रित करने के लिये अभिनन्दन ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि बनाये जाने का प्रावधान है। नियमांक NA7 के अनुसार इसकी संरचना निम्नलिखित प्रकार होगी -

1. अग्र अनुच्छेद में FESTSCHRIFT पद,
2. द्वितीय अनुच्छेद में अभिनन्दित व्यक्ति या संस्था का नाम (सूचीकरण नियमानुसार)
3. निर्देशांक ।

4.2.8 अभिनन्दित निर्देशी प्रविष्टि (Dedicatee Index Entry)।

नियमांक NA71 के अनुसार इस प्रविष्टि की संरचना निम्नलिखित प्रकार होगा: -

1. अभिनन्दित व्यक्ति या संस्था का नाम (सूचीकरण के नियमानुसार),
2. पद FESTSCHRIFT ।
3. निर्देशांक।

4.2.9 नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि (Cross Reference Index Entry) ।

पूर्व वर्णित सभी नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियां नियमानुसार बनाई जा सकती हैं इनके अतिरिक्त Festschrift पद के वैकल्पिक नामों यथा Commemoration Volume, Memorial Volume आदि से भी नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियां आवश्यकतानुसार बनाई जा सकती हैं।

4.3 संकेत (Tracing)

संकेत में विशिष्ट अन्तर्विषयी प्रविष्टि व श्रृंखला अन्तर्विषयी प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद की सूचना तथा प्राप्ति स्थान को बायी ओर अंकित किया जाता है तथा दाहिनी ओर की सूचनायें सामान्य ग्रन्थों के समान ही अंकित की जाती है।

5. कृत्रिम समिश्र ग्रन्थों के सूचीकरण के नियम (Cataloguing of Artificial Composite Books)

कृत्रिम समिश्र ग्रन्थों का सृजन कभी-कभी तो प्रकाशकों द्वारा दो या अधिक ग्रन्थों को एक साथ प्रकाशित करके किया जाता है तथा कभी कभी ग्रन्थालयों द्वारा जानबूझ कर अथवा अनजाने में किया जाता है।

पहली अवस्था में कृत्रिम समिश्र ग्रन्थ का सामूहिक मुखपृष्ठ (Common title page) भी हो सकता है, जबकि दूसरी अवस्था में इसकी कोई संभावना नहीं होती। कृत्रिम संमिश्र ग्रन्थ के सभी ग्रन्थों या भागों के अपने अलग अलग मुखपृष्ठ दिये रहते हैं सी सी सी में कृत्रिम समिश्र ग्रन्थ को निम्नलिखित प्रकार परिभाषित किया गया है : -

"ग्रन्थ में दिये गये सभी लेखों की यदि सामूहिक रूप से एक सामान्य आख्या न हो, तो उसे कृत्रिम समिश्र ग्रन्थ कहते हैं।"

सी सी सी में कृत्रिम समिश्र ग्रन्थ की विभिन्न प्रविष्टियों के निर्माण के लिये निम्नलिखित नियमों का प्रावधान है -

5.1 मुख्य प्रविष्टि की संरचना (Structure of Main Entry)

नियमांक NB1 के अनुसार कृत्रिम समिश्र ग्रन्थ की मुख्य प्रविष्टि प्रथम संघटक ग्रन्थ (First constituent work) की मुख्य प्रविष्टि के समान बनाई जायेगी केवल अन्य संघटक ग्रन्थों के लिये, प्रत्येक के लिये एक अनुच्छेद जोड़ा जायेगा इसी प्रकार अग्र अनुच्छेद में क्रमिक अंक के बाद दाहिनी ओर पद Composite book जोड़ा जाता है, जिसे प्रविष्टि हाथ से बनाते समय या टंकण करते समय रेखांकित किया जाता है तथा मुद्रण में टेढ़े अक्षरों (Italic) क् मुद्रित किया जाता है ।

संघटक ग्रन्थों के लिए जोड़ा जाने वाले अतिरिक्त अनुच्छेद में निम्नलिखित सूचनायें अंकित की जाती हैं : -

1. क्रमांक 2,
2. 2,. इससे सम्बन्धित शीर्षक,
3. चिन्ह कोलन (:)
4. आख्या, जिसका प्रथम अक्षर बड़ा होगा,
5. पूर्ण विराम (.),
6. टिप्पणी अनुच्छेद (यदि आवश्यक हो),
7. इसका क्रामक अंक (यथासंभव दाहिनी ओर)

इसी प्रकार किसी अन्य संघटक ग्रन्थ के लिये भी उपर्युक्त प्रकार से ही अनुच्छेद जोड़ा जाता है। मात्र उसका क्रमांक बदल जाता है। यदि सभी संघटक ग्रन्थों की एक ही ग्रन्थ माला हो, तो उसे प्रत्येक संघटक ग्रन्थ के बाद से लिखने की आवश्यकता नहीं है। उसे अन्तिम ग्रन्थ के क्रामक अंक के बाद वृत्ताकार कोष्ठक में लिखा जाता है यदि अलग अलग ग्रन्थों की अलग अलग ग्रन्थमालायें हो तो प्रथम संघटक ग्रन्थ की ग्रन्थमाला प्रथम ग्रन्थ की आख्या के बाद एवं अन्य संघटक ग्रन्थों की ग्रन्थमालायें उनके निर्देशकों के पहले लिखी जाती हैं।

5.2 इतर प्रविष्टियों की संरचना (Structure of Added Entries)

कृत्रिम समिश्र ग्रन्थ में निम्नलिखित प्रकार की सहायक प्रविष्टियों का निर्माण किया जाता है।

1. अन्तर्विषयी प्रविष्टि (Cross Reference Entry) यह दो प्रकार की होती है :

   1.1 विशिष्ट

   1.2 सामान्य
2. वर्ग निर्देशी प्रविष्टि (Class Index Entry)
3. ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि (Book Index Entry)
4. नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि (Cross Reference *Index* Entry)

   इन प्रविष्टियों की संरचना निम्नलिखित प्रकार होगी : -

5.2.1 विशिष्ट अन्तर्विषयी प्रविष्टि की संरचना (Structure of Special Cross Reference Entry)

सी सी सी नियमांक NB21. के अनुसार विशिष्ट अन्तर्विषयी प्रविष्ट के निम्नलिखित अनुच्छेद होते हैं : -

1. निर्देशित किये जाने वाले ग्रन्थ का क्रामक अंक (अग्र अनुच्छेद)
2. निर्देशित किये जाने वाले ग्रन्थ का शीर्षक (व्यक्तिगत नाम की अवस्था में गौण पद व व्यष्टिकृत पद हटाकर)
3. निर्देशित किये जाने वाले ग्रन्थ की आख्या, पूर्ण विराम (.) तथा मुख्य प्रविष्टि में प्रदत्त संस्करण विवरण, यदि कोई हो।
4. आवश्यकतानुसार वर्णनात्मक पद <u>Bound</u> as Part 2 <u>with</u> या <u>Printed as</u> Part 2 <u>with</u>
5. प्रथम संघटक ग्रन्थ का मुख्य प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद में प्रदत्त क्रमिक अंक
6. प्रथम संघटक ग्रन्थ का शीर्षक (व्यक्तिगत लेखक की अवस्था में गौण पद व व्यष्टिकृत पद हटाकर)
7. प्रथम संघटक ग्रन्थ की आख्या, पूर्ण विराम (.) तथा मुख्य प्रविष्टि में प्रदत्त संस्करण विवरण, यदि कोई हो ।

5.2.2 सामान्य अन्तर्विषयी प्रविष्टि (Ordinary Cross Reference Entry)

प्रत्येक संघटक ग्रन्थ के लिये नियमांक NB22* के अनुसार आवश्यकतानुसार सामान्य अन्तर्विषयी प्रविष्टियाँ बनाई जाती हैं।

5.2.3 ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि की संरचना (Structure of Book Index Entry)

प्रथम संघटक ग्रन्थ की ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियां सामान्य ग्रन्थ के समान ही बनाई जाती' है। नियमांक NB5* के अनुसार द्वितीय या अन्य संघटक ग्रन्थ की ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियों में द्वितीय अनुच्छेद के बाद निम्नलिखित अनुच्छेद जोड़े जाते है :-

1. आवश्यकतानुसार वर्णनात्मक पद <u>Bound</u> as Part 2 <u>with</u> या <u>Printed as</u> Part 2 <u>with</u>
2. प्रथम संघटक ग्रन्थ का शीर्षक (व्यक्तिगत नाम की अवस्था में गौण पद व्यष्टिकृत पद हटाकर)।
3. प्रथम संघटक ग्रन्थ की संक्षिप्त आख्या संस्करण सहित, यदि कोई हो
4. प्रथम संघटक ग्रन्थ का क्रामक अंक निर्देशांक के रूप में।

   अन्य प्रविष्टियां सामान्य ग्रन्थों के समान ही बनाई जाती हैं।

5.3 संकेत (Traching)

संकेत में विशिष्ट व सामान्य अन्तर्विषयी प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद भाग आदि को ओर अंकित किया जाता है तथा दाहिनी ओर की सूचनायें सामान्य ग्रन्थों के समान ही अंकित की जाती हैं।

6. सूचीकृत मुखपृष्ठ (Catalogued Title Pages)

मुखपृष्ठ 1

(एकल मुस्लिम नाम का लेखक, बिना क्रमांक की ग्रन्थमाला)

BASIC CONCEPTS OF THE QURAN

By

Abdul Raheem Qureshi

Aligarh,

Modern Publisher

1996

Other Information

Call No. Q7:2 N96

Acc. No.	33341
Pages	iv,345
Size	22.9 cm.
H.T.P.	Modern Islamic Studies.

मुख्य प्रविष्टि

	Q7.2	N96
	33341	QURESHI (Abdul Raheem). Basic Concepts of the quran. (Modern Islamic Studies. 1996).

संकेत

Scripture, Muhammadanism
Muhammadanism. Religion.
Religion
Qureshi (Abdul Raheem).
(Modern Islamic Studies.

Islam.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

SCRIPTURE, MUHAMMADANISM.

For documents in this Class and its Subdivisions, See the Classified Part of the catalogue under the Class Number Q7:2

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

	MUHAMMADANISM, RELGION.	
	Class	For documents ………………………………………………………………………………. Number Q7

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि -3

	RELGION.	
	Class	For documents ………………………………………………………………………………. Number Q

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - लेखक

	QURESHI (Abdul Raheem).	
		Basic concepts of the quran. Q7:2 N96

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि ग्रन्थमाला

	MODERN ISLAMIC STUDIES.	
	1996	Qureshi: Basic concepts of the quran. Q7:2 N96

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि-वैकल्पिक नाम

	ISLAM.	
		<u>See</u> MUHAMMADANISM.

टिप्पणी : -

1. मुख्य प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद में लेखक के प्रविष्टि पद एवं गौण पद नियमानुसार अंकित किये गये हैं। टिप्पणी अनुच्छेद में ग्रन्थमाला के नाम को नियमानुसार वृत्ताकार कोष्ठक में अंकित किया गया है। ग्रन्थमाला क्रमांक के अभाव में नियमांक MF131 के अनुसार प्रकाशन वर्ष का प्रयोग किया गया है।
2. नियमांक MK131 एवं MK231 के अनुसार ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि का निर्माण किया गया है। शीर्षक अनुच्छेद में नियमानुसार ग्रन्थमाला के नाम को बड़े अक्षरों में अंकित किया गया है।
3. अन्य इतर प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमानुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ -2

(ग्रन्थमाला क्रमांक सहित ग्रन्थमाला एवं एकल ग्रन्थमाला सम्पादक एवं ग्रन्थमाला क्रमांक सहित)

DIMENSIONS OF NUCLEAR PHYSICS

A Study of Neutron

By

William Andrew Kramer

LONDON

Edward Stanford Ltd.

1979

Other Information

Call No. C9B31 N79

Acc. No. 71199

Pages	xii, 1-215.
Size	22.5 cm.
H.T.P.	The International Series in Nuclear Physics. No. XIX. Edited by Joseph I.Parks.

मुख्य प्रविष्टि

	C9B31	N79
	Parks. 71199	KRAMER (William Andrew). Dimensions of nuclear physics: A Study of neutrons. (International series in nuclear physics. Ed by Joseph 14).

संकेत

Neutron, Nucleus, Physics. Nucleus, Physics. Physics Kramer (William Andrew). International series in nuclear physics. Parks (Joseph I), Ed. Nucleus, Physics.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	NEUTRON, NUCLEUS, PHYSICS.	
	For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number C9B31	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

	NUCLEUS, PHYSICS.	
	For documents .... Class Number C9B3	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 3

	PHYSICS.	
	For documents .... Class Number C	

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - लेखक

	KRAMER (William Andrew).	
	Dimensions of nuclear physics. C9B31 N79	

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि-ग्रन्थमाला

	INTERNATIONAL SERIES IN NUCLEAR PHYSICS.	
	14	Kramer: Dimensions of nuclear physics. C9B31 N79

नामान्तर प्रविष्टि-ग्रन्थमाला सम्पादक

	PARKS (Joseph E), Ed.	
		See INTERNATIONAL SERIES IN NUCLEAR PHYSICS.

टिप्पणी : -

1. मुख्य प्रविष्टि के टिप्पणी अनुच्छेद में ग्रन्थमाला को उसके नाम के पूर्व लगे उप पद The को नियमांक JF3 के अनुसार हटाकर लिखा गया है। उसके बाद ग्रन्थमाला सम्पादक का नाम तथा ग्रन्थमाला क्रमांक नियमानुसार अंकित किये गये हैं।
2. मुख पृष्ठ 1 के समान ही ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि बनाई गई है।
3. एकल ग्रन्थमाला सम्पादक के नाम से एक नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि बनाई गई है।
4. अन्य इतर प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमानुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ -3

(क्रमांक सहित ग्रन्थमाला एवं दो ग्रन्थमाला सम्पादक)

TEXT BOOK OF ALGEBRA

Prof. Gopi Nath

New Delhi,

Academic Publishers,

1985

Other Information

Call No.	B2 N85
Acc. No.	66321
Pages	xii, 419.
Size	21.9 cm.
H.T.P.	Pure and applied mathematics series. Edited by R.C. Saxena andG.C. Jain.No. XII

मुख्य प्रविष्टि

	B2 N85	
		GOPI NATH. Text book of algebra (Pure and applied mathematics series. Edited by R C Saxena and G C Jain.12)
	66321	

संकेत

Algebra, mathematics.
Mathematics.

Gopi Nath.
Pure and applied mathematics series.

Saxena (R C) and Jain (G C), Ed.
Jain (G C) and Saxena (R C), Ed.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

ALGEERA.

For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number B2

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि -2

MATHEMATICS.

For documents .... Class Number B

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - लेखक

GOPI NATH.

Text book of algebra. B2 N85

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - ग्रन्थमाला

PURE AND APPLIED MATHEMATICS SERIES.

12 Gopi Nath: Text book of algebra. B2 N85

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि - ग्रन्थमाला सम्पादक - 1

	SAXENA (R C) and JAIN (G C), Ed.	
		See PURE AND APPLIED MATHEMATICS SERIES .

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि - ग्रन्थमाला सम्पादक - 2

	JAIN (G C) and SAXENA (R C), Ed.	
		See PURE AND APPLIED MATHEMATICS SERIES .

टिप्पणी

1. मुख्य प्रविष्टि के टिप्पणी अनुच्छेद में ग्रन्थमाला के नाम के बाद दोनों सम्पादकों को and पद द्वारा जोड़ा कर लिखा गया है।
2. दोनों सम्पादकों के नाम से ग्रन्थ मांगने वाले पाठकों की पूर्ति हेतु दोनों सम्पादकों के नाम को स्थान परिवर्तन करते हुए दो ग्रन्थमाला सम्पादक नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियां बनाई गई हैं ।
3. अन्य इतर प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमानुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ - 4

(क्रमांक सहित ग्रन्थमाला एवं दो से अधिक ग्रन्थमाला सम्पादक)

TEACHING OF PHYSICAL CHEMISTRY

by

James A. Watson

Edited by

Paul Kelly

London,

Macmillan, 1976

Other Information

Call No. T:3(E:2) N79
Acc.No. 44331
Pages xii, 315
Size 23.8 cm.
H.T.P. Macmillan teaching technique series. Edited by Emily S. Dexter, Henry J. Dibble and Knud Jeppesen. No. Fifteen.

मुख्य प्रविष्टि

	T:3 (E2) N79	
		WATSON (James A). Teaching of physical chemistry. Ed by Paul Kelly. (Macmillan teaching technique series. Ed by Emily S
	Dexter	and others. 15).
	44331	

संकेत

Physical chemistry, teachings technique.
Teaching technique, Education.
Education.
Watson (James A).
Kelly (Paul), Ed.
Macmillan teaching technique series.
Dexter (Emily S) and others, Ed.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि -1

PHYSICAL CHEMISTRY, TEACHING TECHNIQUE.

For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number T:3 (E:2)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि -2

TEACHING TECHNIQUE, EDUCATION.

For documents .... Class Number T:3

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि -3

EDUCATION.

For documents .... Class Number T

लेखक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

WHTSON (James A).

Teaching of Physical Chemistry.

T:3 (E:2) N79

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - सम्पादक

	KELLY (Paul),Ed.	
		Watson: Teaching of Physical Chemistry. T:3 (E:2) N79

ग्रन्थमाला ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

	MACMLLAN TEACHING TECHNIQUE SERIES.	
	15	Watson: Teaching of Physical Chemistry. T:3 (E:2) N79

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि - ग्रन्थमाला सम्पादक

	Dexter (Emily S) and other, Ed.	
		See MACMILLAN TEACHING TECHNIQUE SERIES.

टिप्पणी. -

1. दो से अधिक ग्रन्थमाला सम्पादक होने के कारण मुख्य प्रविष्टि के टिप्पणी अनुच्छेद मात्र पहले सम्पादक के नाम के बाद and other लिख गया हैं।
2. मात्र पहले सम्पादक के नाम से ही एक ग्रन्थमाला सम्पादक नामांतर निर्देशी प्रविष्टि बनाई गई है।
3. अन्य इतर प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमानुसार बनाई गई है।

मुखपृष्ठ 5

(स्वतन्त्र ग्रन्थमाला)

FIVE LAWS OF LIBRARY SCIENCE

By

S.R. Ranganathjan

(2nd reprinted edition)

Bangalore,

Sarda Ranganathan Endowment for

Library Science, 1996

Other Information

Call No.	2 N 96
Acc. No.	44115
Pages	xii, 285
Size	24 cm.
H.T.P	Madras Library Association, Publication Series, 1; Ranganathan libray Science Series 4.
B.T.P.	RANGANATHAN (Shiyali Ramamrita) (1892-1972).

मुख्य प्रविष्टि

	2 N96	
	44115	RANGANATHAN (Shiyali Ramamrita) (1892-1972). Five laws of library science. Ed 2. (Madras Library Association, publication Series.1). (Ranganathan library science series.4).

संकेत

	Library science. Ranganathan (Shiyali Ramamrita) (1892-1972). Madras Library Association, publication Series. Ranganathan library science series.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि

	LIBRARY SCIENCE.	
	For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number	2

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-लेखक

	RANGANATHAN (Shiyali Ramamrit) (1892-1972)		
	Five laws of library science.Ed 2.	2	N96

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - ग्रन्थमाला - 1

	MADRAS LIBRARY ASSOCIATION, PUBLICATION SERIES.		
	1 Ranganathan : Five laws of library science. Ed 2.	2	N96

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - ग्रन्थमाला - 2

	RANGANATHAN LIBRARY SCIENCE SERIES.	
	4	Ranganathan : Five laws of library science. Ed2. 2 N96

टिप्पणी : -

1. ग्रन्थ में प्रदत्त दो स्वतन्त्र ग्रन्थमालाओं को मुख्य प्रविष्टि के टिप्पणी अनुच्छेद में अलग- अलग पैराग्राफ के रूप में अलग -अलग वृत्ताकार कोष्ठकों में अंकित किया गया है।
2. दोनों स्वतन्त्र ग्रन्थमालाओं के लिए दो अलग-अलग ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टियां बनाई गई हैं।
3. अन्य इतर प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमानुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ - 6

(आश्रित ग्रन्थमाला)

STUDIES IN SHIRLEY'S COMEDIES
OF LONDON LIFE

By

PANSON T. PARLIN

London,

Oxford University Press,

1951

Other Information

Call No.	0111,2J96:g (Y35) N51
Acc.No.	72211
Pages	xii, 211
Size	22.3 cm.
H.T.P.	University of Texas Bulletin 371; Humanistic series, 17; Studies in English, 2.

Note Full name of SAhirley is Julia Shirly

मुख्य प्रविष्ट

	0111,2J96:g(Y35) N51	
	72211	PARLIN (Janson T). Studies in Shirley's comedies of London life. (Universiry of Texas, bulletin, 371; Humanistic series, 17; Studies in English. 2).

संकेत

City Sociology, Criticism, Shirley (Julia), Drama.
Criticism, Shirley (Julia), Drama.
Shirley (Julia), Drama.
Drama, English.
English. Literature.
Literature.
Parlin (Hanson T).
University of Texas, bulletin.
University of Texas, bulletin: Humanistic series.
University of Texas, bulletin: Humanistic series; Studies in English.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि- 1

	CITY, SOCIOLOGY, CRITICISM, SHIRLEY (Julia), DRAMA.	
	For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number 0111,2J96:g (Y35)	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि- 2

	CRITICISM, SHIRLEY (Julia), DRAMA.	
	For documents……………………………………………………….. Class Number 0111,2J96:g	

वर्ग निर्देशों प्रविष्टि- 3

	SHIRLEY (Julia), DRAMA.	
	For documents……………………………………………………….. Class Number 0111,2J96	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि- 4

	DRAMA, ENGLISH.	
	For documents……………………………………………………….. Class Number 0111,2	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 5

	ENGLISH, LITERATURE.	
		For documents..
	Class Number	0111

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 6

	LITERATURE.	
		For documents..
	Class Number	0

लेखक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

	PARLIN (Hanson T).	
		Studies in Shirley's comedies of London life.
		0111,2J96:g(Y35) N51

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - ग्रन्थमाला- 1

	UNIVERSITY OF TEXAS, BULLETIN.	
	317 Parlin : Studies in Shirley's comedies of London Life.	0111,2J96:g(Y35) N51

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - ग्रन्थमाला- 2

	UNIVERSITY OF TEXAS, BULLETIN HUMANSTIC SERIES.	
	17	Parlin : Studies in Shirley's comedies of London life. 0111,2J96:g(Y35) N51

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - ग्रन्थमाला

	UNIVERSITY OF TEXAS, BULLETIN; HUMANSTIC SERIES; STUDIES IN ENGLISH.	
	2	Parlin : Studies in Shirley's comedies of London life. 0111,2J96:g(Y35) N51

टिप्पणी : -

1. उपयुक्त मुखपृष्ठ में मुख्य ग्रन्थमाला पर आश्रित दो ग्रन्थमालाएं दी गई हैं। इन्हें मुख्य प्रविष्टि के टिप्पणी अनुच्छेद में सेमीकोलन चिन्ह (;) अलग करते हुए लिखा जाता है।
2. आश्रित ग्रन्थमाला होने के कारण तीन ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टियां बनाई जाएगीं।
3. अन्य इतर प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमानुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ - 7

(वैकल्पिक ग्रन्थमाला)

MEGHADUTAM

By

KALIDAS

With translation into English Verse

and notes

by John Cooper

Varanasi,

Chowkhamba Sanskrit Series Office,

1987

Other Information

Call No.	015,1D40,5 N87
Acc. No.	99113
Pages	xii, 267
Size	24 cm.
H.T.P.	Chowkhamba Sanskrit Series or Varanasi Sanskri Granthamala, 13.

मुख्य प्रविष्ट

	015,1D40,5 N87	
		KALIDAS. Meghandutam. Tr by John Cooper. (Chowkhamba Sanskrit Sanskrit serties or Varanasi Sanskrit Granthamala. 13). 99113

संकेत

Meghandutam, Kalidas.
Kalidas. Poetry.
Poetry, Sanskrit.
Sanskrit, Literature.
Literature.
Chowkhamba Sanskrit series
Varanasi Sanskrit granthamala.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि- 1

	MEGHADUTAM, KALIDAS.	
	For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number 015,1D40,52	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि- 2

	KALIDAS, POETRY.	
	For documents.. Class Number 015,1D40	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि- 3

	POETRY, SANSKRIT	
	For documents... Class Number 015,1	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि- 4

	SANSKRIT, LITERATURE.	
	For documents.. Class Number 015	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि- 5

	LITERATURE.	
	13	For documents……………………………………………………………….
	Class	Number 0

ग्रन्थमाला ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि- 1

	CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES.	
	13	Kalides: Meghadutam. 015,1D40,5 N87

ग्रन्थमाला ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि- 2

	VARANASI SANSKRIT GRANTHAMALA	
	13	Kalides: Meghadutam. 015,1D40,5 N87

टिप्पणी:

1. ग्रन्थ के अर्ध मुखपृष्ठ पर दो ग्रन्थमालाएं दी गई हैं। जिन्हें or द्वारा अलग किया गया है, अर्थात वैकल्पिक ग्रन्थमाला दी गई है। इसे मुख्य प्रविष्टि टिप्पणी अनुच्छेद में एक ही वृत्ताकार कोष्ठक में मुख्य ग्रन्थमाला को अंकित करने के बाद or लिखने के बाद वैकल्पिक ग्रन्थमाला को लिखा जाता है।
2. ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टियों के शीर्षक अनुच्छेद में दोनों ग्रन्थमालाओं के नाम को बड़े अक्षरों में लिखा जाता है।
3. अन्य इतर प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमानुसार बनाई गई है।

मुखपृष्ठ - 8

(सामान्य समिश्र ग्रन्थ)

WORKING WOMEN

An International Survey

Edited by

Marilyn J. Davidson

Carry L. Cooper

John Wiley & Sons

New York

1984

Other Information

Call No.	Y15-49.1 M4
Acc. No.	17721
Pages	304
Size	23 cm.
Note:	There are 11 contribution in this book. Out of which following is to be highlighted : Woman at work in the USSR by Maggie Andrew, pages 269-304 with class number Y15-49.58

मुख्य प्रविष्टि

	Y15-49.1 M4	
	17721	DAVIDSON (Marilyn J) and COOPER (Carry L), Ed. Working women: An International survey.

संकेत

Y15-49.58 P 269-304.	World, Working class, woman, Sociology. Working class, Woman, Sociology. Woman, Sociology. Sociology. Russia, Working class, Woman, Sociology. Davidson (Marilyn J) and Cooper (Carry L), Ed. Cooper (Carry L) and Davidson (Marilyn J), Ed. Andrew (Maggie).

विशिष्ट अन्तर्विषयी प्रविष्टि

	Y15-49,58	
		Andrew. Woman at work in the USSR. <u>See</u> Y115-49.1 M4 Davidson and Cooper, Ed. Working women. P 269-304.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	WORLD, WORKING CLASS, WOMAN, SOCIOLOGY.
	For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the class Number Y15-49.1

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि -2

	WORKING CLASS, WOMAN, SOCIOLOGY.	
	Class	For documents.. Number Y15-49

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 3

	WOMAN, SOCIOLOGY.	
	Class	For documents.. Number Y15

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि -4

	SOCIOLOGY.	
	Class	For documents................................. Number Y

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि -5

	RUSSIA, WORKING CLASS, WOMAN, SOCIOLOGY.	
	Class	For documents... Number Y15-49.58

लेखक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - 1

	DAVIDSON (Marilyn J) and COOPER (Carry L), Ed.	
		Working women. Y15-49.1 M4

लेखक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - 2

	COOPER (Carry L) and DAVIDSON (Marilyn J), Ed.	
		Working women. Y15-49.1 M4

अंशदाता निर्देशी प्रविष्टि

	ANDREW (Magie).	
		Women at work in the USSR. Forming P 269-304 of Davidson and Cooper, Ed. Working women. T15-49.1 M4

टिप्पणी : -

1. ग्रन्थ के सामान्य समिश्र ग्रन्थ होने के कारण इसे सामान्य ग्रन्थ के सामान सूचित किया गया है, अर्थात् मुख्य प्रविष्टि सहकारक के नामान्तर्गत बनाई गई है। पाठकों की दृष्टि में लाये जाने वाले भाग को संकेत में बांई ओर पहले वर्गांक पेंसिल में तथा उसके पृष्ठों आदि की सूचना अंकित की गई है।
2. पाठकों की दृष्टि में लाये जाने वाले अंशदान हेतु एक विशिष्ट अन्तर्विषयी नियमांक NA21* के अनुसार बनाई गई है।
3. उपर्युक्त प्रविष्टि के वर्गांक से भी वर्ग निर्देशी प्रविष्टि- 5 बनाई गई हैं।
4. नियमांक NA62* के अनुसार अंशदान निर्देशी प्रविष्टि बनाई गई है।
5. इन्य इतर प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमानुसार बनाई गई है।

मुखपृष्ठ - 9

(सामान्य समिश्र ग्रन्थ: अभिनन्दन ग्रन्थ)

HISTORY AND SOCIETY

Essays in Honour of Professor Niharranjan Ray

Edited by

DEBI PRASAD CHATTOPADHYAYA

Calcutta,

K.P. Bagchi & Company,

1978

Other Information

Call No.	V0a T N78
Acc. No.	30177
Pages	vii, 385
Size	25 X 15 cm.
Note	Out of the several contributions by different authors, the following contribution is to be brought to the notice of the readers: History of Rural Civilzation by B.K. Naidu, Page 301-322 with class number Y31:1y

मुख्य प्रविष्टि

	0aY	N78
	30177	CHATTOPADHYAYA (Debi Prasad), Ed. History and society : Essays in honour of Professor Niharanjan Ray.

संकेत

Y31:1v P 301-22.	Sociology, in relation to History. History. History, Civilzation, Rural, Sociology. Civilization, Rural, Sociology. Rural, Sociology. Sociology. Chattopadhyaya (Debi Prasad), Ed. Naidu (B K). Festschrift. Ray (Niharranjan), Ded. Culture.

विशिष्ट अन्तर्विषयी प्रविष्टि

	Y31:1v	
		Naidu. History of rural civilization. <u>See</u> V0aY N78 Chattopadhyaya, Ed. History and Society. P 301-22.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	SOCILOY, in relation to HISTORY.
	For documents in this Class and its Subdivision, See the Classified Part of the catalogue under the Class Number VoaY

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

	HISTORY.	
	For documents............................ Class Number	V

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 3

	HISTORY, CIVILIZATION, RURAL, SOCIOLOGY.	
	For documents.. Class Number	Y31:1v

वर्ग निर्देशी प्रविई - 4

	CIVILIZATION, RURAL, SOCIOLOGY.	
	For documents.. Class Number	Y31:1

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 5

	RURAL, SOCIOLOGY.	
	For documents.. Class Number	Y31

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 6

	SOCIOLOGY.	
	For documents..	
	Class Number	Y

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - लेखक

	CHATTIOPADHYAYA (Debi Prasad), Ed.	
	History and society.	V0aY . N78

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - अंशदाता

	NAIDU (B K)	
	History of rural civilization. Forming P 301-22 of Chattopadhyaya, Ed. History and Society.	V0aY N78

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - अभिनन्दन ग्रन्थ

	FESTSCHRIFT.	
	Ray (Niharranjan).	V0aY N78

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - अभिनन्दित व्यक्ति

	RAY (niharranjan), Ded.	
		FESTCHRIFT. V0aY N78

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि - वैकल्पिक नाम

	CULTURE.	
		See CIVILIZATION.

टिप्पणी

1. उपर्युक्त ग्रन्थ अभिनन्दन ग्रन्थ है जो किसी व्यक्ति के सम्मान में प्रकाशित किया गया है। अभिनन्दन ग्रन्थ के सामान्य समिश्र ग्रन्थ होने के कारण इसके मुख्य प्रविष्टि मुख पृष्ठ 8 के समान ही बनाई गई है।
2. विशिष्ट अन्तर्विषयी प्रविष्टि एवं अंशदाता निर्देशी प्रविष्टि भी मुख पृष्ठ 8 के समान ही बनाई गई है
3. अभिनन्दन ग्रन्थ हेतु नियमांक NA 7 एवं NA71 के अनुसार दो ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियां - अभिनन्दन ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि तथा अभिनन्दित निर्देशी प्रविष्टि बनाई गई है।
4. अन्य इतर प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमानुसार बनाई गई है।

मुखपृष्ठ 10

(कृत्रिम समिश्र ग्रन्थ)

NAPOLEAN TO NASSER

The Story of Modern Egypt

By

Raymond Flower

(Second Edition)

New York

Doubleady Inc. 1972

CAIRO DOCUMENTS

The Inside Story of Nasser and his relationship

With World leaders, rebels and statesmen

By

M.H. Heikal

London

Stenes & Sons Ltd.

1973

Other Information

	First book	Second book	
Call No.	V677'N L2	V677:191'N7	L3
Acc. No.	12455	14615	
Pages	125	119	
Note:	Both the volumes are bound together in library.		

मुख्य प्रविष्टि

	V677'N7 L2	**Composite book**
		FLOWER (Raymond). Napoleon to Nasser: The story of modern Egypt. Ed 2. 2 Helical (M H) : Cairo documents : The inside story of Nasser and his relationship with world leaders, rebels and statesmen. V 677 : 191'N7 L3 12455

संकेत

V677:191'N7 L3 Part 2.	Egypt, History. History. World, Foreign policy, Egypt. Foreign policy, Egypt. Flower (Raymond). Heikal (M H).

विशिष्टि अन्तर्विषयी प्रविष्टि

	V677 :	191'N7 L3
		Heikal. Cairo documents. Bound as Part 2 with V677'N7 L2 Flower. Napolean to Nasser.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	EGYPT, HISTORY.	
	Number	For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class V677

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

	HISTORY.	
	Class	For documents... Number V

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 3

	WORLD, FOEIGN POLICY, EGYPT.	
	Class	For documents................................ Number V677:191

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 4

	FOREIGN POLICY, EGYPT.	
	Class	For documents................................. Number V677:19

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि-लेखक-(प्रथम ग्रन्थ)

	FLOWER (Raymond)	
		Napolean to Nasser. Ed2. V677'N7 L2

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि-लेखक-(द्वितीय ग्रन्थ)

	HEIKAL (M H)	
		Cairo documents. Bound as Part 2 with Flower. Napolean to Nasser. Ed2. V677'N7 L2

टिप्पणी : -

1. उपर्युक्त ग्रन्थ के कृत्रिम समिश्र ग्रन्थ होने के कारण इसकी मुख्य प्रविष्टि में नियमांक NBI के अनुसार अग्र अनुच्छेद में प्रथम ग्रन्थ का क्रामक अंक अंकित किया गया है तथा दाहिनी और Composite book पद जोड़ा गया है। तथा संघटक ग्रन्थ के लिये अतिरिक्त अनुच्छेद जोड़ा गया है। दूसरे ग्रन्थ का क्रामक अंक निर्देशक अंक के रूप में दाहिनी ओर अंकित किया गया है। मुख्य प्रविष्टि में परिग्रहण संख्या भी सदैव प्रथम ग्रन्थ की ही अंकित की जाती है।
2. नियमांक NB21* के अनुसार विशिष्ट अन्तर्विषयी प्रविष्टि बनाई गई है। तथा इसके वर्गांक से भी वर्ग निर्देशी प्रविष्टि 3 एवं 4 बनाई गई है।
3. नियमांक NB 5* के अनुसार द्वितीय ग्रन्थ लेखक निर्देशी प्रविष्टि बनाई गई है।
4. अन्य इतर प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमानुसार बनाई गई है।

7. अभ्यास के लिए मुखपृष्ठ (Title pages for Practice)

मुखपृष्ठ - 1

(ग्रन्थमाला क्रमांक रहित)

INDO-PAK RELATIONS

(1947-1990)

By

Prof. Ramesh Chandra

Edited by

Prof. G.S. Dhillon

Bombay,

Popular Prakashan

1992

Other Information

Call No. V44:1944Q7'N90←N47 N92

Acc. No. 552211

Pages xii, 319

H.T.P. Indian foreign policy series.

मुखपृष्ठ - 2

(क्रमांक सहित ग्रन्थमाला एवं एकल ग्रन्थमाला सम्पादक)

MODERN NUCLEAR PHYSICS

by

Alvin M. Weinberg

London,

University Publications,

1989

Other Information

Call No. C9B31 N89

Acc. No. 91711

Pages iv, 319

Size 21.9 cm.

H.T.P. University series in nuclear physics. No. IX Edited by Mary F. Swell.

मुखपृष्ठ - 3

(क्रमांक सहित ग्रन्थमाला एवं दो सम्पादक)

DESCRIPTIVE GEOMETRY

By

Herbert Busemann

And

Paul J. Kelly

London

Academic Press,

1978

Other Information

Call No. B6:5 N78

Acc. No. 50113

Pages ix, 325

Size 21.9 cm.

H.T.P. Pure and applied mathematics monographs and textnooks series No. 11. Edited by Paul A. Smith and Samuel Eilenbert.

मुखपृष्ठ - 4

(क्रमांक सहित ग्रन्थमाला एवं दो से अधिक सम्पादक)

THE DETECTION AND MEASUREMENT OF INFRA-RED RADIATION

(Edition 3)

by

R.A. Smith

and F.E. John

Oxford

Clarendon Press

1991

Other Information

Call No. C56 N91

Acc. No. 44119

Pages ix, 211

H.T.P. Monographs on the physics and chrmistry of materials. Edited by Willis Jackson, H. Frohlich and N.F. Mott. No. IX.

मुखपृष्ठ - 5

(स्वतन्त्र ग्रन्थमाला)

COLON CLASSIFICATION

by

S.R. RANGANATHAN

(6th revised edition)

BANGLORE

Sarda Ranganathan Endowment for Library Science

1992

Other Information

Call No. 2:51N3 qN92

Acc. No. 115566

Pages 124, 172, 126

H.T.P. Ranhanathan Series in Library Science; 4. Madras Library Association, Publication series; 26.

मुखपृष्ठ - 6.

(आश्रित ग्रन्थमाला)

FIELD GUIDE FOR BIRDS, WILD FLOWERS AND NATURE STUDY

by

LEO AUGUSTS HAUSMANN

New York

Grosset and Dunlop,

1948

Other Information

Call No. G:11 N48

Acc. No. 57771

Pages ix, 411

Size 23 cm.

H.T.P. Grosset's Library of Practical Handbooks; 19-Birds and Wild Flowers Series; 3.

मुखपृष्ठ - 7

(वैकल्पिक ग्रन्थमाला)

ABHIGYAN SHAKUNTALAM

OF KALIDASA

Translated into English verse and notes

By

Narain Shastri Khiste

Varanasi

Kashi Sanskrit Bhandar,

1981

Other Information

Call No.	O15, 1D40,1 N81
Acc. No.	22113
Pages	ix, 415
Size	21.9 cm.
H.T.P.	Kashi Sanskrit Series or Harihar Sanskrit Granthamala;88.

मुखपृष्ठ - 8

(सामान्य समिश्र ग्रन्थ)

THE TEACHING OF PSYCHOLOGY

Method, Content and Context

Edited by

John Redford

David Rose

New Delhi

John Wiley & Sons,

1981

Other Information

Call No.	T:3 (S)	N81
Acc. No.	88001	
Pages	vii, 299	

Size 2 cm.

H.T.P. There are 17 contributions in this book. Out of which the following is to be hightlighted:
Experimental Methods by James Martin, p51-68 Class Number of this portion is T: 3 (S), 8

मुखपृष्ठ - 9

(सामान्य समिश्र ग्रन्थ: अभिनन्दन ग्रन्थ)

THE ANALYSIS OF INTERNATIONAL POLITICS

Essays in Honour of Prof. Margaret Sprout

Edited by
James N. Roenu

The Free Press,
New York
1972

Other Information

Call No. 2:19 L2

Acc. No. 99113

Pages 391

Note: Contains contributions from different authors. One important contribution by Cyril E. Black entitled British Interpretations of the World history' with class No. V1: g (z56) pages 371-391 is to be highlighted.

मुखपृष्ठ - 10

(कृत्रिम समिश्र ग्रन्थ)

POLITICS IN THE SUDAN

Readings in Political parties and pressure groups

Editor by
Henry A. Turner

New York

McGraw-Hill Book Co.,

1965

NEW VIEWPOINTS IN THE SOCIAL SCIENCES

Edited by

Roy A. Price

Washington,

National Council for the Social Studies

1963

Other information

	First book		**Second book**
Call No.	V678,4	N65	SXv N03
Acc. No.	21421		234514
Pages	ix, 134		ii, 117
Note:	Both the books have been bound together in library.		

8. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थ सूची (Bibliography)

1. सूद (एस पी) : सूचीकरण प्रक्रिया. जयपुर, आर.बी.एस.ए., 1998.
2. वर्मा (ए के) : क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण, रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999.
3. Krishna Kumar: An introduction to cataloguing practice. New Delhi, Vikas, 1996.
4. Ranganathan (S R): Classified catalogue code etc. Ed 5. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.
5. Ranganathan (S R): Cataloguing practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1994.

इकाई - 9 : ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण : बहु खण्डीय ग्रन्थ (Practical Cataloguing of Books : Multi-Volumed Books)

उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य हैं : -

1. बहु खण्डीय ग्रन्थ का अर्थ स्पष्ट कर परिभाषित करना
2. बहु खण्डीय ग्रन्थ के विभिन्न प्रकारों की गणना करना, पूर्ण संघात, अपूर्ण संघात, अपूर्ण उपलब्ध संघात तथा अपूर्ण एवं अपूर्ण उपलब्ध संघात बहु खण्डीय ग्रन्थों के सूचीकरण नियमों की जानकारी कराना।

संरचना

1. विषय प्रवेश
2. बहु खण्डीय ग्रन्थ की परिभाषा
3. बहुखण्डीय ग्रन्थों के प्रकार
4. बहु खण्डीय ग्रन्थ प्रकार- 1 के सूचीकरण के नियम
5. बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार-2 के सूचीकरण के नियम
6. सूचिकृत मुखपृष्ठ
7. अभ्यास के लिये मुखपृष्ठ
8. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची

1. विषय प्रवेश (Introduction)

अधिकतर ग्रन्थ एक खण्डीय ही होते हैं। परन्तु कुछ विशेष कारणों से यथा विशाल आकार, प्रकाशित होने में समयान्तर अथवा उपयोग की सुविधार्थ कुछ ग्रन्थ बहु खण्डीय भी होते हैं। बहु खण्डीय ग्रन्थ के सभी खण्डों में सामान्यतया वैचारिक नैरंतर्य पाया जाता है तथा सभी खडों की एक सामान्य आख्या भी होती है। जहां कभी-कभी सभी खण्डों में सतत् पृष्ठांकन पाया जाता है, वहां कुछ में अलग-अलग खण्ड का अलग-अलग पृष्ठाकन होता है।

2. बहु खण्डीय ग्रन्थ की परिभाषा (Definition of Multi-Volumed Book)

सीसीसी में बहु खण्डीय ग्रन्थ को नियमांक FF33 के अन्तर्गत निम्नलिखित प्रकार परिभाषित किया गया है :-

"दो या अधिक खण्डों में प्रकाशित तथा वैचारिक नैरंतर्य वाला ग्रन्थ और इस अथवा अन्य कारणवश खण्डों में प्रदत्त विचार सामग्री का विभाजन समस्त खण्डों में इस प्रकार का हो, कि सभी खण्ड एक संघात (Set) के समान हो अर्थात् वे सब मिलकर एकल खण्ड का निर्माण करते हों।"

ए ए सी आर-2 के परिशिष्ट-डी में दी गई पारिभाषिक शब्दावली में बहुखण्डीय ग्रन्थ को निम्नांकित रूप से परिभाषित है :-

"ऐसा ग्रन्थ जो निश्चित पृथक-पृथक भागों में या तो सम्पूर्ण हुआ हो अथवा सम्पूर्ण होने वाला हो।"

(इस इकाई में वर्णित सभी नियमांक रंगनाथनकृत क्लासीफाइड केटलॉग कोड तथा तारांकित सभी नियमांक रंगनाथनकृत केटालागिंग प्रेक्टिस में दिये गये हैं।)

3. बहुखण्डीय ग्रन्थों के प्रकार (Type of Multi-volumed Books)

सूचीकरण की दृष्टि से बहुखण्डीय ग्रन्थों को दो प्रकारों में विभक्त किया गया हैं-

1. बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार-1
2. बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार-2

4. बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार- 1 के सूचीकरण के नियम (Cataloguing Rules of Multi-volumed Type-1)

वह बहुखण्डीय ग्रन्थ जिसके सभी संघटक खण्डों की सामान्य आख्या के अपनी विशिष्ट आख्या न हो तथा सभी खण्डों में अन्य किसी प्रकार का अन्तर न हो, को बहुखण्डीय ग्रन्थ-1 कहते हैं।

सूचीकरण के दृष्टिकोण से इन्हें पुन: निम्नलिखित चार प्रकारों में विभक्त गया है : -

1. पूर्ण संघात (Complete Set)
2. अपूर्ण संघात (Uncomplete Setp)
3. 3 अपूर्ण उपलब्ध संघात (Incomplete Set)
4. अपूर्ण तथा अपूर्ण उपलब्ध संघात (Uncomplete and Information Set)

4.1 पूर्ण संघात (Complete Set)

यदि ग्रन्थ के सभी खण्ड प्रकाशित हो चुके हों तथा ग्रन्थमाला में उपलब्ध तो ऐसे बहुखण्डीय ग्रन्थ को पूर्ण संघात कहते हैं। ऐसे पूर्ण संघात को सूचीकृत करते हेतु मुख्य प्रविष्टि के आख्या अनुच्छेद में एक अतिरिक्त वाक्य जोड़ा जाता है। इस वाक्य में निम्नलिखित सूचनायें दी जाती हैं: -

1. ग्रन्थ के खण्डों की संख्या,
2. पद V या इसके समकक्ष अन्य कोई पद।

उदाहरणार्थ

	1123 - 1125	History of India. 3 V.

4.2 अपूर्ण संघात (Uncomplete set)

यदि ग्रन्थ के सभी खण्ड अभी प्रकाशित न हुए हों अर्थात् कुछ खण्ड प्रकाशित हो चुके हों तथा शेष प्रकाशनाधीन हों तो उसे अपूर्ण संघात कहते हैं। ऐसे अपूर्ण संघात को सूचीकृत करने हेतु अतिरिक्त वाक्य में निम्नलिखित सूचनायें दी जाती हैं -

1. पद V
2. अभी तक प्रकाशित खण्ड तथा छोटी आडी रेखा

यदि अतिरिक्त वाक्य पैंसिल से लिखा जाता है। इस अवस्था में प्रविष्टि को खुला (Open) माना जाता है।

उदाहरणार्थ

	1516-1518	Introduction to physical chemistry. V1-3- ↑ (In pencil)

4.3 अपूर्ण उपलब्ध संघात (Incomplte set)

यदि ग्रन्थ के सारे खण्ड प्रकाशित तो हो चुके हों, परन्तु ग्रन्थालय में उपलब्ध न हों तो उसे अपूर्ण उपलब्ध संघात कहते हैं। ऐसे अपूर्ण उपलब्ध संघात को सूचीकृत करने हेतु नियमांक।NC13 के अनुसार दिये गये अतिरिक्त वाक्य के आगे नियमांक NC132 के अनुसार एक वाक्य लिखा जायेगा। इस वाक्य में निम्नलिखित सूचनायें दी जाती हैं -

1. पद V
2. 2 ग्रन्थालय में अनुपलब्ध खण्डों की संख्या,
3. 3 पद not in library

उदाहरण

	5115-5118	Introduction to British empire. 5 V [V 4 not in library] ↑ (in pencil)

बहुखण्डीय ग्रंथों की ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियों के आख्या अनुच्छेद में संक्षिप्त आख्या के बाद अतिरिक्त वाक्य को सदैव जोड़ा जाता है।

5. बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार-2 के सूचीकरण के नियम (Cataloguing Rules of Multi-volumed Type-2)

वह बहुखण्डीय ग्रन्थ जो प्रकार 1 के अन्तर्गत नहीं आता उसे बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार 2 कहते हैं। दूसरे शब्दों में ऐसे बहुखण्डीय ग्रन्थ जिनकी सामान्य आख्या के अतिरिक्त प्रत्येक खण्ड की अपनी विशेष आख्या भी होती है, इस श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं।

बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार -2 को सूचीकृत करने के लिये नियमांक NC2 के अनुसार उन्हें बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार -1 के नियमांकों के अनुसार ही सूचीकृत किया जाता है तथा नियमांक NC21 के अनुसार मुख्य प्रविष्टि के आख्या अनुच्छेद में प्रत्येक खण्ड के लिये एक-एक अनुच्छेद (Paragraph) जोड़ा जाता है। इसमें निम्नलिखित सूचनायें दी जाती है :-

1. 1: पद V
2. खण्ड की संख्या,
3. पूर्ण विराम (.),
4. खण्ड की विशेष आख्या,
5. पद by तथा इसके बाद उस खण्ड के लेखक/लेखकों के नाम (यदि दिये गये हों),
6. पूर्ण विराम (.),
7. यदि उस खण्ड का कोई सहकारक हो तो उसका नाम,
8. पूर्ण विराम (.), तथा
9. यदि आवश्यक हो तो वृत्ताकार कोष्ठक में विशेष सूचना

उदाहरणार्थ

	2119-2121	History of india. 3 V. V 1. Ancient period. V 2. Medieval period. V 3. Modern period.

बहु खण्डीय ग्रन्थ द्वितीय प्रकार की ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियों में खण्डों की सूचना तो दी जाती है पर उपर्युक्त अनुच्छेद (Paragraph) में प्रदत्त सूचनाओं को नहीं लिखा जाता है।

बहु खण्डीय ग्रन्थ प्रकार-2 को भी बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार-1 के समान पुन: निम्नखित चार प्रकारों में विभक्त किया जा सकता है -

1. पूर्ण संघात (Complete set)
2. 2 अपूर्ण संघात (Uncomplete set)
3. अपूर्ण उपलब्ध संघात (Incomplete set)
4. अपूर्ण तथा अपूर्ण उपलब्ध संघात (Uncomplete and Incomplete set)

इन चारों प्रकारों की खण्डों की सूचना को बहु खण्डीय ग्रन्ध प्रकार-1 के समान ही आख्या अनुच्छेद में अंकित किया जाता है।

बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार-1 एवं बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार-2 संबंधी कुछ अन्य नियम निम्नांकित हैं।

नियमांक NC3* के अनुसार बहुखण्डीय भव्यों की मुख्य प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद में प्रदत्त क्रामक अंक में वर्गांक के बाद समावेशित अंकन (Inclusive notation) का प्रयोग करते हुए पहले प्रेथन खण्ड का ग्रन्थांक व to पद लिखने के बाद अन्तिम खण्ड का ग्रन्थांक लिखा जाता है। अपूर्ण संघात (Uncomplete set) की अवस्था में अंतिम ग्रन्थांक के बाद छोटी आड़ी रेखा खींची जाती हैं।

उदाहरणार्थ

1.	पूर्ण संघात	V56	N94, 1 to N94.4
2.	अपूर्ण संघात	Y31	N99.q to N99.3–
3.	अपूर्ण उपलब्ध संघात	T3	N85.1 to N85.4
4.	अपूर्ण तथा अपूर्ण उपलब्ध संघात	L:421	L2.1 to L2.3;L2.5--

नियमांक ED910 के अनुसार बहुखण्डीय ग्रन्थों की परिग्रहण संख्या को परिग्रहण अनुच्छेद में निम्नलिखित प्रकार से लिखा जाता है : -

1. संघात की प्रथम संख्या
2. छोटी आड़ी रेखा, तथा
3. संघात की अन्तिम संख्या

उदाहरणार्थ

15991 - 18999

नियमांक ED913 के अनुसार बहुखण्डीय ग्रन्थों की अक्रमिक परिग्रहण संख्याओं को निम्नलिखित प्रकार से लिखा जाता है : -

उदाहणार्थ

18894 - 19597, 18999

6. सूचीकृत मुखपृष्ठ (Catalogued Title Pages)

मुखपृष्ठ - 1

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 1: पूर्ण संघात)

NEW VISTAS IN RURAL ECONOMY

(in 5 volumes)

By

S.S. Yadav

and B.K. Gurjar

Pointer Publishers

Jaipur

1992

Other Information

Call No. X(Y31).44 N2.1-N2.5

	Pages	Acc. No.	Size
Vol. I	1-201	15116	22 cm.
Vol. II	202-511	15117	23 cm.
Vol. III	512-725	15118	24.3 cm.
Vol. IV	726-999	15551	25 cm.
Vol. V	1000-1423	15552	26 cm.

(It is a five volume set and all the volumes are available in the library)

मुख्य प्रविष्टि

	X (Y31).44 N2.1 to N 2.5
	YADAV (SS) and GURJAR (BK). New vistas in rural economy. 5 V. 15516-15118, 15551-15552

संकेत

India, Rural sociology, Economics. Rural Sociology, Economics. Economics... Yadav (SS) and Gurjar (BK). Gurjar (BK) and Yadav (SS)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

INDIA, RURAL SOCIOLOGY, ECONOMICS.

For documents in this clas and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number X(Y31).44

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

RURAL SOCIOLOGY, ECONOMICS.

For documents...

Class Number X(Y31)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 3

	ECONOMICS.	
	Class Number	For documents... X

लेखक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - 1

	YADAV (SS) and GURJAR (BK).	
		New vistas in rural economy. 5 V. X(Y31).44 N2.1 to N2.

लेखक वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

	GURJAR (BK) and YADAV (SS).	
		New vistas in rural economy. 5 V. X(Y31).44 N2.1 to N2.5

टिप्पणी :

1. मुख्य प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद में क्रामक अंक नियमांक NC3 के अनुसार अंकित किया गया है। उपयुर्युक्त ग्रन्थ दो लेखकों द्वारा लिखित बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 1 का है। दोनों लेखकों के नाम को शीर्षक अनुच्छेद में नियमानुसार लिखा गया है एवं उन्हें and द्वारा जोडा गया है। आख्या अनुच्छेद में खण्डों की सूचना नियमांक NC13 के अनुसार तथा परिग्रहण संख्या नियमांक ED913 के अनुसार अंकित की गई है।
2. लेखक निर्देशी प्रविष्टियों के द्वितीय अनुच्छेद में आख्या के बाद खण्डों की सूचना नियमांक NC15 के अनुसार दी गई है। अन्य सभी प्रविष्टियां नियमानुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ - 2

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 1 : अपूर्ण उपलब्ध संघात)

NATIONAL LIBRARY
BIBLIOGRAPHICAL DIVISION

A Biblioraphy of Documents Relating to India
(in 3 volumes)

Calcutta,
National Library,
1991

Other Information

Call No.	z44aN9	N9.1-N9.2
Acc. No.	17456-7	
Pages	ix, 216,217-530,	
Size	22.8 cm.	
Note:	Out of the 3 volumes, library has not acquired volume 3 as yet.	

मुख्य प्रविष्टि

	Z44aN9 N9.1 to N 9.2-
	LIBRARY (National-) (India), BIBLIOGRAPHY (-cal Division). Bibliography of documents relating o India 3 V [V 3 not in library] 17456-17457

संकेत

Bibliography, Indology.
Indology, Generalia,
Generalia
Library (National-) (India), Bibliography (-cal Division).

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	BIBLIOGRAPHY, INDOLOGY.
	For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number z44a

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

	INDOLOGY, GENERALIA.	
	For documents .... Class Number z44	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 3

	GENERALIA.	
	For documents.. Class Number z	

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - लेखक

	LIBRARY (National-) (India), BIBLIOGRAPHY (-cal Division).	
	Bibliography of documents relating to India. 3 V [V 3 not in library]. Z44aN9 N9.1 to N9.2	

टिप्पणी :

1. यह ग्रन्थ संस्था व उसके अंग द्वारा लिखित बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार- 1 अपूर्ण उपलब्ध संघात है। मुख्य प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद के क्रामक अंक के बाद लगाई गई आड़ी रेखा इस बात की ओर इंगित करती है कि ग्रन्थ के शेष खण्ड बाने बाकी हैं।

आख्या अनुच्छेद में खण्ड संख्या के बाद वर्गाकार कोष्ठक में पेन्सिल से V 3 not in library यह इंगित करता है कि खण्ड 3 ग्रन्थालय में उपलब्ध नहीं है। जब यह खण्ड आ जायेगा तो पेन्सिल से अंकित ग्रन्थ संख्या तथा इस सूचना को मिटा दिया जायेगा।

2. इन सूचनाओं को लेखक निर्देशी प्रविष्टि में भी इसी प्रकार लिखा जाता है।

मुखपृष्ठ - 3

(बहु खण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 2: पूर्ण संघात)

INDIAN SOCIAL PROBLEMS

Vol. 1: Social Disorganisation

By

G.R. Madan

New Delhi

Alied Publishers,

1999

Other Information

Call No. Y : 4.44 N9.1-N0.2

Acc. No. 11211-2

Size 22.3 cm.

Pages V 1. Xii, 411

V 2. 412-719

Title of Vol.2 Social Work

Note: Library posses both the volume.

मुख्य प्रविष्टि

	Y : 4.44 N9.1 to N9.2	
		MADAN (GR). Indian social problems. 2 V. V 1. Social disorganization. V 2. Social work.
	11211-1212	

संकेत

India, Social pathology.
Social pathology.
Sociology.

Madan (GR).

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	INDIA, SOCIAL PHATHOLOGY.	
	For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number Y :4.44	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

	SOCIAL PATHOLOGY.	
		For documents..
	Class Number	Y:4

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 3

	SOCIOLOGY.	
		For documents..
	Class Number	Y

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - लेखक

	MADAN (GR).	
		Indian social problems. 2 V.
		Y: 4.44 N9.1 to N9.2

टिप्पणी:

1. उपर्युक्त ग्रन्थ एकल लेखक द्वारा लिखित बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 2 का है। मुख्य प्रविष्टि में अग्र अनुच्छेद, खण्डों की सूचना एवं परिग्रहण संख्या मुख्यपृष्ठ 1 के

समान ही अंकित की गई है। आख्या अनुच्छेद में प्रत्येक खण्ड की आख्या को नियमांक NC21 के अनुसार अतिरिक्त पेराग्राफ के रूप में लिखा गया है।

2. ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियों में खण्ड संख्या तो दी जाती है, परन्तु खण्डों की आख्याओं को देने का प्रावधान नहीं है।
3. अन्य इतर प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमानुसार बनाई गई है।

मुखपृष्ठ - 4

(बहु खण्डीय ग्रन्थ प्रकार -2: अपूर्ण संघात)

GENERAL MEDICARE PROGRAMES

IN GREAT BRITAIN

(in 3 Volumes)

Edited by

Robert E Bull

New York

D. Reidel Publishing Co.,

1986

Other Information

Call No. L:5.66 N86.1 to N86.2-

Acc. No. 2222-3

Pages Vol. I : ix, 233

Vol. II : 234-550

Titles of the volume are :

Vol. I : Medicine in ancient times

Vol. II : Nineteenth century medicine

Vol. III. Not published as yet

मुख्य प्रविष्टि

	N86.1 to N86.2.	
	2222-2223	BULL (Roert E), Ed. General medicine programmes in Great Britain. V1-2- VI. Medicnin ancient times. V2. Nineteenth century medicine.

संकेत

Great Britain, Public health and hygiene. Public Health and hygiene, Medicine. Medicine. Bull (Robert E), Ed.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	GREAT BRITAIN, PUBLIC HEALTH AND HYGINE.
	For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number L:5.56

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

	PUBLIC HEALTH AND HYGINE, MEDICINE.	
		For documents..
	Class Number	L:52

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 3

	MEDICINE.	
		For documents..
	Class Number	L

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - लेखक

	BULL (Robert E), Ed.	
		General medicare programme in Great Britain. V1-2-.

टिप्पणी :

1. यह एकल सम्पादक द्वारा सम्पादित बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार- 2 अपूर्ण संघात है। संघात के दो खण्ड तो प्रकाशित हो चुके हैं तथा तीसरा खण्ड प्रकाशनाधीन है। इसलिये ग्रन्थांक के आगे आड़ी रेखा तथा आख्या अनुच्छेद में अंकित ग्रन्थ खण्डों की संख्या के

आगे लगी आड़ी रेखा यह दर्शाती है कि संघात के कुछ खण्ड अभी प्रकाशित होne बाकी है।

2. इन सूचनाओं को ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियों में भी इसी प्रकार अंकित किया जाता है तथा मुखपृष्ठ - 3 के समान खण्डों की आख्याओं को अंकित नहीं किया जाता है।

मुखपृष्ठ - 5

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 2: अपूर्ण उपलब्ध संघात)

ESSAYS ON MODERN ECONOMICS

(2^{nd} edition)

Vol I : Value and Distribution

Edited by

Prof. Ramendra Ghosh

New Delhi

Vikas Publishing House,

1995

Other Information

Call No.	X N95.1 - N95.2
Acc. No.	17023-27
Size	Sze on the Volume differs from 23 cm. to 27 cm.
Note	it is a six volume set and all the volumes have been published. Library prossesses all the volume except vol. 6. The different titles of the volume are as follows.
	Vol. II : Economic Stability and Growth
	Vol. III : Economics Policy
	Vol IV : Economic Theory
	Vol V : Applied Economics

मुख्य प्रविष्टि

	X N95.1 to N95.5 -	
		R GHOSH (Ramendra) Ed. Essays on modern economics. Ed 2.6 V [V 6 not in library]. V 1. Value and distribution. V 2. Economic stability and growth. V 3. Economic policy. V 4. Economic Theory. V 5. Applied economics. 17023-17027

संकेत

Economics.

Ghosh (Ramendra), Ed.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि

	ECONOMICS.	
		For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number X

लेखक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

	GHOSH (Ramendra), Ed.	
	Essaya on modern economic. Ed 2.6 V [V6 not in library]. X N95.1 to N95.5	

टिप्पणी

1. उपर्युक्त ग्रन्थ एकल सम्पादक दारा सम्पादित बदुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 2 अपूर्ण उपलब्ध संघात है। यह खण्डीय संघात के 5 खण्ड तो ग्रन्थालय में क्रय किये जा चुके हैं तथा छठा खण्ड अभी क्रय होना बाकी है। मुख्य प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद में ग्रन्थ संख्या तथा आख्या अनुच्छेद में खण्ड संख्या मुख पृष्ठ 4 के समान अंकित की गई है। अनुपल्ब्ध खण्ड की सूचना वर्गाकार कोष्ठ में पेन्सिल से अंकित की गई है। प्रथम पांचों खण्डों की आख्या भी अलग-अलग पैराग्राफ के रूप में लिखी गई है।
2. अन्य सभी प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमों के अनुसार बनाई गई हैं।

7. अभ्यास के लिए मुखपृष्ठ (Title Pages for Practice)

मुखपृष्ठ - 1

(बहु खण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 1 : पूर्ण संघात)

An ADVANCED HISTIRY OF INDIA

(2 Volume)

by

R.C. MAJUMDAR

H.C. RAYCHAUDHURI

4th Edition

McMillan India Pvt.Ltd.,

New Delhi

1998

Other Information

Call No.	V44 N98.1-N98.2
Acc.No.	23334-5
Pages	xi,316 (Vol.I)
	317-827(Vol.II)
Size	24.3cm.

मुखपृष्ठ- 2

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 1: अपूर्ण संघात)

INDUSTRIAL DEVELOPMENT IN INDIA

Vol I

By

M. Gangadher Rao

And O.D. Heggade

New Delhi

Kanishka Publishing bHouse

1992

Other Information

Call No.	X8 (A).44 N2.1 -N2.4
Acc. No.	16621-4
Size	23 cm.
Pages the	xii, 2311 p
Note	So fer 4 volumes have been published and all the 4 volumes are available in the library. The work is still in progress.

मुखपृष्ठ - 3

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 2: अपूर्ण संघात)

SOCIOMETRIC RESEARCH

Edited by

W.E. Saris

L.W. Gallhoffer

Vol. II: date collection and acaling by John Denver

Vol.II: Data analysis by Ann Arbor

London,

Pergomenon Press,

1993

Other Information

Call No.	Y0bB28 :f N 93.1-N93.2
Acc.No.	23345-6
Size	Vol.I 25 cm. Page Vol.I ix,317 p
	Vol II 26.7 cm Vol .II, 227 P
ISBN	Vol I 0-312-00419-2
	Vol.II 0-312-00418-4

मुखपृष्ठ - 4

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 2: अपूर्ण उपलब्ध संघात)

CLASSIFICATION OF FLOWERING PLANTS

Alfred Barton Rendle

Vol. I: Gymnosperme

New Delhi

Vikas Publishing House

1988

Other Information

Call No.	I5:11 N88.3
Acc.No.	18889-18890
Size	ix, 1411
ISBN	Title of other volumes are as follows.
	Vol 2: Monocotyledons (Not acquired in library)
	Vol. 3: Dicotyledons

8. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची (Bibliography)

1. सूद (एस पी): सूचीकरण प्रक्रिया. जयपुर, आर.बी.एस.ए.,1998.
2. वर्मा (ए के) : क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण. रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999.
3. Krishna Kumar : An introduction to cataloguing Practice. New Delhi, Vikas, 1996.
4. Ranganathan (S R): Classified catalogue copde etc. Ed 5. Bangalore, Sarda Rangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.
5. Ranganathan (S R): Cataloguing practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1994.

इकाई - 10: सामान्य आवधिक प्रकाशनों एवं आख्यान्तर्गत प्रविष्ट ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण (Practical Cataloguing of Simple Periodical Publications and Books Entered Under Title)

उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य हैं : -

1. आवधिक प्रकाशन को परिभाषित करना,
2. आवधिक प्रकाशन की मुख्य प्रविष्ट तथा सहायक प्रविष्टियों की संरचना का ज्ञान कराना,
3. आख्यान्तर्गत प्रविष्ट ग्रन्थों के सूचीकरण नियमों से परिचित कराना।

संरचना

1. विषय प्रवेश
2. आवधिक प्रकाशन की परिभाषा
3. आवधिक प्रकाशन की मुख्य प्रविष्टि की संरचना
4. इतर प्रविष्टियों के प्रकार एवं उनकी संरचना
5. आख्यान्तर्गत प्रविष्टग्रन्थों के सूचीकरण के नियम
   - 5.1 शीर्षक का वरण
   - 5.2 शीर्षक का उपकल्पन
6. सूचीकृत मुखपृष्ठ
7. अभ्यास के लिये मुखपृष्ठ
8. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची

1. विषय प्रवेश (Introduction)

आवधिक प्रकाशन सूक्ष्म ज्ञान के संदेश वाहक हैं। नवीनतम शोधों के परिणाम ग्रन्थों की तुलना में आवधिक प्रकाशनों में बहुत जल्दी प्रकाशित किये जाते हैं। उच्च शिक्षण संस्थाओं एवं शोध संस्थानों के ग्रन्थालय अपने पाठकों की शोध सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु ग्रन्थों की तुलना में आवधिक प्रकाशनों पर अपने बजट का अधिक भाग व्यय करते हैं। इसी प्रकार विभिन्न ग्रन्थालय अपने संग्रह में शोध साहित्य जैसे कोश, विश्वकोश, जीवनपरिचय कोश आदि का भी समुचित मात्रा में संग्रह करते है। इस इकाई में इन दोनों प्रकार के साहित्य के सूचीकरण के नियमों की विस्तार से चर्चा की गई है ।

2. आवधिक प्रकाशन की परिभाषा (Definition of Periodical Publication)

आवधिक प्रकाशन (Periodical Publication) से तात्पर्य उस प्रकाशन से है, जो नियमित रूप से, निश्चित समयान्तर पर, विशिष्टि अंक संख्या सहित क्रमिक रूप से प्रकाशित होता है। पद आवधिक प्रकाशन में पत्रिकायें (Periodical) तथा क्रमिक (Serials) दोनों आते हैं।

इस इकाई में वर्णित सभी नियमांक रंगनाथनकृत क्लासीफाइड केटालॉग कोड तथा तारांकित सभी नियमांक रंगनाथकृत केटालागिंग प्रेक्टिस में दिये गये हैं।)

पत्रिकायें अथवा सामयिकी (Periodical) वह प्रकाशन होता है, जो नियमित रूप से क्रमिक अंकों में सावधिक प्रकाशित किया जाता है और जिसमें एक ही अथवा विभिन्न विषयों पर लेखकों के लेख, कहानियां, ग्रन्थ समीक्षायें आदि प्रकाशित की जाती है। सी सी सी सूची संहिता में पत्रिकाओं को निम्नलिखित प्रकार परिभाषित किया गया है।

"ऐसे आवधिक प्रकाशन को पत्रिका या सामयिकी कहा जाता है, जिसका प्रत्येक खण्ड सामान्यता दो या अधिक व्यक्तिगत लेखकों के पृथक तथा स्वतंत्र अंशदानों का बना हो, जिसमें वैचारिक नैरंतर्य हो तथा सामान्यता उसके क्रमिक खण्डों (Successive Volumes) के विशिष्ट विषय और अंशदान देने वाले लेखक भी भिन्न हों, परन्तु सभी विषय ज्ञान के एक क्षेत्र के अन्तर्गत आते हों। यह अधिकतर पूर्ण खण्ड के रूप में प्रकाशित नहीं होता है, बल्कि ऐसा कहा जात है कि यह अंशिका (Fascicule) अथवा अंकों (Numbers) में प्रकाशित होता है। यह आवश्यक रूप से ज्ञान का प्रसार करता है और इसके प्रत्येक खण्ड में एक ही प्रतिरूप (Pattern) में सूचना अद्यतन करते हुए एक ही प्रकार की सूचना की पुनरावृत्ति नहीं होती।"

3. आवधिक प्रकाशन की मुख्य प्रविष्टि की संरचना (Stucture of Main Entry of Periodical)

सी सी सी के अनुसार आवधिक प्रकाशन की मुख्य प्रविष्टि के निम्नलिखित भाग होते हैं :-

1. अग्र अनुच्छेद (Leading Section)
2. शीर्षक अनुच्छेद (Heading section)
3. आवधिकता अनुच्छेद (Periodicity Section)
4. ग्रन्थमाला टिप्पणी अनुच्छेद, यदि कोई हो (Series note, if any)
5. संक्षिप्त अवधारण अनुच्छेद (Holdings in Brief Section)
6. संकेत (Tracing)
7. पूर्ण अवधारण अनुच्छेद (Holdings in Full Section)

उपयुक्त सातों भागों में से प्रथम पांच भाग तो मुख्य प्रविष्टि पत्रक के मुख भाग (Front Portion) पर क्रमानुसार, छठा भाग-संकेत मुख्य प्रविष्टि पत्रक के पीछे तथा सातवां

भाग पूर्ण अवधारण अनुच्छेद संतत पत्रक (Continued Card) के मुख भाग पर अंकित किया जाता है।

इन भागों को निम्नलिखित चित्रों द्वारा स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है : -

मुख्य प्रविष्टि पत्रक का मुख भाग

(Front Portion of Main Entery)

Leading Section

Heading Section…………………………………………………………..
…………………………………….

Periodicity Section

Series note, if any

Holdings in Brief Section

<u>Continued in the next card</u>

मुख्य प्रविष्टि का प्रश्च भाग

(Back of Main Entry Card)

	Specific Class Index Entry
Cross Reference Entry	Additional Class Index Entry
	Generic Class Index Entries
	Optional Class Index Entries
	Ordinary Class Index Entries
	Book Index Entry

संतत पत्रक का मुख भाग

(Front Portion of Continued Card)

	Leading Section	Continued
Holdings in Full Section		

उपर्युक्त चित्रों में सूची पत्रक के मुख भाग, पश्च भाग एवं संतत पत्रक में आवधिक प्रकाशन की मुख्य प्रविष्टि के विभिन्न अनुच्छेदों की स्थिति को दर्शाया गया है।

1. अग्र अनुच्छेद (Leading Section) : आवधिक प्रकाशन की मुख्य प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद में आवधिक प्रकाशन का मात्र वर्गाक ही लिखा जाता है। इसे ग्रन्थ के क्रामक अंक (Call Number) की तरह ही पैंसिल से अंकित किया जाता है। यह भाग अग्र रेखा पर प्रथम शीर्षक से प्रारम्भ होता है। नियमांक ED87* के अनुसार इस अनुच्छेद की समाप्ति के बाद पूर्ण विराम नहीं लगाया जाता है।

2. शीर्षक अनुच्छेद (Heading Section) : आवधिक प्रकाशन का शीर्षक अनुच्छेद द्वितीय शीर्ष से प्रारम्भ होता है। इसमें निम्नलिखित सूचनायें दी जाती हैं :

(अ) विशिष्ट शीर्षक (Title Proper) तथा यदि इसके पीछे प्रायोजक निकाय (Sponsoring body) का नाम भी जुड़ा हो तो उसे हटा दिया जाना चाहिये।

(ब) कोमा (,) चिन्ह

(स) प्रायोजक का नाम (यदि दिया गया हो)

(स) यदि प्रायोजक का नाम शीर्षक के पीछे न जुड़ा हो अर्थात् अन्यत्र दिया गया। हो तो उसे शीर्षक अनुच्छेद में वृत्ताकार कोष्ठक में लिखा जाता है। शीर्षक अनुच्छेद में आवधिक प्रकाशन के नाम से प्रथम दो शब्द अक्षरों (Bock Letters) में लिखे जाते हैं। प्रायोजक के नाम को पुनस्मरणमान के उपसूत्र (Canon of Recall Value) के अनुसार कर्तृकार रूप (Nominative case) में लिखा जाता है। यदि आवश्यक हो तो प्रायोजक निकाय के नाम के साथ व्यष्टिकृत पद भी वृत्ताकार कोष्ठक में जोड़े जाते हैं।

3. आवधिकता अनुच्छेद (Periodicity Section) : यह अनुच्छेद भी द्वितीय शीर्ष से प्रारम्भ होता है। इसे वर्गाकार कोष्ठक में निम्नलिखित प्रकार लिखा जाता है।

[1 V per year. V 1 - ; 1970-].

इसमें पद 1 V को आवश्यकतानुसार 1 V in two years या 2 V per year लिखा जा सकता है। प्रथम खण्ड का अंक तथा छोटी आड़ी रेखा (Desh) लगाकर तथा थोड़ी जगह छोड़कर वर्गाकार कोष्ठक को बन्द किया जाता है। जब आवधिक प्रकाशन का प्रकाशन बन्द हो जाता है, जो उसका अन्तिम खण्ड क्रमांक तथा संबंधित प्रकाशन वर्ष इन खाली स्थानों पर लिख दिये जाते हैं।

4. ग्रन्थमाला टिप्पणी (Series Note) : ग्रन्थ की मुख्य प्रविष्टि के समान ही आवधिक प्रकाशन की मुख्य प्रविष्टि में ग्रन्थमाला टिप्पणी को वृत्ताकार कोष्ठक में लिखा जाता है। साधारणतया आवधिक प्रकाशनों में ग्रन्थमाला नहीं होती।

5. संक्षिप्त अवधारण अनुच्छेद (Holdings in Brief Section): इस अनुच्छेद में ग्रन्थमाला में उपलब्ध खण्डों व उसके प्रकाशन वर्षों की सूचनायें निम्नलिखित प्रकार दी जाती हैं:

1. पद This library has
2. पद V
3. ग्रन्थमाला में उपलब्ध खण्डों की संख्या
4. सेमीकोलन चिन्ह (;) एवं
5. ग्रन्थालय में उपलब्ध खण्डों के प्रकाशन वर्ष

उदाहरणार्थ:

1. This library has V 1-<u>15</u>; 1971-<u>85</u>.
2. This library has V 1-10; 1955-64. V 13-<u>28</u>; 1967-<u>82</u>.

टिप्पणी : रेखांकित संख्यायें व वर्ष पेंसिल से अंकित किये जाते हैं।

6. **संकेत (Tracing):** आवधिक प्रकाशन का संकेत अनुच्छेद ग्रन्थ के संकेत अनुच्छेद के समान ही बनाया जाता है

7. **पूर्ण अवधारण अनुच्छेद (Holdings in Full Section):** इस अनुच्छेद को संतत पत्रक के मुख भाग (Front portion) पर लिखा जाता है। संतत पत्रक के अग्र अनुच्छेद में आवधिक प्रकाशन का वर्गांक तथा प्रत्येक पंक्ति में आवधिक प्रकाशन की खण्ड संख्या (Volume Number), प्रकाशन वर्ष (Year of Publication), ग्रंथांक (Book number) व परिग्रहण संख्या (Assession Number) को क्रमश: सारणी के रूप में लिखा जाता है। अगर पत्रक में समुचित स्थान हो, तो इन सूचनाओं को बांई ओर से दाहिनी दोनों ओर लिखा जाना चाहिये। संतत पत्रक के दोनों ओर अर्थात् मुख भाग व पश्च भाग पर यह सूचना अंकित की जानी चाहिये तथा आवश्यकतानुसार अतिरिक्त संतत पत्रकों का प्रयोग किया जा सकता है।

4. आवधिक प्रकाशन की इतर प्रविष्टियों की संरचना (Structure of Added Entries of Periodical)

सी सी सी सूची संहिता के अनुसार आवधिक प्रकाशन के लिये निम्नलिखित प्रकार की इतर प्रविष्टियां बनाई जाती हैं:-

1. अन्तर्विषयी प्रविष्टि (Cross Reference Entry)
2. वर्ग निर्देशी प्रविष्टि (Class Index Entry)
3. ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि (Book Index Entry)

4.1 अन्तर्विषयी प्रविष्टि (Cross Reference Entry)

सामान्यत: आवधिक प्रकाशन हेतु अन्तर्विषयी प्रविष्टि नहीं बनाई जाती। परन्तु यदि आवधिक प्रकाशन के किसी खण्ड में मात्र एक ही अंशदान हो अथवा कोई खण्ड अभिनन्दन ग्रन्थ (Festschift) के रूप में या किसी अन्य अर्थ में विशिष्ट खण्ड के रूप में प्रकाशित हुआ हो, और उसका प्रयोग सामान्य ग्रन्थ या सामान्य समिश्र ग्रन्थ के रूप में होने की संभावना हो, तभी अन्तर्विषयी प्रविष्टि बनाई जाती है।

4.2 वर्ग निर्देशी प्रविष्टि (Class Index Entry)

आवधिक प्रकाशन हेतु निम्नलिखित पांच प्रकार की वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ बनाई जाती हैं :

1. विशिष्ट वर्ग निर्देशी प्रविष्टि (Specific Class Index Entry)
2. अतिरिक्त वर्ग निर्देशी प्रविष्टि (Additional Class Index Entry)
3. सजातीय वर्ग निर्देशी प्रविष्टि (Generic Class Index Entry)
4. वैकल्पिक वर्ग निर्देशी प्रविष्टि (Optional Class Index Entry)
5. सामान्य वर्ग निर्देशी प्रविष्टि (Ordinary Class Index Entry)

4.2.1 विशिष्ट वर्ग निर्देशी प्रविष्टि की संरचना (Structure of Specific Class Index Entry)

विशिष्ट वर्ग निर्देशी प्रविष्टि के निम्नलिखित दो भाग होते हैं :

1. अग्र अनुच्छेद (Leading Section)
2. निर्देशांक (Index Number)

1. अग्र अनुच्छेद : विशिष्ट वर्ग निर्देशी प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद में अग्ररेखा प्रथम शीर्ष से आवधिक प्रकाशन के वर्गांक की अन्तिम कड़ी से प्राप्त शीर्षक को मुख्य प्रविष्टि के समान ही अंकित किया जायेगा।

2. निर्देशांक : विशिष्ट वर्ग निर्देशी प्रविष्टि में निर्देशांक ग्रन्थ की वर्ग निर्देशी प्रविष्टि के समान ही अंकित किया जायेगा। (टिप्पणी : यहाँ यह बात विशेष ध्यान रखी जानी चाहिये कि इस प्रविष्टि में निर्देशक अनुच्छेद देने की आवश्यकता नहीं है।)

4.2.2 अतिरिक्त वर्ग निर्देशी प्रविष्टि की संरचना (Structure of Additional Class Index Entry)

अतिरिक्त वर्ग निर्देशी प्रविष्टि के निम्नलिखित दो भाग होते हैं :

1. अग्र अनुच्छेद (Leading Section)
2. निर्देशांक (Index Number)

1. अग्र अनुच्छेद : अतिरिक्त वर्ग निर्देशी प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद में अग्र रेखा प्रथम शीर्ष से आवधिक प्रकाशन के वर्गांक की अन्तिम कड़ी से प्राप्त निम्नलिखित शीर्षकों को लिखा जायेगा :

i. आवधिक प्रकाशन के वैकल्पिक नाम यदि कोई हों,

ii. प्रायोजित आवधिक प्रकाशन की स्थिति में प्रायोजक का नाम तथा आवधिक प्रकाशन के नाम को स्थान परिवर्त कर लिखा जायेगा।

2. निर्देशांक : विशिष्ट वर्ग निर्देशी प्रविष्टि में निर्देशांक ग्रन्थ की वर्ग निर्देशी प्रविष्टि के समान ही अंकित किया जायेगा।

(टिप्पणी: यहाँ यह बात विशेष ध्यान रखी जानी चाहिये कि इस प्रविष्टि में निर्देशक अनुच्छेद देने की आवश्यकता नहीं है।)

4.2.3 सजातीय वर्ग निर्देशी प्रविष्टि की संरचना (Structure of Generic Class Index Entry)

सजातीय वर्ग निर्देशी प्रविष्टि के निम्नलिखित तीन भाग होते हैं :

1. अग्र अनुच्छेद (Leading Section)
2. द्वितीय अनुच्छेद (Second Section)
3. निर्देशांक (Index Number)

1. अग्र अनुच्छेद : सजातीय वर्ग निर्देशी प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद में अग्र रेखा पर प्रथम शीर्ष से आवश्यकतानुसार पद Periodical या Serial लिखा जायेगा।

2. द्वितीय अनुच्छेद : इस अनुच्छेद में विशिष्ट वर्ग निर्देशी प्रविष्टि अथवा अतिरिक्त, वर्ग निर्देशी प्रविष्टि के शीर्षक लिखे जायेंगे।

3. निर्देशांक : विशिष्ट वर्ग निर्देशी प्रविष्टि के समान ही लिखा जायेगा।

4.2.4 वैकल्पिक वर्ग निर्देशी प्रविष्टि की संरचना (Structure of Optional Class Index Entry)

आवधिक प्रकाशन में वर्गांक की उस कड़ी से जो कि सामान्य एकल अंक तथा भौगोलिक एकल संख्या से समाप्त होती है, उनसे क्रमश: वैकल्पिक वर्ग निर्देशी प्रविष्टियां बनाई जाती हैं। इस प्रविष्टि संरचना पूर्ण रूपेण ग्रन्थ की वर्ग निर्देशी प्रविष्टि के समान ही होगी।

4.2.5 सामान्य वर्ग निर्देशी प्रविष्टि की संरचना (Structure of Optional Class Index Entry)

आवधिक प्रकाशन की सामान्य वर्ग निर्देशी प्रविष्टि की संचरना पूर्ण रूपेण ग्रन्थ की वर्ग निर्देशी प्रविष्टि के समान ही है। वर्गांक के सामान्य एकल के बाद शेष बचे वर्गांक के सामान्य वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ बनाई जाती हैं।

5. आख्यान्तर्गत प्रविष्टि ग्रन्थों के सूचीकरण के नियम (Rules of Cataloguing of Books Entered under Title)

ग्रन्थालय में आने वाली अधिकतर पाद्य सामग्री के शीर्षक का निर्माण ग्रन्थ के लेखक के नाम के अन्तर्गत किया है जैसे व्याखगत लेखक, समष्टि लेखक, कृत्रिम नामधारी लेखक आदि। लेखक की अनुपस्थिति में सहकारक के नाम के अन्तर्गत शीर्षक बनाया जाता है। परन्तु कुछ पाद्य सामग्री ऐसी होती है जिसका आख्यान्तर्गत शीर्षक निर्माण किया जाता है। सी सी सी सूची संहिता में आख्यान्तर्गत शीर्षक निर्माण हेतु विशेष नियमों का प्रावधान किया गया है।

5.1 शीर्षक का वरण (Choice of Heading)

रंगनाथन ने आख्यान्तर्गत शीर्षकों के वरण हेतु निम्नलिखित नियमों का प्रावधान किया है : -

नियमांक MDI : शीर्षक का निर्माण निम्नलिखित में अग्रतम के अनुसार होगा, जिसे ग्रन्थ स्वीकार करता हो एवं सी सी सी सूची संहिता के अध्याय G में लेखक का निर्धारण किया गया है : -

1. एकल व्यक्तिगत लेखक
2. व्यक्तिगत सहलेखक
3. समष्टि लेखक
4. व्यक्तिगत सहलेखक तथा समष्टि सहलेखक
5. समष्टि सहलेखक
6. कृत्रिम नामधारी लेखक अथवा दो या दो से अधिक कृत्रिम नामधारी लेखक
7. सहकारक
8. सह-सहकारक
9. ग्रन्थ की आख्या

अर्थात् उपर्युक्त 1 से 8 में वर्णित लेखक या सहकारक न दिये गये हों, तो ऐसी अवस्था में ग्रन्थ के आख्यान्तर्गत शीर्षक का निर्माण किया जायेगा।

नियमांक MD61* : यदि ग्रन्थ सामान्य जीवन चरितकोश (General Biographical Dictionary) अथवा सामान्य ज्ञान अथवा सामान्य विज्ञान अथवा उपयोगी कलाओं अथवा समाज-विज्ञान से सम्बन्धित विश्वकोश है अथवा यदि इस अध्याय (अध्याय MD) के किसी अनुच्छेद में वर्णित अन्य किन्हीं नियमों के अनुसार शीर्षक का वरण नहीं हो सके, ता आख्यान्तर्गत शीर्षक का निर्माण आख्या के प्रारम्भ में प्रयुक्त उपपद (Initial articles) अथवा

आदरसूचक शब्दों को शीर्षक में प्रयुक्त करने से पूर्व हटाते हुए किया जायेगा। शीर्षक अनुच्छेद का निर्माण सी सी सी अध्याय ME के अनुच्छेदों के अनुसार किया जायेगा।

सारांशत: निम्नलिखित छह प्रकार के ग्रन्थों के आख्यान्तर्गत शीर्षक निर्माण किये जाते हैं :

1. सामान्य जीवन चरित कोश
2. सामान्य ज्ञान का विश्व कोश
3. सामान्य विज्ञान का विश्व कोश
4. उपयोगी कलाओं का विश्व कोश
5. सामान्य विज्ञान का विश्व कोश
6. अनामक लेखकों के ग्रन्थ

उपर्युक्त नियमों के आधार पर चेम्बर्स बायोग्रफिकल डिक्शनरी, नेशनल बायोग्रफिकल डिक्शनरी, न्यू एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, एनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशनल साइंसेज, मेकग्राहिल एनसाइक्लोपीडिया ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी आदि ग्रन्थ तथा अनामक लेखकों के ग्रन्थों (ऐसे ग्रन्थ जिनके लेखकों का नाम ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर न दिया गया हो) का आख्यान्तर्गत शीर्षक बनाया जायेगा। यहां यह बात विशेष रूप से ध्यान में रखनी चाहिए, कि यदि किसी विशेष विषय का जीवनचरित कोश जैसे - हू ज हू इन केमिस्ट्री, विज्ञान की किसी विशेष शाखा का विश्वकोश जैसे - एनसाइक्लोपीडिया ऑफ फिजिक्स, समाज विज्ञान की किसी विशेष शाखा का विश्वकोश, जैसे एनसाइक्लोपीडिया ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन आदि हों, तो उस अवस्था में आख्यान्तर्गत शीर्षक का निर्माण नहीं होगा बल्कि ग्रन्थ के सम्पादक अथवा संकलनकर्ता के नाम से शीर्षक बनाया जायेगा

5.2 शीर्षक का उपकल्पन (Rendering of Heading)

उपर्युक्त नियमांक MD61* की अन्तिम पंक्तियों में कहा गया है कि शीर्षक अनुच्छेद का अध्याय ME के अनुच्देदों के अनुसार किया जायेगा। शीर्षक के उपकल्पन से सम्बन्धित नियमांक निम्नलिखित हैं : -

नियमांक ME1* प्रथम वाक्यांश (Sentence)ए अर्थात् आख्या का उपकल्पन सी सी सी के अध्याय JF के अनुच्छेदों के अनुसार किया जायेगा।

नियमाक JF1* आख्या को मुख्य प्रविष्टि के आख्या अनुच्छेद में अथवा शीर्षक अनुच्छेद में उपकल्पित करते समय उसके पूर्व लगे प्रारम्भिक उपपद (Initial articles) व आदरसूचक शब्दों को हटा दिया तथा शेष शब्दों के मुखपृष्ठ पर अंकित क्रम में लिखा जायेगा।

उदाहरण 1: The Untold Story या An Authobiography or My Experiments with Truth नामक ग्रन्थों के प्रारम्भ में प्रयुक्त प्रारम्भिक उपपद The व An हटा दिये जायेंगे।

उदाहरण 2 : Shrimad Bhagavad-Gita, Holy Koran एवं Guru Granth Sahib नामक आख्याओं के प्रारम्भ में प्रयुक्त आदरसूचक शब्द Shrimad, Holy एवं Guru को हटा दिया जायेगा।

नियमांक JF41* : जब-आख्या का प्रयोग शीर्षक हेतु किया जाता है, तो उसके प्रथम शब्दों को प्रविष्टि पद के रूप में प्रयुक्त किया जायेगा।

नियमाक ED51 : शीर्षक में सहायक शब्दों के अतिरिक्त प्रविष्टि पद के शब्द बड़े अक्षरों (Block letters) में होंगे। उपर्युक्त नियमों के अनुसार शीर्षक बनाते समय (चाहे मुख्य प्रविष्टि अथवा आख्या ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि) आख्या के प्रथम दो शब्दों को बड़े अक्षरों (Block letters) में तथा शेष शब्दों को सामान्य अक्षरों में लिखा जायेगा।

उदाहरणार्थ :

SCIENCE AND technology (McGraw-Hill encyclopedia of-)

6. सूचीकृत मुखपृष्ठ (Catalogued Titles)

मुखपृष्ठ - 1

(आवधिक प्रकाशन : पूर्ण संघात उपलब्ध)

JOURNAL OF PKHYSICAL CHEMISTRY

Official Organ of British Chemical Society

Vol.1 1941

London,

British Chemical Society

Other Information

Call No.	E:2m56,N1
Size.	25 cm.
Note:	1. One Volume is completed in one calendar year.
	2. It is a quarterly journal started in 1941.
	3. Library started subscribing this journal since 1941.
	4. Library possesses a complete set.
	5. Use inclusive notation for Book Numbres and Accesion Numbers.

मुख्य प्रविष्टि

	E:2m56, N41	
	JOURNAL OF Physical chemistry, (Chemical (British - Society). [1 V per year. V 1- ; 1941-]. This library has V 1-16, ;1941-2002	

टिप्पणी : - रेखांकित संख्यायें व वर्ष पेन्सिल से अंकित किये गये जाते हैं।

संकेत

	Journal of physical chemistry, (Chemical (British- Society)).
	Chemical (British- Society), Journal of physical chemistry.
	Periodical.
	Periodical.
	Great Britain, Periodical, physical Chemistry.
	Periodical, physical chemistry.
	Physical chemistry.
	Chemistry.

पूर्ण अवधारण अनुच्छेद

	E:2m56,N41		
1-60 1961- 2000	N61 to	P00	1001-1062

विशिष्ट वर्ग निर्देशी प्रविष्टि

	JOURNAL OF physical chemistry, (Chemical (British-	
	Society).	E:2m25,N41

अतिरिक्त वर्ग निर्देशी प्रविष्टि

	CHEMCAL (British- Society), Journal of physical
	Chemistry. E:2m56,N41

सजातीय वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	PERIODICAL.
	Journal of physical chemistry, (Chemical (British- Society)). E:2m25,N41

सजातीय वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

	PERIODICAL.	
	Chemical (British- Society), Journal of physical Chemistry.	E:2m 56,N41

वैकल्पिक वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	GREATBRITIAN, PERIODICAL, PHYSICAL CHEMISTRY.	
	For documents………………………………………………………………………. Class Number	E: 2m56

वैकल्पिक वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

	PERIODICAL, PHYSICAL CHEMISTRY.	
	For documents………………………………………………………………………. Class Number	E: 2m

सामान्य वर्ग निर्देशी प्रविष्टि

	CHEM	ISTRY.
	Class	For documents.. Number E

टिप्पणी :

1. शीर्षक अनुच्छेद में आवधिक शीर्षक व उसके प्रायोजक निकाय का नाम नियमांक PB12 व उसके उपखण्डों के अनुसार उपकल्पित किया गया है। प्रायोजक निकाय के नाम को पुन: स्मरणमान के उपसूत्र के अनुसार लिखा गया है।
2. नियमांक PB17* के अनुसार पूर्ण अवधारणा अनुच्छेद संतत पत्रक पर बनाया गया है।
3. इतर प्रविष्टियों का निर्माण इस इकाई में वर्णित नियमों के अनुसार किया गया है।

मुखपृष्ठ - 2

(प्रायोजक निकाय का नाम संलग्न आवधिक एवं अकेलेण्डरीय वर्ष)

JOURNAL OF GEOLOGICAL
SOCIETY OF INDIA

Vol. 1 No. 1 July, 1956

Bangalore,
Geological Society of India

Other Information

Calss No. Hm44, N59

Note: 1. Use inclusive notation for Book Numbers and Accession Numbers.

2. Lobrary possesses all the volumers published so far, except Vol. No. 63.
3. One volume is completed in one non- calendar year.

मुख्य प्रविष्ट

	Hm 44,N56	
		JOURNAL, Geology (-cal Society of India). [1 V per year. V 1- ; 1956/60-]. This library has V 1-5; 1956/60-1963/4. V7-<u>42</u>;
	1965/66-<u>2002/3</u>.	
		<u>Continued in the next card</u>

संकेत

Journal, Geology (-cal Society of India).
Geology (-cal Society of India), Journal.
Periodical.
Periodical.
India, Periodical, Geology.
Periodical, Geology.
Geology.

पूर्ण अवधारणा अनुच्छेद

Hm 44, N59		
1-5 1959/60-1963/400		N56 to N 63 1501-1505
7-41 1965/66-2002/3		N65 to P02 1807-1843

विशिष्ट वर्ग निर्देशी प्रविष्टि

	JOURNAL, Geology (-cal Society of India). Hm44,N59	

अतिरिक्त वर्ग निर्देशी प्रविष्टि

	GEOLOGY (-cal Society of India), Journal Hm44,N59	

सजातीय वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	PERIODICAL.	
		Journal, Geology (-cal Society of India). Hm44,N59

सजातीय वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

	PERIODICAL.	
		Geology (-cal Society of India). Journal. Hm44, N59

वैकल्पिक वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	INDIA, PERIODICAL, GEOLOGY.	
	For document………………………………………………………………………….. Class Number Hm 44	

वैकल्पिक वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

	PERIODICAL, GEOLOGY.	
	For document………………………………………………………………………….. Class Number Hm	

सामान्य वर्ग निर्देशी प्रविष्टि

	GEOLOGY.	
	For document………………………………………………………………………….. Class Number H	

टिप्पणी :-

1. प्रायोजक निकाय का नाम आवधिक के नाम से जुड़े रहने के कारण मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक अनुच्छेद में आवधिक के नाम के बाद कोमा लगाकर प्रायोजक के नाम को पुन: स्मरणमान के उपसूत्र के अनुसार अंकित किया गया है।
2. सभी इतर प्रविष्टियां मुखपृष्ठ - 1 के समान ही बनाई गई है।

मुखपृष्ठ - 3

(आवधिक : प्रायोजक अंग के सहित)

INDIAN JOURNAL OF ZOOLOGY

Vol. 22 (1&2) Jan.-Feb.,1987

Edited by

P.K.Chaterjee

Published by

Department of Zoology

University of Allahabad

Other Information

Class No. Km44,N66

Size 28 cm.

Note: 1. One volume is completed in one calendesr.

2. The Journal was started in 1966.

3. The frequesncy of the Journal is monthly.

4. Library has a complete set of the journal except volume 11 to 15. Library is still subscribing the journal.

5. The editor of the journal varies from time to time.

6. Use inclusive notation for Book Numbers and Accession Numbers.

मुख्य प्रविष्टि

	Km44,	N66
	INDIA JOURNAL of zoology, (University (0f, Allahabad) Zoology (Department of -)). [1 V Per year. V 1- : 1996 -]. This library has V 1-10;111966-1975. V 16-37; 1981-2002.	

संकेत

	Indian journal of zoology, (University (of Allahabad), Zoology (Department of -). (University (of Allahabad), Zoology (Department of -), Indian journal of Zoology. Periodical. Periodical. India, Periodical, Zoology. Periodical, Zoology. Zoology.

पूर्ण अवधारणा अनुच्छेद

	Km44,N66	
1-10 1996-1975		N66 to N 75 1001-1010
6-35 1981-2002		N81 to P02 2016-2037

विशिष्ट वर्ग निर्देशी

	INDIA.	JOURNAL of zoology, (University (of Allahabad),
	Zoology (Department of-)).	Km44,N66

अतिरक्ति वर्ग निर्देशी प्रविष्टि

	UNIVERSITY (of Allahabad), ZOOLOGY (Department of-)),
	India journal of zoology. Km44,N66

सजातीय वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	PERIODICAL
	India journal of zoology, (University (of Allahabad), Zoology (Department of-)). Km44,N66

सजातीय वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

	PERIODICAL.	
	University (of Allahabad), Zoology (Department of-). India journal of zoology. Km44,N66	

वैकल्पिक वर्ग निर्देशी प्रविष्टि- 1

	INDIA, PERIODICAL, ZOOLOGY.	
	Class	For document………………………………………………………………………….. Number Km44,N66

वैकल्पिक वर्ग निर्देशी प्रविष्टि- 3

	PERIODICAL, ZOOLOGY.	
	Class	For document………………………………………………………………………….. Number Km

सामान्य वर्ग निर्देशी प्रविष्टि

	ZOOLOGY.	
	Class	For document.. Number K

टिप्पणी :

1. शीर्षक अनुच्छेद में आवधिक के नाम के बाद प्रायोजक के नाम को वृत्ताकार कोष्ठक में अंकित किया गया है। पहले संस्था व कोमा लगाकर उसके अंग के नाम को पुन: स्मरणमान के उपसूत्र के अनुसार उपकल्पित किया गया है।
2. सभी इतर प्रविष्टियां मुखपृष्ठ- 1 के समान ही बनाई गई है

मुखपृष्ठ - 4

(सामान्य जीवनचरित कोश)

Chamber's

Biographical Dictionary

Edited by

J.O. Thorne, M.a.

Revised Edition

W & R Chambers Ltd.

41 Thistle Street, London, W.1

6 Dean Street, London, W.1

Other Information

Call No. wl' m5 K8

Acc.No. 54451

Size 28.7 cm.

मुख्य प्रविष्टि

	W1 M5 K8
	BLOGRAPHY (Chamber's- cal dictionary). Rev ed. Ed By J O Thorne. 54451

संकेत

World, Biography.
Biography, Generalia.
Thorne (J O), Ed.
Biography (Chamber's- cal dictionary).

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	WORLD, BIOGRAPHY.
	For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number w1

वर्ग निर्देशी प्रविष्ठि - 2

	BIOGRAPHY, GENERALIA.	
		For Documents..
	Class Number	W

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि-सम्पादक

	THORNE (J O), <u>Ed.</u>	
		Biography (Chamber's cal dictionary). Rev ed.
		W1'M5 K8

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि- आख्या

	BIOGRAPHY (Chamber's cal dictionary). Rev ed.	
		W1'M5 K8

टिप्पणी :

1. ग्रन्थ के सामान्य जीवनचरित कोश होने के कारण आख्यान्तर्गत शीर्षक बनाया गया है तथा आख्या को नियमांक MD61* के अनुसार पुन: स्मरणमान के उपसूत्र के अनुसार उपकल्पित करते हुए उसके प्रथम दो शब्दों को बड़े अक्षरों में लिखा गया है।
2. अन्य सभी प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमानुसार बनाई गई है। लेखक के अभाव में आख्या निर्देशी प्रविष्टि के मात्र दो ही भाग होंगे।

मुखपृष्ठ - 5

(सामान्य विश्वकोश)

THE NEW COLUMBIA ENCYCLOPEDIA

Fourth Edition

Edited by

William H.Harris

and

Judith S.Levey

New York. London

Columbia University Press

1975

Other Information

Call No.	K1, N 36 N 75
Acc. No.	25613
Size	27.8cm.

मुख्य प्रविष्टि

	K1, N36 N75
	NEW COLUMBIA encyclopedia. Ed by William H Harrs and Judith S Levey. 25613

संकेत

New Columbia encyclopedia.
World, Encyclopedia.
Encyclopedia, Generalia.

Harris (William H) and Leavey (Judith S), Ed.
Leavey (Judith S) and Harris (William H). Ed.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	NEW COLOUMBIA encyclopedia.
	For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number K1, N36

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि -2

	WORLD, ENCYCLOPEDIA.	
		For Documents...
	Class Number	K1

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 3

	ENCYCLOPEDIA, GENERALIA	
		For Documents...
	Class Number	K

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि-सहधारक - 1

	HARRIS (William H) and LEVEY (Judith H), <u>Ed.</u>	
		New Columbia encyclopedia. Ed 14. K1,N36 N75

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि-सहधारक - 2

	LEVEY (Judith S) and HARRIS (William H) <u>Ed.</u>	
		New Columbia encyclopedia. Ed 14. K1,N36 N75

टिप्पणी :

1. ग्रन्थ के सामान्य विश्वकोश होने के कारण नियमांक MD61* के अनुसार आख्यान्तर्गत शीर्षक बनाया गया है तथा नियमांक JF4 के अनुसार आख्या के प्रथम दो शब्द बड़े अक्षरों में लिखें गये हैं।
2. अन्य सभी प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमानुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ - 6

(सामान्य विज्ञान विश्वकोश)

McGRAW-HILL CONCISE ENCYCLOPEDIA OF SCIENCE AND TECHNOLOGY

Sybil p. Parker

Editor- in-chief

New York

McGRAW-Hill, 1984

Other Information

Call No. AK1 N84

Acc. No. 15211

Page 2065

Size 26.7 cm.

मुख्य प्रविष्टि

	Ak1	N84
	encyclopedia of-). Ed by Sybil P Parker.	SCIENCE AND and technology (McGRAW-Hill concise

संकेत

World, Encyclopedia, Natural sciences. Encyclopedia, Natural sciences. Natural sciences. Parker (Sybil p), <u>Ed.</u> Science and technology (McGraw-Hill Concise encyclopedia of-).

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 1

	WORLD, ENCYCLOPEDIA, NATURAL SCIENCES.
	For documents in this Class and its subdivisions, See the Classified Pard of the catalogue under the Class Number AK1

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 2

	ENCYCLOPEDIA, NATURAL SCIENCES.
	For documents.. Class Number Ak 44115

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि - 3

NATURAL SCIENCES.

For documents..

Class Number A

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - सम्पादक

PARKER (Sybil P), Ed.

Science and technology (McGraw-Hill concise encyclopedia of -) AK1 N84

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - सम्पादक

	SCIENCE AND technology (McGraw-Hill concise	
	encyclopedia of -) AK1 N84	

टिप्पणी :

1. ग्रन्थ के सामान्य विज्ञान कोश होने के कारण नियमांक MD61* के अनुसार आख्यान्तर्गत शीर्षक बनाया गया है। नियमानुसार आख्या के प्रथम दो शब्द बड़े अक्षरों में अंकित किये गये हैं।
2. अन्य सभी प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमानुसार बनाई गई है। लेखक के अभाव में आख्या निर्देशी प्रविष्टि के मात्र दो ही भाग हैं।

7. अभ्यास के लिये मुखपृष्ठ (Title Pages For Practice)

मुखपृष्ठ - 1

(आवधिक: पूर्ण संघात उपलब्ध)

MICROBIOLOGICAL REVIEWS

Official Journal of the American Society for Microbiology

Vol. 60, No. 1 March, 1999

Quarterly

CHICAGO

American Society for Microbiology

Other Information

Class No. G91M73, N40

Size 27 cms.

Note: 1. One volume is completed in one calendar year.

2. This quarterly Journal was started in 1940

3. Library possesses all the volumes published so far.
4. Use inclusive notation for Book Numbers and Accession Numbers.

मुखपृष्ठ - 2

(आवधिक : पूर्ण संघात उपलब्ध)

QUARTERLY JOURNAL OF MECHANICS

AND APPLIED MATHEMATICS

Official organ of British Society of Mathematics

Vol. 1961

London

The Society

Other Information

Class No. B7m56, n62

Size 25.4 cms.

Note: 1. Use inclusive notation for Book Numbers and Accession Numbers.
2. Library possesses all the volumes published so far.
3. One volume is completed in one calendar year.

मुखपृष्ठ - 3

(प्रायोजक निकाय का नाम संलग्न आवधिक एवं अकेलेण्डरीय वर्ष)

JOURNAL

of

INDIAN ADULT EDUCATION SOCIETY

Vol. 1 July, 1951

New Delhi,

Indian Adult Education Society

Other Information

Class No. T3m44, N51

Size 26 cm.

Note: 1. One volume is completed in one -calendar year.

2. Library started subscribind this journal from nvolume 11 onwards.
3. Volume 16 was not received in this library.
4. Inclusive notation for Book Numbers and Accession Numbers.

मुखपृष्ठ 4

(सामान्य जीवनचरित कोश)

NEWNES BIOGRAPHICAL DICTIONARY

Compiled by

Robert Collison

Newnes: London

Other Information

First published 1962

Second revised edition 1966

Call no. w1' n66 K6

Acc. No. 51121

Pages vii, 418

H.T.P.: Newnes Reference Services, Edited by Robert Phillips. No.VI.

मुखपृष्ठ - 5

(सामान्य विज्ञान विश्वकोश)

VAN NOSTRAND'S SCIENTIFIC ENCYCLOPEDIA

5th Edition

Edited by

Douglas M. Considine

New York,

Van Nostrand reinhold

1976

Other Information

Call No. AK1, N3 N76

Acc. No.	996783
Size	28.1 cm.

मुखपृष्ठ - 6

(सामान्य समाज विज्ञान विश्वकोश एवं बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार- 2)

INETRNATIONAL ENCYCLOPEDIA OF

THE SOCIAL SCIENCES

Edited by : David L. Sills

New York.

The McMillan Co.

& The Free Press,

1972

Other Information

Note: The Complete set is in 17 volumes (physically in 8 volumes)

Call No.	SZk N72.1 to N72.15
Acc. No.	15001-15008
Size	25.8 cm.

Details of each volume is as follows:

Vol 1&2	Abil to Coll
Vol 3&4	Colo to Elas
Vol 5&6	Elec to Hume
Vol 7&8	Humo to Lang
Vol 9&10	Lang to Myth
Vol 11&12	Nade to psyc
Vol 13&14	Psyc to Soci
Vol 1115&11116&17	Soci to Zoos. Index

8. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची (Bibliography)

1. सूद (एस पी) : सूचीकरण प्रक्रिया. जयपुर, आर.बी.एस.ए., 1998.
2. वर्मा (ए के) : क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण. रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999.
3. Krishna Kumar: An introduction to cataloguing practice New Delhi, Vikas, 1996.

4. Ranganathan (S R): Classifiede catalogue code etc. Ed 5. Bangali= ore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.
5. Ranganathan (S R): Cataloguing practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1994.

ISBN : 978-81-8496-203-1